आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 अगस्त, 2013
वर्ष : 71 ★ अंक : 08 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 अगस्त, 2013 ★ श्रावण, 2070

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

आचार्यप्रवर हीराचन्द्र दीक्षा अर्द्धशताब्दी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
जयपुर

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

जय गुरु हस्ती

जय गुरु हीरा जय गुरु मान

नीति और ईमानदारी से प्राप्त धन समाज में प्रतिष्ठा दिलाता है।
- आचार्य श्री हीरा

U TURN

अहिंसा तीर्थ अभियान

मानवीय आहार शाकाहार

बीमारियों को निमंत्रण मांसाहार से

हृदय रोग, किडनी, माइग्रेन तथा अनेकों दोष
मानसिक बीमारियों के मुख्य कारणों में से
एक है मनुष्य का मांसाहारी होना

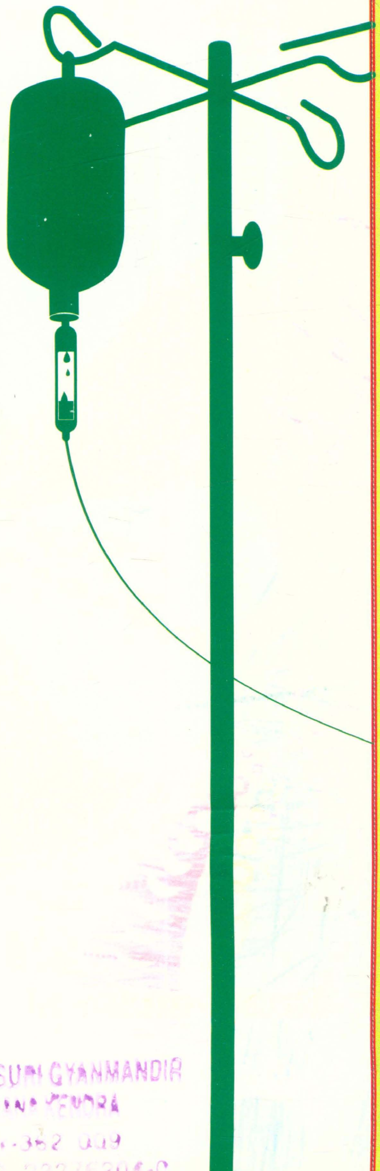

शाकाहार अपनाओ,
संसार में सुख-शांति बरसाओ

रतनलाल सी. बाफना
शाकाहार प्रचारक

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स

जलगाव • औरंगाबाद • नासिक

जनहितार्थ प्रकाशित

ACHARYA SRI KAILASSAGARSURI GYANMANDIR
SRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA
Koba, Gandhinagar-382 009
Phone: (079) 23276252, 23276204-0

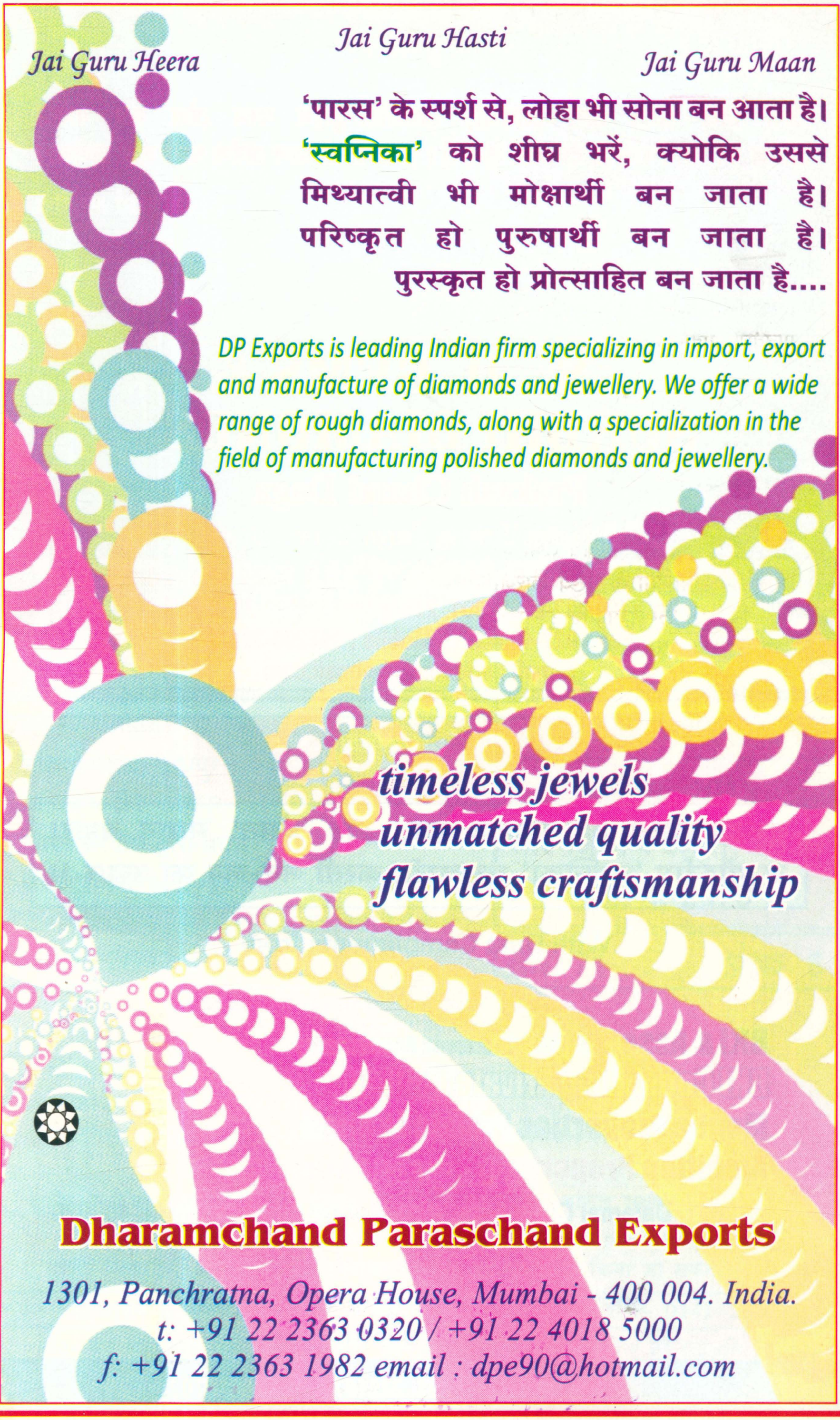
Jai Guru Hasti
Jai Guru Heera
Jai Guru Maan
'पारस' के स्पर्श से, लोहा भी सोना बन आता है।
'स्वप्निका' को शीघ्र भरें, क्योकि उससे
मिथ्यात्वी भी मोक्षार्थी बन जाता है।
परिष्कृत हो पुरुषार्थी बन जाता है।
पुरस्कृत हो प्रोत्साहित बन जाता है....
DP Exports is leading Indian firm specializing in import, export and manufacture of diamonds and jewellery. We offer a wide range of rough diamonds, along with a specialization in the field of manufacturing polished diamonds and jewellery.
timeless jewels
unmatched quality
flawless craftsmanship
Dharamchand Paraschand Exports
1301, Panchratna, Opera House, Mumbai - 400 004. India.
t: +91 22 2363 0320 / +91 22 4018 5000
f: +91 22 2363 1982 email : dpe90@hotmail.com

।। महावीराया नमः ।।

जय गुरु हस्ती

जय गुरु हीरा जय गुरु मान

जिस दिन श्रद्धा जग जायेगी, अनमोल-दुर्लभ परम अंग रूप मानव जीवन को समर्पण करते देर नहीं लगेगी। श्रद्धा है तो प्राण अर्पण भारी नहीं लगेगा।

-आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments From :

S. .D. GEMS &
SURBHI DIAMONDS

Prakash Chand Daga

Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)

202, Ratna Deep, Behind Panchratna, 78- J.S.S. Road, Mumbai- 400 004
Ph. : (O) 022-23684091, 23666799 (R) 022-28724429
Fax : 022-40042015 Mobile : 098200-30872
E-mail : sdgems@hotmail.com

Jai Guru Heera Jai Guru Hasti Jai Guru Maan

गुरुद्वय दीक्षा का स्वर्णिम हार, आई 'बंसत' समान बहार।
अनुमोदनीय 'स्वप्निका' सुखकारी, करती जन-जन का उद्धार ।।

With Best Compliments from :

Basant Jain & Associates, Chartered Accountants
BKJ & Associates, Chartered Accountants
BKJ Consulting Private Limited
Megha Properties Private Limited
Ambition Properties Private Limited

601, Dalamal Chambers, New Marine Lines, Mumbai-400020

बसंत के. जैन

अध्यक्ष : श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट

Tel. : (O) 22018793, 22018794 (R) 28810702

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

2903

🙕 **संरक्षक**

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

🙕 **संस्थापक**

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

🙕 **प्रकाशक**

विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

🙕 **प्रधान सम्पादक**

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत सामायिक-स्वाध्याय भवन, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2626279
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

🙕 **सह-सम्पादक**

नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

🙕 **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-21/2012-14
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

सन्निहिं च न कुव्विज्जा,
लेवमायाए संजए।
पक्खी पत्तं समादाय,
निरवेक्खो परिव्वए।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 6.16

रजनी में साधु नहीं रखे,
वह लेपमात्र अन्नादिक पास।
ले पात्र चले निःस्पृह पक्षीवत्,
मन में अदम्य धरकर विश्वास।

अगस्त, 2013
वीर निर्वाण संवत्, 2539
श्रावण, 2070

वर्ष 71 अंक 8

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.
आजीवन देश में : 1000 रु.
आजीवन विदेश में : 12500 रु.
स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
संरक्षक सदस्यता : 11000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार,जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोम- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	आत्मघातक क्रोध	–डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	–संकलित	11
	वाग्वैभव(18)	–आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	12
प्रवचन-	आर्त्तध्यान की परिणति कैसे रोकें? (2)	–आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	13
	दया पालें, हिंसा त्यागें	–आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	18
	अंधेरे से आएं उजाले में	–श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा.	28
आगम-चर्चा -	प्राकृत आगम-साहित्य का संक्षिप्त परिचय	–प्रो. सागरमल जैन	32
चिन्तन -	सुप्त और जागृत : एक विवेचन	–डॉ. जवाहरलाल नाहटा	36
शोधालेख -	पंच समवाय सिद्धान्त : एक समीक्षा(2)	–डॉ. श्वेता जैन	39
तत्त्व-ज्ञान -	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (82)	–श्री धर्मचन्द जैन	44
दीक्षा-अर्द्धशती-	आगमादर्श मेरे आराध्य देव! (2)	–महासती श्री यशप्रभा जी म.सा.	47
	आगमचक्षु संघनायक (2)	–महासती श्री पद्मप्रभा जी म.सा.	52
समाज-चिन्तन -	क्या जैन समाज ध्यान देगा?	–डॉ. रश्मिभाई झवेरी	56
युवा-स्तम्भ -	तिरोहित होता जैनाचार	–श्री पारसमल चण्डालिया	61
नारी-स्तम्भ -	परिवार : जीवन-निर्माण का आधार	–उपाध्यायश्री प्रवीणऋषि जी	66
श्रावक-जीवन -	मार्गानुसारी के गुण	–श्री दुलीचन्द जैन	75
स्वास्थ्य-विज्ञान -	बिना दवा आँखों के रोगों का उपचार	–डॉ. चंचलमल चोरडिया	77
बाल-स्तम्भ -	क्षमा : आनन्द का द्वार	–डॉ. धर्मचन्द जैन	83
प्रेरक-प्रसंग-	क्रोध को प्रेम से जीतें	–श्री चन्द्रप्रभ जी	35
कविता/गीत-	क्षमापना-दिवस पर न्यौता	–श्रीमती कमला सुराणा	38
	विरोधाभास	–श्री देवेन्द्र नाथ मोदी	60
	इतणो ही मैं चाहूँ	–श्री पुखराज मुणोत	65
	विचारों में गंदगी मत आने दो	–श्री मोहन कोठारी	71
	ऐ मेरे चेतन सम्भल	–मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	72
	आओ! ध्यान में रम जाएँ	–श्रीमती अभिलाषा हीरावत	73
	इन्द्रिय-विजय की राह से	–डॉ. रमेश 'मंयक'	82
	नामाक्षरी वंदन	–श्री दिनेश ललवानी	91
	जीवन-बोध क्षणिकाएँ	–श्री यशवन्तमुनि जी म.सा.	93
	गुरुणी मैना जी गुणगान	–श्री धर्मचन्द जैन	125
युवक-परिषद्-	आओ स्वाध्याय करें प्रतियोगिता (33)	–संकलित	87
श्राविका-मण्डल-	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (40)	–संकलित	90
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	–डॉ. धर्मचन्द जैन	94
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	97
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	126

सम्पादकीय

आत्मघातक क्रोध

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

बाह्य शत्रु मनुष्य की उतनी हानि नहीं करते, जितनी हानि उसके भीतर के शत्रु करते हैं। क्रोध, मान, माया, लोभ आदि मनुष्य के भीतरी शत्रु हैं। इन पर नियन्त्रण न हो तो मनुष्य का आत्यन्तिक पतन सम्भव है। क्रोध ऐसा शत्रु है जो भीतर में तो व्यक्ति को अशान्त बनाता ही है, बाहर भी प्रकट होकर दूसरों को हानि पहुँचाता है। वह आत्मघातक भी है और पर घातक भी।

सामान्यतः किसी व्यक्ति, परिस्थिति आदि के निमित्त से चित्त का क्षुब्ध होना क्रोध कहलाता है। कई लोग क्रोध को शक्ति या अस्त्र के रूप में काम लेते हैं। क्रोध मनुष्य की शक्ति भी है और दोष भी। दूसरों को डराने, धमकाने में वह शक्ति का कार्य करता है तथा स्वयं को अशान्त एवं असन्तुलित बनाने में दोष का कार्य करता है। असन्तुलन की अवस्था में व्यक्ति विवेक से भ्रष्ट हो जाता है, तथा उसे सही-गलत का भान नहीं रहता और वह ऐसा कुछ कर बैठता है, जिसका फल जीवन भर भोगता है। कभी उसे वह फल परलोक में भी भोगना पड़ता है।

क्रोध में व्यक्ति क्या कर बैठे, कुछ कहा नहीं जा सकता। क्रोध में आकर वह किसी से गाली-गलौज कर सकता है, किसी पर थप्पड़ जड़ सकता है, किसी से न बोलने की कसम खा सकता है, सम्बन्ध बिगाड़ सकता है, किसी का अपमान कर सकता है, किसी पर लात-घूंसे चला सकता है, तो किसी पर पत्थर फेंक सकता है, किसी की शस्त्रादि से हत्या कर सकता है तो किसी का गला घोंट सकता है। कभी क्रोध की शक्ति का दूसरों पर प्रहार न कर सके तो स्वयं पर प्रहार कर डालता है, अतः वह कभी स्वयं को प्रताड़ित करता है तो कभी आत्महत्या भी कर लेता है। क्रोध में शक्ति होती है, विस्फोटक शक्ति होती है, जो एक सीमा तक तो बाहरी व्यवस्था में उपयोगी होती है, किन्तु स्वयं को अशान्त एवं अव्यवस्थित किए रहती है, जिसका फल स्वयं को भोगना पड़ता है। शाप देने वाले तपस्वी ऋषि मुनियों में भी यह शक्ति रही है। वे कुपित होकर दूसरों को शाप देते रहते थे। दूसरों पर तेजो लेश्या का प्रहार भी क्रोध के वशीभूत होकर किया जाता था।

क्रोध की शक्ति अपना इष्ट नहीं, अनिष्ट अधिक करती है, इसलिए क्रोध को जीतने की बात कही जाती है। क्रोध की हानियों को कौन नहीं जानता, हम सब उसकी हानियों से परिचित हैं। क्रोध से शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक तीनों स्तर पर स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। क्रोध के कारण पाचन तंत्र गड़बड़ा जाता है, हृदय की धड़कन बढ़ जाती है, रक्त में विष बहने

लगता है, बुद्धि जवाब दे जाती है, जो करणीय है वह सूझता नहीं। क्रोध में व्यक्ति दिमाग से अन्धा हो जाता है। उसे यह भी दिखाई नहीं देता कि सामने कौन है? माता-पिता, भाई-बहिन, पति-पत्नी, सास-ससुर आदि रिश्तों की मर्यादा टूट जाती है। इसिभासियाइं में तारायण ऋषि ने कहा है-

कोहाविद्धा ण जाणंति, मातरं पितरं गुरुं।
अधिक्खिवंति साधू य, रायाणो देवताणि य।।-इसिभासियाइं, 36.15

क्रोध के आवेश में व्यक्ति माता-पिता, गुरु, साधु, राजा, देवता आदि किसी को कुछ नहीं समझता। वह क्रोधाविष्ट होकर सबको गाली-गलौज करने लगता है। वह अपने मानसिक सन्तुलन को खो देता है। वह अपने को क्रोध के क्षण में सर्वश्रेष्ठ समझता है तथा दूसरों में दोष देखकर उन्हें उजागर करता है। यह क्रोध पिता-पुत्र, सास-बहू, भाई-भाई के सम्बन्धों में विष घोल देता है। दाम्पत्य-जीवन को बर्बाद कर देता है। यह क्रोध दो दोस्तों में दरार उत्पन्न कर देता है तो यह परिवार का वातावरण विषाक्त बना देता है। इसलिए क्रोधी व्यक्ति से सब भय खाते हैं। क्रोध प्रीति का नाश करता है- **कोहो पीइं पणासेइ।** परिवार में प्रेम का वातावरण बनाना है तो क्रोध को तिलांजलि देनी होगी।

कुछ परिवारों का वातावरण बड़ा सौम्य होता है। उन परिवारों में एक-दूसरे की भावनाओं का आदर किया जाता है तथा क्रोध के प्रसंग उपस्थित न हों, इसका ध्यान रखा जाता है। कदाचित् क्रोध उत्पन्न हो जाए तो सुनने वाला उसका प्रतिकार न कर, शीतल शब्दों से उसकी क्रोधाग्नि को शान्त कर देता है। ऐसे परिवार में पारस्परिक सम्बन्ध वर्षों पर्यन्त मधुर बने रहते हैं। क्रोध का अवसर उत्पन्न न हो, इसके लिए वैचारिक उदारता का होना आवश्यक है।

क्रोध के क्षणों में क्रोधी व्यक्ति को लगता है कि वह जो कुछ कर रहा है या कह रहा है वह एकदम ठीक है। उसके ऐसा करने से बाहरी परिस्थिति ठीक हो जाएगी। किन्तु जब उसका क्रोध शान्त होता है तब समझदार व्यक्ति को ज्ञात होता है कि उससे भूल हुई है। उसे क्रोध नहीं करना चाहिए था। कोई यह समझे कि क्रोध का उत्तर क्रोध से देने पर उसका शमन हो जाता है, किन्तु यह सत्य नहीं है। इससे क्रोध बढ़ता है, शान्त नहीं होता। क्रोध को शान्त करने का उपाय क्षमाभाव है, मौन है। परिवार का कोई एक व्यक्ति क्रोध करे तो उसका उत्तर तत्काल क्रोध में नहीं देकर मौन रहना ही उचित है। बाद में शान्ति से बैठकर समस्या का समाधान किया जा सकता है।

क्रोध आने के कई कारण हो सकते हैं, किन्तु क्रोधी व्यक्ति उसका कारण बाहर खोजता है। वह मानता है कि अमुक पुरुष ने मुझे गाली दी, अमुक व्यक्ति ने मुझे बुरा समझा, उसने मेरा अपमान किया, उसने मेरा कहना नहीं माना, उसने मेरी मांग पूरी नहीं की, उसने गलत

कार्य किया आदि और यही उसके क्रोध का कारण है। वस्तुतः क्रोध का कारण भीतर में विद्यमान है, किन्तु व्यक्ति उसे बाहर ही ढूँढता है, यह उसकी कमजोरी है, उसका अज्ञान है। किसी के कार्य से मेरे अहंकार की मूर्ति खण्डित होती है तो मुझे क्रोध आता है, किसी के कार्य से मेरा लाभ हानि में बदल जाता है तो मुझे उस पर क्रोध आता है। जैसा मैं चाहता हूँ, कदाचित् वैसा न हो अथवा उससे विपरीत हो जाए तो मुझे क्रोध आता है। घर में प्रतिदिन क्रोध के प्रसंग उपस्थित होते रहते हैं। मनुष्य जब सावधान नहीं होता है, तो उन प्रसंगों से कलह उत्पन्न होता है।

समाचार पत्रों में पढ़ने को मिलता रहता है कि किसी व्यक्ति ने अपनी पत्नी को मार दिया, बच्चों को मार दिया एवं स्वयं ट्रेन के नीचे कूद गया। इस प्रकार की घटनाएँ अतीव क्रोध या निराशा में होती हैं। क्रोध कभी प्रतिशोध की भावना के रूप में अस्तित्व बनाए रखता है तो कभी व्यक्ति की सहनशीलता से परे जाकर उसे पागल बना देता है।

उत्तराध्ययन सूत्र कहता है कि व्यक्ति को अपने पर भी क्रोध नहीं करना चाहिए- **अप्पाणं वि न कोवए।** (उत्तरा. 1.40) स्वयं पर क्रोध करना आत्मघातक है। वह भी महान् अनर्थ को जन्म दे सकता है। क्रोधी व्यक्ति का क्रोध दूसरों को बाद में हानि पहुँचाता है, पहले स्वयं की हानि करता है, अतः वह आत्मघातक है।

क्रोध ऐसी अग्नि है जो स्वयं को भी जलाती है तथा दूसरों को भी जलाती है। इसके होने पर धर्म, अर्थ एवं काम पुरुषार्थ की प्रवृत्ति भी सम्यक् नहीं हो पाती।

क्रोध से होने वाली हानियों को तारायण ऋषि ने एक गाथा में इस प्रकार गूंथा है-

सत्तं बुद्धी मती मेधा, गम्भीरं सरलत्तणं।
कोहग्गिऽभिभूतस्स, सव्वं भवति णिप्पभं।।-36.7

क्रोधाग्नि से अभिभूत व्यक्ति के सत्त्व (बल), बुद्धि (निर्णय शक्ति), मति (चिन्तन शक्ति), मेधा (प्रतिभा), गम्भीरता, सरलता आदि सब गुण निष्प्रभ हो जाते हैं। अज्ञान से विमूढात्मा जब क्रोध का महाबाण छोड़ता है, तो इससे वह स्वयं को ही बींधता है, किसी दूसरे को नहीं (इसिभासियाइं 35.1)

क्रोध की शक्ति से बढ़कर शक्ति क्षमा एवं प्रेम की होती है। क्रोधी का हृदय से कोई साथी नहीं होता, किन्तु प्रेमिल एवं क्षमाशील व्यक्ति के अनेक साथी स्वतः बनते जाते हैं। उसके पास उठना-बैठना सबको पसन्द आता है, किन्तु क्रोधी से सब किनारा करने में लगे रहते हैं। क्रोधी व्यक्ति दूसरों को धमकियाँ देकर अपना बनाना चाहता है, किन्तु ऐसा होता नहीं है।

प्रायः क्रोध हम जानबूझ कर नहीं करते, आदतवश आ ही जाता है। हमने उस आदत की

हानि पर कभी विचार नहीं किया, इसलिए उसने हमें जकड़ रखा है। यह प्राक्तन संस्कारों का परिणाम है। जब तक कोई व्यक्ति अपने क्रोध के औचित्य को सही ठहराता रहेगा तब तक उसकी क्रोध की आदत समाप्त होने वाली नहीं है। जो व्यक्ति क्रोध करने को ठीक नहीं मानते, उनमें यह सम्भावना है कि वे क्रोध पर विजय पा सकें। इसके लिए कठोर साधना करनी होती है। व्यक्ति सोचता है कि आगे से अमुक परिस्थिति में क्रोध नहीं करूँगा, फिर भी क्रोध आ ही जाता है। वह क्रोध को प्रकट न भी करे, तो भी भीतर से घुटता रहता है। भीतर ही भीतर घुटना भी क्रोध का ही रूप है। यह व्यक्ति को अशान्त बनाए रखता है। अशान्त चित्त में व्यक्ति न सही ढंग से कार्य कर पाता है और न ही सम्यक् निर्णय ले पाता है।

क्रोध पर विजय पाने के विभिन्न उपायों की प्रायः चर्चा की जाती है, यथा- क्रोध के क्षण को टाल देना, 10 मिनट धैर्य रखना, क्रोध के समय मौन हो जाना, जहाँ क्रोध का वातावरण बन रहा हो उस स्थान से चले जाना, ठंडा पानी पीना, क्रोध के समय नमस्कार मंत्र जपना आदि। इस प्रकार के उपाय भी अपनी जगह महत्त्व रखते हैं, किन्तु क्रोध पर विजय प्राप्त करने के लिए दो बातें विशेष आवश्यक हैं। एक तो क्रोध को एक दोष या विकार समझने का पक्का बोध होना तथा उसका प्रसंग आने पर उससे बचने की सदैव सजगता रखना। ऐसा करने से क्रोध के क्षणों में भी सहिष्णुता बढ़ती जाएगी तथा सामान्य परिस्थितियों में व्यक्ति को अनुभव होगा कि वह कुछ अंशों में क्रोध पर नियन्त्रण करने में सक्षम होने लगा है। यह सक्षमता उसे आनन्द एवं आत्मविश्वास का अहसास कराएगी। आध्यात्मिक-जीवन में प्रगति का यही तरीका होता है कि हम पहले अपने दोषों को समझें तथा फिर उनसे दूर होने के लिए सजगतापूर्वक प्रबल पुरुषार्थ करें।

हम जीवन में दूसरों की कई बातों का बुरा मानते रहते हैं। बुरा मानने से गांठ बंधती रहती है तथा इससे क्रोध का बीज तैयार होता रहता है। जिस दिन हम बुरा मानने एवं गांठ बांधने के समय सजग हो जायेंगे, अर्थात् बुरा मानना छोड़ देंगे, अपने ज्ञान के प्रकाश में निष्पक्ष दृष्टि से विचार करना प्रारम्भ कर देंगे, उस दिन से हमारे क्रोध की नींव कमजोर होना प्रारम्भ हो जाएगी तथा क्षमा का उदार भाव विकसित होता जाएगा। दूसरी बात यह है कि हम ऐसे अज्ञानियों से दूर रहने का प्रयत्न करें जो क्रोध की ज्वाला को भभकाते रहते हैं। उनके साथ सीमित वार्तालाप करें तथा उनके साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करें। प्रेम की आवश्यकता संसार में सबको होती है। यदि हम अज्ञानियों के द्वारा क्रोध दिलाए जाने पर भी क्रोधित नहीं होंगे एवं उनके साथ प्रेम का व्यवहार करेंगे तो धीरे-धीरे वे भी प्रेमपूर्ण भाषा का प्रयोग करने लगेंगे। अपने विकारों पर विजय प्राप्त करने के लिए दूसरी आवश्यकता है कि हम आध्यात्मिक दृष्टि से हमसे अग्रणी महापुरुषों की सत्संग करें, उनके प्रवचन सुनें अथवा ऐसे आगम-शास्त्रों या साहित्य का स्वाध्याय करें, जिससे हमें विकारों पर विजय प्राप्त करने का सामर्थ्य अनुभव हो सके। ★

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

सव्वे पाणा पिआउया सुहसाता दुक्खपडिकूला अप्पियवधा पियजीविणो जीवितुकामा। सव्वेसिं जीवितं पियं- आचारांग सूत्र, 2.3.78

अर्थ-सभी प्राणियों को आयुष्य प्रिय है, सबको सुख अनुकूल लगता है, दुःख प्रतिकूल लगता है, सबको वध अप्रिय है, जीवन प्रिय है। सब जीव जीना चाहते हैं। सबको जीना प्रिय है।

विवेचनः- आचारांग सूत्र में अनेक वाक्य ऐसे हैं, जो समस्त भारतीय वाङ्मय की धरोहर हैं। अहिंसा की बात जिस ढंग से आचारांग सूत्र प्रस्तुत करता है वह अपने आप में विशिष्ट है। उपर्युक्त सूत्र में अहिंसा के पक्ष में जो मनोवैज्ञानिक तर्क प्रस्तुत किया गया है, वह अद्भुत है। सूत्र में कहा गया है कि संसार में सब प्राणियों को आयुष्य प्रिय है। कोई किसी भी योनि में जन्म ग्रहण करता हो, किन्तु वह नहीं चाहता कि उसका जीवन समाप्त हो जाए। चींटी, पेड़-पौधे, गाय, भैंस, सिंह, सर्प आदि कोई भी क्यों न हो, सब प्राणी जीने के इच्छुक हैं, मरना कोई भी नहीं चाहता है। जो जीना चाहता है, मरना नहीं चाहता, उसे आयुष्य प्रिय होता है। मनुष्य भी प्रायः जीना ही चाहता है, किन्तु कभी अवसादग्रस्त होकर अथवा मानसिक दुःखों को झेलने में अपने को असमर्थ मानकर आत्महत्या कर लेता है। हो सकता है नरक के जीव भी दुःखों की निरन्तरता एवं प्रचुरता से मरना चाहते हों, किन्तु वे अपना आयुष्य पूर्ण हुए बिना मर नहीं सकते हैं। प्रायः ऐसा होता है कि जीव भले ही दुःख पा रहे हों, किन्तु वे मरना न चाहकर दुःखों का निवारण चाहते हैं। ऐसे जीव सामान्य मनोदशा वाले एवं आशावादी होते हैं। यह सच है कि सबको सुख अनुकूल लगता है तथा दुःख प्रतिकूल लगता है। सभी सुखपूर्वक जीना चाहते हैं, दुःख आते ही घबराहट उत्पन्न होने लगती है, विरोधी प्रतिक्रिया होने लगती है। इसलिए किसी भी जीव को अपना वध प्रिय नहीं है। दुःखी जीव भी नहीं चाहता है कि उसका वध हो। कारागार में वर्षों बिताने के लिए तैयार अपराधी भी मौत की सजा नहीं चाहता। इसीलिए आचारांगसूत्र कहता है कि सबको जीवन प्यारा है, सब जीना चाहते हैं। छोटे-छोटे जीवों का भी अध्ययन किया जाए तो ज्ञात होगा कि वे भी किस प्रकार जीने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। इसलिए साररूप में कहा गया- सबको जीवन प्रिय है।

आचारांग सूत्र का यह संदेश सभी जीवों के प्रति आत्मवद् भाव को जगाता है कि जिस प्रकार मुझे अपना जीवन प्रिय है, सुख अनुकूल लगता है एवं दुःख प्रतिकूल लगते हैं, उसी प्रकार सब जीवों में भी यह भावना समान रूप से उपलब्ध है, अतः मुझे किसी की भी हिंसा नहीं करनी चाहिए। परिग्रह जुटाने के लिए भी व्यक्ति हिंसा करता है, अतः तब भी सब जीवों को अपने समान समझकर उनकी हिंसा से बचना चाहिए।

अमृत-चिन्तन

वाग्वैभव (18)

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

- व्यसनों से मस्तिष्क की सहनशीलता घटती है, व्यथा बढ़ती है।
- व्यसन की वस्तुएँ न भूख मिटा सकती हैं, न प्यास।
- बीमारी से बचने के लिए रात्रिभोजन छोड़ना जरूरी है।
- रात को भोजन नहीं करने वाले का मनोबल एवं आत्मबल बढ़ता है।
- दिन में सूर्य की धूप से पाचन-क्रिया जितनी आसान होती है, उतनी अंधकार में नहीं।
- दिन में पेड़-पौधे ऑक्सीजन छोड़ते हैं, जिसका हमारे पाचन तंत्र के क्रियाशील होने से गहरा सम्बन्ध है।
- स्वाध्याय के प्रकाश में सामायिक करने का अनूठा लाभ है।
- आप जिस धन के पीछे बावले हो रहे हैं, वह अनर्थों का कारण है।
- चातुर्मास के चार मासों में चार बातें आवश्यक लगती हैं- संस्कार-निर्माण, सामायिक, स्वाध्याय और सिद्धान्तानुकूल संगठन।
- अंतरंग में सहज सरलता होती है, वहाँ धर्म टिकता है।
- दृष्टि के विकास से अपनत्व का जागरण होता है।
- जो जीव संयम में पुरुषार्थ फोड़ता है, वह आराधक बनता है और आराधक की मुक्ति निश्चित है।
- सबसे पहले संस्कार जगाने की जरूरत है। जब तक संस्कार नहीं जगेंगे, साधना का अंकुरित होना दुर्लभ है।
- व्यक्ति को अपनी मर्यादाओं में दृढ़ रहकर आत्मविकास करना चाहिये, दूसरों का रक्षण भी करना चाहिये।
- चातुर्मास में कम-से-कम भ्रमण करना चाहिए।
- श्रद्धा विश्वास जगाती है, विश्वास व्यवहार बनाता है।
- समता की साधना नहीं है तो बड़े-बड़े त्याग करने वाले भी छोटी-छोटी बातों के लिए लड़ पड़ते हैं।

-हीरा प्रवचन-पीयूष से संकलित : श्री पी. शिखरमल सुराणा, चेन्नई

प्रवचन

आर्त्तध्यान की परिणति कैसे रोकें? (2)

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

दुःख चक्र का अंत कैसे हो?

संयोग-वियोगजन्य रति-अरति के इस चक्र का अन्त कैसे हो, यह प्रश्न मन में उठता है। अनन्त काल से जिस प्रकार घोर यंत्रणाएं सहते आए हैं, दुःख भोगते आए हैं- क्या आगे भी वैसे ही भोगते रहेंगे, या अब इसका अन्त हो सकता है? दुःख की इस अनन्त डोर का किनारा आ सकता है या नहीं? यदि आ सकता है तो कैसे? ये प्रश्न प्रायः मुमुक्षुजनों के सामने आते रहते हैं।

शास्त्रों में बताया है- ''जो वस्तु उत्पन्न होती है, उसका अन्त भी होता है।''दुःख आत्मा का स्वभाव नहीं है, विभाव है, विभाव 'पर' है, वह स्वयं आत्मा के द्वारा ही उत्पन्न किया गया है। अतः आत्मा उसका अन्त भी कर सकता है। कहा है-

अप्पणा चेव उदीरेइ........

अप्पणा चेव संवरइ.......(भगवती शतक, 1.3)

कर्मों की उदीरणा स्वयं आत्मा करता है, इसलिए कर्मों का निरोध-संवर भी आत्मा ही कर सकता है। ''अप्पा कत्ता विकत्ता य''- कर्ता, भोक्ता और विकर्ता- (नाश करने वाला) स्वयं आत्मा है। अतः जो दुःख की परम्परा आत्मा ने उत्पन्न की है, उसका अन्त भी आत्मा द्वारा ही किया जा सकता है। कोई बाहरी शक्ति, ईश्वर या देवता आपको दुःख मुक्त करने नहीं आयेंगे। उनके आश्रय पर बैठे रहें तो बस, बैठे ही रहोगे। भगवान से प्रार्थना करते हैं-''भगवन्! हमें दुःख से छुटकारा दिलाओ।'' तो क्या भगवान आपको दुःख से मुक्त कर देंगे? प्रार्थना सिर्फ आत्मबल को जगाने के लिए की जाती है, पुरुषार्थहीन होकर भगवान का सहारा लेने के लिए प्रार्थना नहीं है। अपना किया हुआ दुःख अपने द्वारा ही सुख में बदला जा सकता है और उसका एक सफल उपाय है 'ध्यान'। ध्यान दुःख को उत्पन्न भी करता है, दुःख को सुख में भी बदलता है और सुख-दुःख से मुक्त भी कर सकता है। रोग भी वही है, और दवा भी वही है।

दुःख उत्पन्न होता है आसक्ति से, कामभोग की इच्छा से- ''कामाणुगिद्धिप्पभवं खु दुक्खं।'' संसारी मनुष्य पुत्र, पत्नी, परिवार, धन, वैभव, भोग, मान-सम्मान आदि की प्राप्ति की आकांक्षा रखता है, इन्हें प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करता है, दौड़-धूप करता है और जब ये प्राप्त हो जाते हैं तो सोचता है- मैं सुखी हो गया। किन्तु दूसरे ही क्षण उसे उन

भोगों के संरक्षण की चिंता लग जाती है। एक भाई बता रहे थे- "साल में दो-पाँच लाख रुपये कमा लेना बड़ी बात नहीं है, किन्तु उसे बचाना बड़ी बात है। कमाने से भी अधिक चिंता संरक्षण में करनी पड़ती है। जो वस्तु आ गई है, वह चली न जाय, इसकी भी चिंता होती है। इस प्रकार पहले एक चिंता थी धन कमाने की, अब चिंता हो गई धन की रक्षा करने की। तो धन आ गया, फिर भी चिंता तो दूर नहीं हुई। एक कवि ने कहा है-

सोना! जब तुम थे नहीं, सोते नहीं थे राम।
सोना जब घर आ गया, सोना हुआ हराम।।

स्वर्ण! जब तक तुम हमारे पास नहीं थे, तो हम रात-दिन इस चिंता में रहते थे कि सोना कैसे मिले। इसी फिक्र में नींद भी नहीं आती थी। अब तुम घर में आ गये, तब भी नींद नहीं आ रही है। पहले प्राप्त करने की फिक्र में नींद हराम की। अब उसकी रक्षा की फिक्र में नींद हराम हो रही है। बड़े-बड़े पूंजीपतियों की और उद्योगपतियों की बातें आप सुनते हैं कि उन्हें सोने के लिए सुन्दर भवन, मुलायम डनलप के गद्दे और ऊपर की सब सुख-सुविधाएँ तो प्राप्त हो जाती हैं, किन्तु आँखों में नींद नहीं आती। कहावत है- "धन से सुन्दर शय्या मिल सकती है, नींद नहीं। आराम मिल सकता है, किन्तु आनन्द नहीं।" सोते-सोते नींद की गोलियाँ खानी पड़ती हैं, स्लीपिंग डोज (Sleeping dose) लेने पड़ते हैं। ताकि कुछ समय तक चिंता का भार हल्का हो, मन एवं मस्तिष्क को कुछ विश्राम मिले।

इस प्रकार आप देखते हैं कि वस्तु के अभाव में भी मनुष्य दुःखी होता है, और सद्भाव में भी। कहा है-

अर्थानामर्जने दुःखमर्जितानां च रक्षणे।
आये दुःखं व्यये दुःखं धिगर्थं दुःखभाजनम्।।

धन के बिना भी दुःख है, धन कमाने में भी दुःख है, कमाये हुए की रक्षा में भी दुःख-चिंता है। इस प्रकार धन का आना, जाना और रहना- तीनों बातों में दुःख है। वास्तव में धन का अभाव और सद्भाव दोनों ही दुःख का कारण है, यदि सुख चाहते हो तो अभाव एवं सद्भाव की ओर नहीं, किन्तु समभाव की ओर आओ। विषयों की अभिलाषा की पूर्ति भी दुःख का कारण है, अपूर्ति भी दुःख का कारण है। सुख का मार्ग है- विषयाभिलाषा का निरोध। निस्पृहता की कुंजी से ही आनन्द का द्वार खुलता है। भगवान ने कहा है-"कामे कमाहि कमियं खु दुःक्खं" कामनाओं से ऊपर उठ जाओगे, तो दुःख से ऊपर उठ जाओगे। कामना-पिशाचिनी से जिसका पिंड छूट गया, समझ लो दुःख से उसका पिंड छूट गया। तो इस अनन्त दुःख प्रवाह से मुक्त होने का उपाय है- कामनाओं से मुक्त होना, और कामनाओं से मुक्ति होने का उपाय है- शुभ ध्यान।

हमारी इच्छाओं का प्रवाह जो अशुभ की ओर बह रहा है, उसे मोड़कर शुभ की ओर गति देना- यह शुभ ध्यान का उपक्रम है। विचार व संकल्प जब तक मलिन रहते हैं, तब तक मन में बेचैनी रहती है और उनसे आर्त्त-रौद्रध्यान उत्पन्न होता है। जब विचारों व संकल्पों में शुद्धता, पवित्रता और अन्तर्मुखता आती है तो उनका शुद्धीकरण हो जाता है, उनका प्रवाह ऊर्ध्वगामी बन जाता है, और उससे धर्मध्यान की वृद्धि होती है।

मन को जगाइए

विचार-प्रवाह को पवित्र तथा ऊर्ध्वगामी बनाने का उपाय शास्त्रों में बताया है- "मन को प्रबुद्ध करना"। मन जब तक प्रमाद के वशीभूत हुआ रहता है, वह क्रियाशील होते हुए भी सुप्त कहलाता है। क्योंकि उसकी सद्वृत्तियाँ सब सोई हुई हैं। शास्त्र में कहा है- "सुत्ता अमुणी, मुणिणो सया जागरंति"- अमुनि अर्थात् अज्ञानी एवं गृहस्थ जागता हुआ भी सुप्त है, उसे अपने आत्म-धर्म का बोध नहीं हुआ है, उसकी वृत्तियों में सत्कर्म की जागृति नहीं आई है, इसलिए वह सुप्त है तथा जो अपने आत्म-भाव में स्थित है, आत्मस्वरूप की पहचान जिसे हो गई है, वह चाहे सोये या जागता रहे- सदा जागृत ही कहलाता है।

मन को प्रबुद्ध करने का अर्थ है- आत्मस्वरूप को जानना कि ये जड़ पदार्थ तेरे नहीं हैं, तू उनका नहीं है। उनका स्वभाव है- क्षण-विध्वंसी और तू अविनाशी है। इसलिए जो वस्तु प्राप्त होती है वह भी 'पर' है, और जो चली जाती है वह भी 'पर' है। 'पर' के आने-जाने पर हर्ष-शौक कैसा? आपके सामने सैकड़ों आदमी आते हैं और सैकड़ों जाते हैं, किन्तु आपको किसी के आने-जाने पर हर्ष-शोक हो रहा है? नहीं न! चूंकि आप उनमें किसी को 'अपना' नहीं समझते हैं। रेल के डब्बे में आप बैठते हैं तब कितने आदमी चढ़ते हैं, कितने उतरते हैं, किन्तु आपको किसी के प्रति कोई लगाव नहीं। कोई जाता है तो आपका मन खिन्न नहीं होता, और कोई आता है तो प्रसन्न नहीं होता। क्यों? इसलिए कि उनके साथ 'अपनत्व' भाव नहीं है, पर-बुद्धि है। ज्ञानी कहते हैं- 'तुम यही बुद्धि संसार के पदार्थों के साथ रखो। जो वस्तु प्राप्त हो रही है वह भी तुम्हारी नहीं है और जो जा रही है वह भी तुम्हारी नहीं है। फिर पर वस्तु के जाने-आने का हर्ष-शोक क्यों? जो तुम्हारी वस्तु है, वह कभी तुम से अलग नहीं हो सकती- **यदस्मदीयं न हि तत्परेषां।**

जयपुर के कविवर जेठमल जी चोरड़िया ने चेतन को समझाते हुए कहा है:-

चेतन रे! तू ध्यान आर्त्त क्यों ध्यावे?
नाहक कर्म बंधावे।
जो-जो भगवन्त भाव देखिया।
सो-सो ही बरतावै।

घटे-बढ़े नहिं रंचहु तासे,
तो काहे को मन डोलावै।
चेतन रे! तू ध्यान आर्त क्यों ध्यावे।।

इस प्रकार के चिंतन से मन को जब समझा दिया जाता है, तो मन प्रबुद्ध हो जाता है, वह जाग उठता है, आत्म स्वरूप का भान कर निश्चय कर लेता है-

न मे भोगागमे वाञ्छा न मे भोग-विवर्जने।
आगच्छत्वथ मागच्छत्वभोगवशगो भवेत्।।

-अध्यात्म रामायण, 6.9

मुझे न तो भोगों की प्राप्ति की इच्छा है, और न उनके जाने की चिंता है। वे चाहे आएं या जाएं, मुझे उनकी चिंता नहीं, क्योंकि मैं भोगों के अधीन नहीं हूँ। मैं तो उनसे ऊपर उठ चुका और दोनों ही स्थितियों में समभाव की कला सीख चुका हूँ।

तो यह कला है मन को जगाने की। और यह आती है-शुभध्यान से। इच्छाओं के प्रवाह को मोड़ देने से, चिंता की धारा को ऊर्ध्वमुखी बनाने से।

दो उदाहरण

सती अंजना का चरित्र आपने सुना है? सीता का चरित्र भी कई बार सुना होगा? उनके चरित्र में क्या विशेषता है? बड़े-बड़े दुःख आने पर भयंकर संकटों के पहाड़ टूट पड़ने पर भी उनका धैर्य चलित नहीं हुआ। वे कष्टों में भी मन को प्रसन्न और समाधियुक्त बनाकर अपनी जीवनयात्रा को ठीक से चला सकीं, इसका क्या रहस्य है? अंजना सती बारह वर्षों तक पति-प्रेम से वंचित रही। पवन कुमार की आँखों में उसके प्रति घृणा का ज़हर बरसता रहा। युद्ध भूमि में जाते समय पति के चरणों में गिरकर वह उनका चरण-स्पर्श करना चाहती है, और पवन कुमार घृणा से दुत्कार कर कहते हैं-"पापिनी! मेरी आँखों के सामने से हट जाओ।" और फिर उसकी अक्षत रोली की थाली को ठोकर मारकर चले जाते हैं। इतना घोर अपमान सहकर भी अंजना ने पति के प्रति कभी दुर्भावना नहीं की। वह हमेशा ही पति की मंगल कामना करती रही और सोचती रही- ये दुःख सब मेरे ही पूर्वकृत कर्मों का फल हैं, मैंने पूर्व में पाप किये हैं, अब उनके फल मिल रहे हैं, तो इससे रोना और डरना क्यों? रोने से क्या पाप छूट जायेंगे?

गर्भवती सती को कलंक देकर सास घर से निकाल देती है, पीहर वाले भी आश्रय नहीं देते हैं। जंगल-जंगल भटकती है, किंतु फिर भी उसने सास-ससुर या माता-पिता, भाई-बंधु किसी को भी दोष नहीं दिया, दोष दिया सिर्फ अपने कर्मों को, और कर्मों का दोष समझने से उसके मन को धैर्य मिला, आत्मा को बल मिला। यह अनुभव की बात है कि दूसरे की गलती से यदि थोड़ा-सा धक्का भी लग जाता है तो मनुष्य क्रोध में

तिलमिलाकर लाल-पीला हो जाता है। किंतु अपनी गलती से यदि बड़ी भारी चोट भी लग जाती है तो भी कुछ बोलता नहीं, अधीर नहीं होता, सोचता है मेरी ही गलती से चोट लगी है तो अब किसको दोष दूँ। तो ज्ञानी आत्मा अपने कर्मोदय के समय यही सोचती है-

आप कमाया कर्मड़ा, किणने दीजे दोष।

अंजना सती, सीता सती आदि महान् सतियों और संत पुरुषों ने इसी चिन्तन का आलम्बन लेकर दुःखों की पीड़ा में भी धैर्य रखा है और उस कष्टों की वैतरणी को पार किया है। तो यह है एक उदाहरण जिसमें अशुभ ध्यान के कारण उपस्थित होने पर भी उससे बचा गया है, और उसे शुभ ध्यान की ओर मोड़ा गया है। प्रिय के वियोग एवं अप्रिय के संयोग में भी मन को सहिष्णु एवं धैर्यशील बनाकर शांति का अनुभव किया जा सकता है और उससे अपनी भावी गलती सुधारी जा सकती है।

नंदन मणियार का उदाहरण भी हमारे सामने है। जो श्रावक पौषध उपवास आदि करता था। किंतु कुसंगति के कारण वह धर्म से च्युत हो गया और अंतिम समय में उसके विचारों में बड़ी उथल-पुथल मची रही। परिणामों में आर्त्तध्यान आया और उस आर्त्तध्यान के वशीभूत मृत्यु प्राप्तकर अपनी बनाई हुई बावड़ी में ही मेंढ़क के रूप में उत्पन्न हुआ। यह देखिए आर्त्तध्यान से पतन- श्रावक पर्याय से गिरकर मेंढ़क के रूप में उत्पन्न हुआ। और जब मेंढ़क के भव में आर्त्तध्यान से छूटकर धर्मध्यान में आया, जातिस्मरण ज्ञान के कारण भगवान के दर्शन करने को चला और बीच मार्ग में ही राजा श्रेणिक के एक सैनिक के घोड़े के नीचे आकर दब गया। मरते-मरते उसने मन ही मन-भगवान महावीर को नमस्कार किया और शुभ ध्यान ध्याता हुआ मरकर दर्दुरांक देव बना। आर्त्तध्यान के कारण मानव गति से तिर्यंचगति में गया और धर्मध्यान के कारण तिर्यंच से देव गति को प्राप्त हुआ। तो यह है मन को जगाकर धर्मध्यान की ओर मोड़ने का चमत्कार। पहले हमने आर्त्तध्यान के भेदों पर विचार किया था। अब उसकी परिणति और उससे परावृत्ति कर शुभ मार्ग की ओर गतिशील होने हेतु कुछ विचार आपके समक्ष रखे गये हैं।

जिनवाणी पर अभिमत

श्री रमेश कुमार जैन (सेवानिवृत्त आई.ए.एस.)

'जिनवाणी' के जुलाई माह के अंक में डॉ. धर्मचन्द जैन द्वारा 'World Sanskrit Conference, Delhi' में प्रस्तुत शोध लेख 'Concept of Śrutajñāna' एक बहुत ही रोचक, सरल भाषा में प्रस्तुत शास्त्र आधारित लेख है, जो सभी धर्म विशेषज्ञों को जैन धर्म के महत्त्वपूर्ण आयाम के बारे में प्रामाणिक जानकारी देता है। इससे प्राचीन जैन शास्त्रों की समृद्धि भी विश्व स्तर पर प्रस्तुत हुई है। उन्हें ऐसी तत्त्व जनित व्याख्या के लिए साधुवाद।

-5, सत्यविहार, लालकोठी, जयपुर-302015 (राज.)

प्रवचन

दया पालें, हिंसा त्यागें

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा 01 सितम्बर 1996 को महावीर भवन, लाखन कोटड़ी, अजमेर में दिये गये प्रवचन का आशुलेखन श्री धर्मपाल मेहता, अजमेर द्वारा तथा संपादन श्री पुखराज मोहनोत, जोधपुर द्वारा किया गया है।-सम्पादक

तीर्थंकर भगवन्त महावीर की आदेय अनुपम वाणी स्थानांगसूत्र से संग्रहनय को दृष्टि में रखते हुए कल एक सूत्र रखा गया था-''एगा पाणातिवाणं'' प्राणातिपात एक है। प्राणों का अतिपात अर्थात् जीवों को दुःख देना, प्राणियों को पीड़ा पहुँचाना, उन्हें उन प्राणों से रहित कर देना, प्राणातिपात है।

प्राणातिपात (हिंसा) सभी पापों का मूल है। जीवात्मा को प्राणातिपात आत्म-पतन की ओर ले जाता है। यह आत्मसुख के साथ ही तन-मन के सुख को समाप्त कर देता है। व्यक्ति के जीवन में प्राणातिपात दुःख और द्वन्द को बढ़ाता है। जीवन की सरस-सरिता के सलिल प्रवाह को यह गति-प्रगति देने की अपेक्षा उसे मध्य पथ में ही अवरुद्ध कर नष्ट कर देने वाला है। आप सभी उपस्थित श्रोता यह जानते हैं और मानते भी हैं कि यह ऐसा पाप है जो व्यक्ति की, आत्म-विकास की, योग्यता को विकसित होने से पूर्व ही तोड़-मरोड़ कर समाप्त कर देता है।

सब कुछ जानते-बूझते हुए भी सामान्य-सी वेदना को असह्य मान उसका प्रतिकार करने वाले लोग दूसरों को दुःख देने के लिए तत्पर बन जाते हैं। वे अन्यान्य प्राणियों के प्राण-हरण करने में हिचकिचाते नहीं हैं। आखिर क्यों होता है ऐसा? सभी ने सुन रखा है, देख भी रहे हैं कि असत्य भाषण करने वाला व्यक्ति अपने पारिवारिक जनों से, अपनी मित्र-मंडली से और आस-पास के अन्य सभी लोगों से अपना विश्वास खो देता है। इसी तरह चौर्य कर्म करके चोरी करने वाला व्यक्ति सभी की दृष्टि में हीन बन जाता है। वह कभी किसी का अपना नहीं रह पाता। अपना आपा खोकर सदैव के लिय पराया बन जाता है। क्रोध करने वाले व्यक्ति के प्रति लोगों की प्रेम-प्रीति-सौहार्द का नाश हो जाता है। व्यक्ति का गर्व, अहंकार, घमंड आत्मा के विनय गुण को समाप्त कर देता है। यह सब देखकर मन-मस्तिष्क में अनेक प्रश्न कौंधने लग जाते हैं। सर्वप्रथम तो यही समाधान पाना कठिन है कि आखिर व्यक्ति यह सब देखकर भी क्यों इन्हीं में प्रवृत्ति बनाये रखता है? क्यों

इन दुर्गुणों को अपनाता है, सीखता है।

सुन रहे हैं कि एक-एक जीव पर दया करने वाला, उनका रक्षण करने वाला, उनके प्राणों को बचाने वाला जमीन से उठता है और महलों तक पहुँच जाता है। महलों में रहने वाला जीव पर दया दिखाता है और वैमानिक देव बन जाता है। विमानवासी देव यदि अहिंसक साधक की, जीव-दया में प्रवृत्ति रखने वाले की प्रशंसा करे, अनुमोदना करे तो वह एक भव करके मोक्ष चला जाता है, जन्म-मरण के संसार-चक्र से सदैव के लिए मुक्ति पा जाता है।

सुमेरुप्रभ और मेरुप्रभ के दृष्टांत आपके समक्ष हैं। घास-फूस खाने वाले, जंगल में रहकर जीवन व्यतीत करने वाले, सदैव अपनी ही मस्ती में मस्त रहने वाले गजराज भी जीव दया के कारण राजगृही नगरी के राजा श्रेणिक के महलों में जन्म लेकर राजकुमार बने, ऐसा आगम में उल्लेख आता है। सुमेरुप्रभ हस्ती से मेरूप्रभ हस्ती का भव, मेरूप्रभ हस्ती से युवराज मेघकुमार का भव फिर देवभव, मानवभव और मोक्ष।

सुमेरुप्रभ हस्ती के भव में जंगल में भीषण गर्मी के कारण दावानल फैलता है। सर्वग्राही अग्नि की ज्वालाओं से सम्पूर्ण जंगल सुलग उठता है। जंगल के सारे ही जीव प्राण बचाने के लिए इधर-उधर भागते हैं। अग्नि की चपेट में आने वाले उसी ज्वाला में स्वाहा हो जाते हैं। सुमेरु प्रभ भी प्राण रक्षा के लिए तीव्र गति से दौड़ता है। भयंकर अग्नि की लपलपाती ज्वालाओं से बचने का बहुत प्रयत्न करता है। अग्नि-संतापित हस्ती आखिर में दौड़ते-भागते एक तालाब के किनारे पहुँच जाता है। तालाब में पानी कम है, कीचड़ और दलदल ज्यादा है पर 'मरता क्या नहीं करता' कहावत को चरितार्थ करता हुआ सुमेरुप्रभ हस्ती तालाब के पानी तक पहुँचने के लिए कीचड़ में उतर जाता है। कीचड़ में चलते हुए वह अंदर में धँसता जाता है और दलदल में फँस जाता है। बचने की आशा में उतरा था दल-दल में, पर उसी दल-दल में उसकी समाधि बन जाती है। वह मृत्यु को प्राप्त करता है।

सुमेरुप्रभ मरकर पुनः हस्ती बनता है। यहाँ मेरुप्रभ नाम मिलता है उसे। युवा होने पर वह मेरुप्रभ हस्ती अपने यूथ का यूथपति बन गजराज बन जाता है। एक बार जंगल में आग लगती है। उस आग को देखकर उसके मन में विचार आता है कि ऐसी आग मैंने पहले भी कभी, कहीं देखी है। वह चिन्तन करने लगता है। चिन्तन की गहराइयों में डुबकियाँ लगाते-लगाते उसे जाति-स्मरण ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। उस ज्ञान के प्रभाव से वह अपने पूर्व भव को देखता है- सुमेरुप्रभ हस्ती के रूप में। जंगल में भयानक आग। सर्वस्व लील जाने वाली वह आग जंगल के सभी जीवों को अपने भीतर समा लेती है। वह उस आग से बचता हुआ तालाब तक पहुँचता है। यहाँ उसने अपने मरण की घटना को देखा।

वह सब ज्ञान के बल पर देखने के पश्चात् उसने मन में विचार किया कि आज मेरे सामने यह जो दावानल सुलग रहा है और जंगल को जलाते हुए पशुपक्षियों को स्वाहा करता जा रहा है, मैं यदि इससे बच जाऊँ तो फिर कभी दावानल से मेरे जंगल के साथी पशु-पक्षी मौत के मुँह में न जायें, इसका उपाय अवश्य करूँगा।

मेरूप्रभ ने पशु के भव में भी चिन्तन किया। संयोगवश वह उस दावानल से बच गया। उसे बहुत खुशी हुई, पर खुशी में वह अपनी बात भूला नहीं कि मुझे आने वाले समय में किसी भी ऐसे दावानल से जंगल के प्राणियों की रक्षा का उपाय करना है। मेरू ने मन ही मन एक योजना बनाई। योजना को मूर्त रूप देने के लिए उसने अपने यूथ के सात सौ हाथी-हथनियों को अपने साथ लिया और जुट गया योजना क्रियान्विति में। उसने अपने यूथ के साथ एक योजन पर्यन्त जंगल की परिधि में एक मांडला तैयार किया। उस परिधि के भीतर समस्त घास-फूस, झाड़-झंखड़, पेड़-पौधे उन सबने मिलकर उखाड़ फैंके। मांडला देखकर मेरू अत्यंत प्रसन्न हुआ। उसे विश्वास हो गया कि आने वाले समय में कभी दावानल का प्रकोप हो भी गया तो सभी दिशाओं में एक योजन-पर्यन्त भूमि में दावानल की आँच नहीं पहुँच पायेगी। आग कब बढ़ती है जब उसे ईंधन मिलता हैं, पर्याप्त ईंधन मिलने तक वह बढ़ती जाती है, फैलती जाती है, तेज होती जाती है। हमारी इच्छाओं का भी यही हाल है। ज्यों-ज्यों कुछ इच्छाओं की पूर्ति होती है। त्यों-त्यों अनेक अन्य इच्छाएँ जन्म ले लेती हैं। इच्छाएँ बढ़ती हैं, पाप भी बढ़ते हैं। यदि इच्छाओं पर विराम लग जाए तो पापों से किनारा हो जाए।

मेरु हस्ती ने वही कर दिखाया जो उसने सोचा था। आग बढ़ने के साधन को ही समाप्त कर दिया। ईंधन का नामोनिशान भी नहीं रखा। कालान्तर में एक बार फिर उस जंगल में आग लगी। जहाँ-जहाँ हवा और ईंधन मिला, दावानल वहाँ-वहाँ फैलता गया, पर उस मांडले में उसका प्रवेश नहीं हो सका। जंगल के जानवर आग से अपनी-अपनी जान बचाकर उस मांडले में एकत्रित हो गए। बंधुओं! उस आपत्ति के समय सांप-नेवले, सिंह-शशक, बाघ, भेड़िए, रीछ, चीते, सियार, विडाल सभी एक-दूसरे से सटकर बैठे थे। जन्मजातशत्रुता जिनमें थी, वे सभी वहाँ एकत्रित हो गए थे। मेरूप्रभ व उसके यूथ के सात सौ हाथी-हथिनियाँ भी वहीं थे। मांडला खचाखच भर चुका था। कहीं तिल धरने की जगह भी नहीं थी। ऐसे समय में बाहर से भागता-दौड़ता, कूदता-हाँफता एक खरगोश दावाग्नि से जान बचाकर वहाँ आ पहुँचा। देखा तो कहीं जगह नहीं। इधर खरगोश सोच रहा था- "कैसे यहाँ अपने लिए जगह बनाऊँ?" इधर मेरूप्रभ बहुत खुश था कि उसकी योजना सफल हुई, उसने और उसके यूथ ने जो परिश्रम किया था, आज उसका सुन्दर-सुन्दर फल

उसके समक्ष था। जंगल के सैकड़ों-हजारों प्राणी आज अपनी जान यहाँ आकर बचा रहे थे।

वह मांडला था और जहाँ आप इस समय बैठे जिनवाणी का श्रवण कर रहे हैं, वह स्थानक है- धर्मस्थान है। लोग दौड़-दौड़कर यहाँ आते हैं। सांसारिक प्रपञ्चों, पापों से बचने के लिए। अधर्म से बचने और धर्म करने के लिए। इसी तरह वहाँ जानवर मांडले में पहुँचे थे, पहुँच रहे थे। एक खरगोश भी पहुँचा वहाँ और कहीं स्थान न पाकर सोच रहा था, क्या करूँ? पर सोचने का समय कहाँ था? पीछे काल रूप में विकराल दावानल जो था। उसने फिर ज्यादा विचार नहीं किया और आव देखा न ताव, तुरंत कूदा मांडले के भीतर। कभी किसी शेर पर तो कभी किसी चीते पर, कभी रींछ पर तो कभी भेड़िए पर। इसी तरह एक-दूसरे पर कूदता-फाँदता अपने लिए कोई सुरक्षित स्थान ढूँढने लगा।

खरगोश अपने लिए स्थान चाह रहा था कि तभी अचानक मेरूप्रभ हस्ती के शरीर के किसी अंग में खुजलाहट हुई। खुजाने के लिए उसने अपना एक पाँव उठाया। संयोगवश तभी वह खरगोश छलांग लगाकर वहीं पहुँच गया। हाथी के पाँव उठाने से जो जगह खाली हुई, खरगोश आराम से वहाँ बैठ गया, तब उसकी जान में जान आई। स्थिरचित्त हुआ तो ध्यान में आया कि यहाँ तो हाथी के पाँव रखने की जगह थी और हाथी का पाँव अभी ऊपर ही है। सोचा- 'बड़ा दयालु है हाथी भाई। मेरे लिए ही इसने जगह बनाई।'' मेरी भाषा में बात कर सकता तो हाथी कहता- ''आ भाई खरगोश! मैंने तेरे लिए अपना पाँव ऊपर कर लिया है। तू आराम से बैठ यहाँ!'

उधर शरीर खुजाने के पश्चात् मेरूप्रभ ने अपना पैर जब नीचे किया तो उसे लगा कि कोई है वहाँ? देखा तो खरगोश था। अब वह पैर कहाँ रखे? उसी जगह रखता है तो नन्हा खरगोश व्यर्थ ही मारा जायेगा। तिर्यंच गति थी, हस्ती का भव था, पर फिर भी मन अनुकम्पा से ओतप्रोत बन गया। जीव-दया की ऐसी भावना उमड़ी कि उसने फिर पाँव नीचे नहीं रखा, पुनः ऊपर उठा लिया। जंगल में आग फैल रही थी, किन्तु मांडला बचा हुआ था। यहाँ बैठे प्राणियों के प्राण सुरक्षित थे। समय व्यतीत होने के साथ मेरू के पाँव में पीड़ा बढ़ने लगी, शरीर सुन्न पड़ने लगा पर उत्कृष्ट भावना आई हुई थी जीवदया की, अतः मेरू ने असह्य पीड़ा का अनुभव करते हुए भी पाँव नीचे नहीं किया। तीन पैर पर ही वह ढ़ाई दिन खड़ा रहा। शरीर पूरा सुन्न हो गया। लगा उसे कि अब गिरा, अब गिरा, पर मन को मजबूत बनाये रखा। दावानल शांत हुआ। जानवर खिसकने लगे। मेरू हस्ती के आसपास कोई नहीं था। तभी समय आ गया हाथी के काल करने का। वह धड़ाम से नीचे गिर गया। प्राण-पँखेरु उड़ गए। प्राणी-अनुकम्पा और जीव-दया के श्रेष्ठ चिन्तन से मेरुप्रभ हाथी

मनुष्यायु का बंध करता है। वह राजगृही के राजा श्रेणिक के महलों में उत्पन्न होता है। नाम रखा जाता है- "राजकुमार मेघकुमार"

धन्य हैं वे लोग जिनके अन्तर में करुणा की निर्झरणी बहती है, जो जीव-मात्र पर दया भावना रखते हैं। प्रत्येक मानव के मन में दया होनी चाहिए। किसी कवि ने बड़ी सुन्दर बात कही है-

दया से दुःख दारिद्र जावे, अचिंती कमला घर आवे।
सुयश कीरति दह दिश छावे, इन्द्र अहमिन्द्र पद पावे।।

दया से सारे कष्ट, सारी पीड़ा, सभी दुःख मिट जाते हैं। निर्धनता मिट जाती है और जिसका कभी सोचा भी न था, वह लक्ष्मी घर आकर विराजमान हो जाती है अर्थात् घर धन-धान्य से परिपूर्ण बन जाता है। दशों दिशाओं में, देश-विदेश में, सर्वत्र ही सुयश फैल जाता है। ये तो जीवों पर दया करने से प्राणी देव गति प्राप्त कर लेता है, इन्द्र और महेन्द्र बन जाता है।

एक कवि ने दया की महिमा का बखान इस तरह किया है-

अष्ट सिद्धि नव निधि मिले, बिना उपाय सुख भोग।
टले विघ्न बिन जतन ही, सफल होय उद्योग।।

दया से आठों सिद्धियों और नवों निधियों की प्राप्ति हो सकती है। बिना किसी परिश्रम के घर-परिवार-व्यापार में सुख ही सुख मिल सकता है। बिना किसी प्रयत्न के राह में आने वाली बड़ी से बड़ी बाधाएँ मिट सकती हैं। दया करने से आपके सारे उद्योग, अध्यवसाय, कार्य सफल हो सकते हैं। अतः बुद्धिमानों, प्रबुद्धजनों को दया का पालन आवश्यक रूप से करना चाहिए। पूर्वाचार्यों ने भी यही शिक्षा दी है-

दया पालो बुध जन प्राणी, बात गुरु मुख से जानी।
स्वर्ग, अपवर्ग, सौख्यदानी, दया पालो बुधजन प्राणी।।

पीड़ितों, गरीबों, निःशक्तजनों पर दया करने का फल बड़ा सुखदायी होता है। दया स्वयं अहिंसा है। दया करने के विचार से हिंसा स्वतः छूट सकती है। हिंसा दो प्रकार की बताई गई है- 'एक वह जो प्रयोजन से की जाती है और दूसरी वह जो निष्प्रयोजन की जाती है।' जीवन में जो हिंसा अनिवार्य हो, जिसके किए बिना व्यक्ति का जीवन न चल सके। वह प्रयोजनवती हिंसा है। इसमें कभी व्यक्ति की भावना का मिश्रण न भी हो, फिर भी करनी पड़ती है।

कितने ही व्यक्ति हैं जो अपनी प्रसिद्धि, ख्याति, नामवरी के लिए हिंसा कर देते हैं। कुछ आडम्बर के लिए, शान-प्रदर्शन हेतु, मिथ्या अहंकार के वशीभूत बन व्यर्थ की निष्प्रयोजनीय हिंसा, अनर्थ की हिंसा कर रहे हैं। मन में भ्रान्तियाँ पालने वाला, अज्ञजन इस

तरह व्यर्थ में हिंसा करता रहता है। अज्ञ और भ्रांत व्यक्ति जानते हैं कि ऐसी ही पीड़ा, ऐसा कष्ट जो हम दूसरों को दे रहे हैं- हमें हो तो हम उसे सहन नहीं कर सकेंगे। कभी पैर में कोई कांटा लग जाए तो कितना दर्द होता है? लंगड़ाकर चलना पड़ता है। बड़ी ग्लानि का अनुभव होता है उस समय। लोग देख रहे होते हैं लंगड़ी चाल को। विचार आता है- लोग क्या सोचेंगे? लोग क्या कहेंगे? अपनी प्रतिष्ठा का आप कितना ध्यान रखते हैं? फिर अपनी शान बघारने के लिए दूसरों की प्रतिष्ठा को मिटाते, मिट्टी में मिलाते, दुःख का अनुभव क्यों नहीं करते? कई बार व्यक्ति कितने क्रूर, निर्दय बन जाते हैं कि दया का नामोनिशां नहीं रहता है।

हिंसा के कितने रूप बताऊँ आपको? कमरे को सजाने के लिये दीवारों पर शेर और चीते की खाल सजाई जा रही है। गेस्ट-रूम में मसाला भरवाकर इनकी खालें इस तरह खड़ी की जाती हैं जैसे सचमुच शेर, चीते हों। न जाने किस-किस प्रकार के नये-नये आविष्कारों के माध्यम से हिंसा के अजब-गजब, मन में सिहरन हो और रोंगटे खड़े हों, ऐसे तरीके अपनाए जा रहे हैं। कत्लखानों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। हिंसा का प्रचलन भी बढ़ता चला जा रहा है। आप भी देख रहे हैं, सुन रहे हैं। मैं यह कह दूँ कि इसमें कुछ अंश तक आप भी भागीदार बन रहे हैं। आपमें कई साधारण जीवन व्यतीत करने वाले, चमक-दमक से आकर्षित नहीं बनने वाले भी हैं। किन्तु उन्हें भी लोग हिंसापरक उत्पादों से जोड़ने की कोशिश करते हैं।

बहनों की बात कहूँ। वे क्रीम, लिपस्टिक, पाउडर, शेम्पू, कंडीशनर, मनीबेग, हैंडबैग, पर्स, इम्पोर्टेड साड़ियाँ आदि सभी में हिंसक वस्तुओं का मिश्रण है। इनको कौन समझाए कि साज-शृंगार अपनी जगह है, पर उसमें हिंसक-अहिंसक वस्तुओं का विचार नहीं किया तो धर्म को खो दिया, यही मानना पड़ेगा।

बंधुओं! अपने पूर्वजों के रहन-सहन, खान-पान आदि पर विचार करें। कितने सीधे-सादे ढंग से जीवन व्यतीत करते थे। बाजार जाते तो हाथ में सूती मेटीक्लॉथ की कसीदे की सुन्दर-सी थैली या थैला रखते थे। एक स्थान से दूसरे स्थान जाना हो या फिर बाहर गाँव ही क्यों न जाना हो, थैले सबके ऐसे ही होते थे। आज क्या देख रहे हैं? चमड़े के बैग और थैले। कैसे बने हैं? किसके बने हैं? निर्माण के इतिहास का कोई अता-पता नहीं। जरूरत ही क्या है, पता करने की। पाप लगे तो लगता रहे, परवाह किसे है? क्यों कर रहे हैं हिंसक वस्तुओं का प्रयोग? क्या यह लक्ष्मी की कृपा का फल है या इसमें आप अपनी मान, प्रतिष्ठा समझते हैं। वस्तुतः भूल है आपकी। सत्य तो यह है कि आपके अन्तर में मिथ्या आडम्बर की भावनाएँ व अपनी शान दिखाने की कामनाएँ बढ़ गई हैं, बढ़ती जा रही

हैं। धन बढ़ने के साथ अहंकार भी बढ़ गया है। अहं बढ़ा तो उस अहंकार ने सादगी में जीवन व्यतीत करने के क्रम को परिवर्तित कर दिया है। इसी परिवर्तन से आपके जीवन में हिंसा का प्रकरण चालू हो गया है, आपके जीवन-व्यवहार में हिंसा ने प्रवेश ले लिया है। इसी के कारण आपके मन की प्राणिमात्र के प्रति दया की कोमल भावनाओं को जंग लग गई है। बढ़िया चमड़े की वस्तुओं के प्रयोग का आपका शौक क्या गुल खिला रहा है? आपके शरीर पर उबलते, खौलते हुए पानी की एक बूंद गिर जाए तो फफोला पड़ जाता है वहाँ आपके शौक की पूर्ति के लिए जीवित प्राणियों, विशेषकर छोटे- कम आयु के बछड़ों पर खौलता हुआ पानी डालकर उनकी चमड़ी को कोमल बनाकर उतारा जाता है और फिर उस कोमल चमड़ी से आपके शौक की चीजें बनाई जाती हैं। फर के कोट, रोएँ वाले चमड़े के जैकेट आदि के लिए जीवित पशुओं की खाल उतारी जाती है। यह सब क्यों? क्यों किया जा रहा है प्राणियों के जीवन से ऐसा क्रूर खिलवाड़? आप लोगों की शौक की पूर्ति के लिए। अपना जीवन ही जीवन और दूसरों का जीवन कुछ भी नहीं। कितना अन्याय है यह!

आप जिस खानदान के हैं, आपने जिस कुल में जन्म लिया है, आपका जिस परिवार में पालन-पोषण हुआ है। विचार करिए उस कुल-खानदान के रहन-सहन का। आप पाएँगे कि वहाँ पर शुद्धता है, निर्दोषता है और है जीवन का अहिंसक स्वरूप। वही स्वरूप आपके जीवन-व्यवहार में भी हो, यह आज के युग की मांग है। वर्तमान समय की आवश्यकता है। कभी अजमेर की ढढ्ढों की हवेली में जाने का काम पड़ा तब वहाँ पूर्वजों के प्राचीन काल के कुछ चित्र देखे। कैसा भव्य था उनका पहनावा? सिर पर पगड़ी, शरीर पर शेरवानी, उस पर दुपट्टा तो कहीं साफा, अंगरखा और धोती। लम्बी-सी दाढ़ी और चेहरे पर अनोखा रौब। क्या वे लोग अपने समय के प्रतिष्ठित पुरुष नहीं थे? नगर-सेठ थे वे। प्रतिष्ठा बढ़-चढ़कर थी। कहीं कोई कमी नहीं। समाज शहर में बड़ा रुतबा था उनका। आज यदि वैसा पहनावा, रूप-स्वरूप हो तो कैसा लगेगा? चमड़े की जाकेट में ही क्यों रौब और प्रतिष्ठा का आभास लगता है आपको?

आप दया और अहिंसा को जीवन में पहला स्थान दें। निश्चित जानें कि हिंसा के प्रयोग से प्राप्त चीजों के वगैर भी शान, रूतबा, प्रतिष्ठा वैसी ही बनी रह सकती है।

वर्तमान में अनर्थकारी, निष्प्रयोजन होने वाली हिंसा का फैलाव अधिक होता जा रहा है। आपको इस तरह की हिंसा से बचाने के लिए ही व्रतों की, मर्यादा की, जीवन-व्यवहार में नियंत्रण रखने की बातें कही जा रही हैं। जैन श्रावक हैं आप, श्रमणोपासक हैं आप! क्या हैं आपकी मर्यादाएँ? कहा जा रहा है-''हे मानव! यदि तू सत्संग प्रेमी है, तुझे धर्म से लगाव है और तेरे अन्तर में यदि आत्मा जागृत हो चुका है, तो इस हिंसा का

त्यागकर, इन अनर्थ के पापों से दूर रह। अपने को इनसे अलग करले।'' चला-चली की बेला है, एक दिन सब यहीं छोड़कर जाना है। साथ चलेगा पुण्य और पाप। जिनकी आयु लाखों वर्षों में थी, वे भी चले गए। हजारों वर्ष की आयु लेकर आए उनको भी जाना पड़ा। आज तो शतायु वाले भी गिनती के मिलेंगे। नब्बे वर्ष की आयु हो जाती है तो यह शरीर हड्डियों का ढ़ांचा बन जाता है। गिने-चुने दिन हैं आयुष्य के, फिर भी मानव अन्य प्राणियों को रौंद रहा है, मार रहा है, उनकी हिंसा का कारण बन रहा है। दूसरे प्राणियों के प्राणों से खेलने का परिणाम क्या मिलेगा? अधोगति, पतन, दुःख, कष्ट, पीड़ाएँ। कितना भोगोगे? क्या-क्या सहन करोगे? रोओगे, तड़फोगे तो नानी याद आ जाएगी। इष्ट व भगवान् याद आ जायेंगे। कहा भी यही है- ''दुःख में सुमिरण सब करे, सुख में करे न कोय।''

बहनों की बात करूँ। कोई समय था जब बहनें जेब में रुपये-पैसे रखकर चलती थीं। आज उनके पास रुपये-पैसे रखने के लिए चमड़े के पर्स हैं, फर के बैग हैं। किसी के पास मनी बैग है तो कोई हैण्ड बैग लटकाए बाजारों में घूम रही हैं। साधारणतया प्रयोग में आने वाली वस्तुओं के लिए हिंसक तरीके से बनाई चीजों का व्यवहार क्यों हो रहा है? बहनों के तो शृंगार-प्रसाधन की अधिकांश सामग्रियों में भी हिंसक तरीके अपनाए जाते हैं। यदि बहनें विवेक रखें तो सहज में हिंसा से बच सकती हैं। अतः आवश्यकता है कि वे भी मर्यादा ग्रहण करें, व्रत-नियम लें और अपने को पाप से बचाएँ।

खेलों की प्रवृत्ति में भी आज अनर्थ की हिंसा का स्थान-स्थान पर प्रयोग बढ़ रहा है। कहीं मुर्गों को लड़ने की ट्रेनिंग दी जा रही है तो कहीं मेंढ़ो को। कहीं बिना प्रशिक्षित किए ही सांड और भैंसे लड़ाये जा रहे हैं। मनोरंजन के लिए अनेक आयोजन किये जाते हैं। कहीं पैसे लेकर ये खेल दर्शकों को दिखाये जाते हैं तो कहीं जीत-हार पर जुआ खेला जाता है। दो मुर्गे, दो सांड या अन्य दो प्राणी तब तक आपस में लड़ते-टकराते रहते हैं, जब तक दोनों में से कोई एक हताहत नहीं हो जाता। राजाओं के जमाने में कई बार खूंखार अपराधियों को शेर के पिंजरे में डाल दिया जाता था। अपराधी अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए तब तक लड़ता और बचता रहता था, जब तक उसके प्राण नहीं निकल जाते थे। कभी किसी डाकू, हत्यारे को हाथी के पैरों के नीचे कुचलवा दिया जाता था। ऐसी भयानक सजा सभी के समक्ष खुले में दी जाती थी। प्रायः राजा, दरबारी और अनेक आमजन भी अपना मनोरंजन किया करते थे। तमाशा देखते हुए वे हंसते, तालियाँ बजाते, वाह-वाह या ओह-आह की आवाजें करते थे। आज भी मनोरंजन वैसा ही है, पर थोड़े-से सुधरे रूप में। आज जानवर से आदमी नहीं लड़ता, जानवर ही लड़ता है। राजा की जगह खेल के आयोजक नये राजा बन गये हैं। पैसे वाले अपने मनोरंजन के लिंए टिकट खरीद कर

ये खेल देखते हैं। इस तरह का खेल देखकर मनोरंजन करने वालों को क्या कहें? बर्बर, क्रूर, निर्दय ही कहा जा सकता है। ऐसे हिंसक खेल देखते हुए यदि वे प्रसन्न होते हैं, हंसते हैं, तालियाँ बजाते हैं तो परिणाम में क्या मिलेगा उन्हें? व्यर्थ ही हिंसा अनुमोदन के कारण अनर्थ दंड रूप पाप के भागी बनते हैं वे।

मान लीजिए कुछ व्यक्ति ताश के पत्ते खेल रहे हैं और कुछ व्यक्ति निकट बैठे उनको खेलते हुए देख रहे हैं। देखने वालों के मन में क्या विचार उत्पन्न होंगे। 'यह गलत खेल रहा है, यह पत्ता नहीं खेलना था, यह पत्ता खेलता तो जीत जाता, मैं इसकी जगह होता तो ऐसे नहीं, अपितु वैसे खेलता।'

कभी-कभी भेड़ों, बकरे-बकरियों, गायों, बछड़ों आदि को बेरोकटोक गाड़ियों में भरकर ले जाया जाता है। सभी जानते हैं कि इन्हें क्यों ले जाया जा रहा है? इन बेचारे निरीह प्राणियों की निष्प्रयोजन हिंसा कर दी जायेगी। क्या ऐसे दृश्य देखकर आपके मन में विरोध करने का, ले जाने वालों के विरुद्ध कार्यवाही करने का विचार आता है? नहीं आता है तो हिंसा को रोकने में आपकी भागीदारी क्या है? होना यह चाहिए कि ऐसे दृश्य देखकर आपके दिलों में दया-करुणा आनी ही चाहिये। अन्तर में प्रकम्पन होना चाहिए।

जीवन दो तरह से जिया जा सकता है। एक जीवन चलाकर और दूसरा जीवन बनाकर। जीवन चलाना साधारण जीवों का कार्य है, जीवन बनाना विशिष्ट साधकों का काम है। एक में खाना, पीना, मौज करना है तो दूसरे में त्याग, तप, व्रत, नियम आदि से जीवन का उत्थान करना है। जिन्हें जीवन बनाना है, वे साधना-आराधना करते हैं, पर साधना करते हुए भी जीवन चलाने को गौण नहीं कर सकते। आराधना के लिए समय चाहिए तो जीवन चलाने के लिए भी कुछ तो समय चाहिए ही। साधक जीवन चलाता ही साधना के लिए है। जीवन है तो साधना है। संत तीन करण, तीन योग से पूर्णतः सावद्य योगों के, पाप कार्यों के त्यागी होते हैं, फिर भी जीवन चलाने के लिये खाने-पीने व ठहरने के स्थान की आवश्यकता होती है। इस तरह के जीवन-रक्षण में हिंसा भी कहीं न कहीं हो सकती है। शायद होती है, पर उससे बचने का प्रयत्न होना चाहिए। ध्यान पूरा साधना में हो, पर खाना-पीना, पहनना-ओढ़ना तथा चलना-फिरना-ठहरना-उठना-बैठना भी केवल साधना निमित्त हो, ऐसा चिन्तन भी आवश्यक है। इस चिन्तन से चूके तो स्थिति विषम बन सकती है।

युवक बाइक पर मंजिल की ओर चला जा रहा है। बाइक दौड़ रही है। बाइक चलाते-चलाते ही निकाला मोबाइल, लगाया उसे कान पर और सुनने लग गया क्रिकेट मैच की कमेन्ट्री। अब दो काम। बाइक भी चलाना, कमेन्ट्री भी सुनना। मुख्य काम क्या?

बाइक चलाना, पर उसका ध्यान कमेन्ट्री में ऐसा लगा कि सामने से आ रही गाड़ी का ध्यान ही न रहा। वह बच न सका। एक्सीडेन्ट हो गया। इसलिए मुख्य कार्य में ध्यान देना जरूरी है, अन्यथा ठोकर लगनी ही है।

ज्ञान के उद्यान में स्वाध्याय के माध्यम से, सत्संग में बैठकर महापुरुषों के वचनों से आचरण में सुधार आता है। नित्य स्वाध्याय करेंगे और सुनेंगे तो दया-दान की वृत्ति, प्रवृत्ति, जागृति बनी रह सकती है। दिल-दिमाग इनमें रमण करेगा तो व्यक्ति का जीवन बन सकता है, ऊँचा उठ सकता है। परन्तु आज दिल व दिमाग के सोचने के तरीके में परिवर्तन हो चुका है। इसी परिवर्तन के चलते कितने अनर्थ हो रहे हैं? मन कह रहा है कि अमुक एक काम करना है। 'वह कार्य कैसे किया जाये?' यह पता नहीं। सम्यग्ज्ञान नहीं तो सम्यक् आचरण कैसे आ पाएगा? ध्यान बस इतना ही है कि नौकरी नहीं की तो जीवन चलाना दूभर हो जायेगा। नौकरी से समय बचा। अब उस समय में क्या किया जाये? इस प्रश्न के समाधान में 'धर्म' की बात दिल-दिमाग में आती नहीं। आपके तो उस शेष रहे समय में अन्य-अन्य सांसारिक कार्यों की ही धराधरी लगी रहती है। नौकरी से पेट पूर्ति हुई, परिवार का पालन हुआ पर बचे समय में जो भी प्रमाद-कार्य किए, उनसे क्या मिला? जीवन-उत्थान, जीवन-निर्माण का चिन्तन आवश्यक है। नासमझी एवं मन की मनमानी के चलते आतंक अनर्थ होते जा रहे हैं। मन आपने वश में नहीं किया, अपितु आप स्वयं ही मन के वशीभूत बनते जा रहे हैं। अब जरा सावधान बनिए। जो दृष्टि मात्र कमाने-खाने में, मनोरंजन में लगी है, उसे धर्माचरण की तरफ मोड़ने के प्रयत्न में लग जाइए। व्रत-प्रत्याख्यानों में अपने को आगे बढ़ाइए। दया को धर्म का मूल बताया है। यह दयामय धर्म जीवन को भवसागर से तिराने वाला है। यह आपकी आत्मा को उत्थित कर महात्मा और परमात्मा बना सकता है एवं जन्म-मरण के सारे कष्ट मिटा सकता है।

आज लोग अज्ञान के कारण बिना प्रयोजन के जीव हिंसा कर रहे हैं। उसका तो त्याग करें। कुछ झूठी शान दिखाने, प्रतिष्ठा की चाह रखने और आडम्बर प्रदर्शन की चाह में अनर्थदण्ड करते जा रहे हैं, पाप करते जा रहे हैं, निष्प्रयोजन हिंसा करते जा रहे हैं। ध्यान रखिए- जो कुछ किया जा रहा है, उसका फल अवश्य भोगना पड़ेगा, अतः सच्चा ज्ञानी वही है जो प्रभु के उपदेशों को जीवन में उतारे। आपको अपना मन हिंसा से बचाकर अहिंसा के पावन पथ पर लगाना है। व्रत-प्रत्याख्यानों को ग्रहण करना है। यदि ऐसा किया तो आपके लिए, अपनी आत्मा के लिए, दूसरों को शांति देने की दृष्टि से, परिवार में एक आदर्श छोड़ने के रूप में यह धर्म आपको परम्परागत सुख देने वाला बनेगा। जो इनका पालन करेगा वह अक्षय सुख पाएगा। ■

प्रवचन

अंधेरे से आएं उजाले में

श्रद्धेय श्री योगेश मुनि जी म.सा.

श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा. द्वारा 14 जुलाई, 2012 को राजकंवर केवलमल लोढ़ा सामायिक-स्वाध्याय भवन, महावीर नगर, जयपुर में दिये गये प्रवचन का आशुलेखन श्री अशोक कुमार जी जैन, वरिष्ठ निजी सहायक, वन विभाग, जयपुर ने किया है।**-सम्पादक**

अन्तर की सफाई कर सदैव शुद्ध चैतन्य अवस्था को प्राप्त होने वाले, शुभ और धवल जीवन जीने वाले, धैर्य के साथ संसार की कर्म कालिमा को समाप्त कर हमेशा के लिये संसार की अवस्थाओं से मुक्त होकर आत्मा में अवस्थित होने वाले अनन्त-अनन्त उपकारी वीतराग भगवन्त को वन्दन करने के पश्चात्।

संसार परिबलों के बल को सीमित समझकर आत्मबल का सहारा लेने वाले, आगम बल से बलवान बनने वाले, मम जीवन के उपकारी पूज्य आचार्य भगवन्त के चरणों में कोटिशः वन्दन। आग्रह को नहीं गुण ग्रहण को जीवन का ध्येय बनाने वाले, सत्याग्रही नहीं सत्यग्राही बनने वाले, रत्नाधिक मुनि पुंगवों के चरणों में भाव भरा वन्दन।

वर्षा ऋतु आने के पूर्व किसान खेत की सफाई करता है और गृहस्थी घर में किसी की शादी होने से पूर्व घर की सफाई करता है। खाना खाने के पूर्व हाथ की सफाई करते हो, हाथों को धोते हो, ठीक उसी प्रकार धर्म क्रिया करने से पूर्व व्यक्ति को अपने अन्तःकरण की सफाई करनी होगी। धर्म क्रिया तभी लाभदायक होगी जब शुद्ध विधि से धर्म आराधना करेंगे। अपने अन्तःकरण को साफ करेंगे, शुद्ध करेंगे। भगवान ने कहा- **''धम्मो सुद्धस्स चिट्ठइ''**। धर्म शुद्ध आत्मा में निवास करता है। शुद्धता होगी, सरलता होगी वहाँ धर्म का निवास होगा। मेरा अन्तःकरण कितना साफ है? विचार करना होगा। तन शुद्धि से पहले मन की शुद्धि आवश्यक है। मेरे मन की चादर मैली हो रही है। मेरे भीतर की आत्मा गन्दी, मैली हो रही है, उसको कैसे साफ करूँ। ''हे प्रभो! मैं आपके चरणों में आकर शुद्धि करना चाहता हूँ।'' आनन्द गाथापति प्रभु महावीर के चरणों में पहुँचा और पहुँच कर परमात्मा से कह रहा है- **''सद्धहामि णं भंते, पत्तियामि णं भंते''**। हे प्रभो! आपके मार्ग पर श्रद्धा करता हूँ, प्रतीति करता हूँ कि मेरे अन्तःकरण में व्रत लेने के भाव जगे हैं। मेरे जो पाप हैं, उनका मैं निवारण करना चाहता हूँ। पापों का निवारण करने के लिये भीतर में सामर्थ्य जगेगा तभी शुद्धीकरण होगा। आनन्द गाथापति कहता है- ''मैं अपने जीवन को धन्य बना लूँ।'' एक बार ज्ञान की ज्योति प्रकट होते ही सारा अंधेरा दूर हो जाता है। एक बार प्रकाश

हुआ नहीं कि सारा अंधकार मिट जाता है। लेकिन जब अंधकार को मिटाने का समय आता है, तब व्यक्ति भोगों में, पापों में उलझ जाता है।

काम भोग प्यारा लगे, फल किंपाक समान।
मीठी खाज खुजावता, पीछे दुःख की खान।।

एक दृष्टान्त आता है। एक बार एक जन्मान्ध व्यक्ति था। वह परकोटे के अन्दर दीवार के सहारे चक्कर लगा रहा था। उस परकोटे से बाहर निकलने के लिये एक ही दरवाजा था। वह जन्मांध जैसे ही दरवाजे पर पहुँचता उसके शरीर में खुजली चलने लगती। चाहे उसका कर्म कहो, चाहे उसका दुर्भाग्य समझो, ज्योंहि दरवाजा आता, खुजली चल जाती। भोगों का नाम खुजली है। किसी दाद के रोगी को दाद हो जाये तो उसको खुजलाये बिना चैन नहीं मिलती है। वह व्यक्ति परकोटे के अन्दर चक्कर लगा रहा था, जैसे ही दरवाजा आने लगता, शरीर में खुजली होने के कारण हाथ को दीवार से हटाकर खुजली करने लग जाता। उसके पैर तो चल रहे थे, लेकिन हाथ दीवार से दूर हो जाते। उस खुजलाहट से उसे सुख की अनुभूति होती। खुजली करने में आनन्द नहीं आता है, सुखानुभूति होती है। इसी प्रकार संसार के भोग को भोगने में थोड़ी देर सुखानुभूति होती है- ''खणमित्तसुक्खा बहुकालदुक्खा''। क्षणमात्र के सुख के लिये बहुत काल तक दुःख भोगने पड़ते हैं। व्यक्ति इन क्षणिक सुखों में दीवाना बन रहा है। जैसे उस जन्मांध व्यक्ति के ज्योंहि दरवाजा आता है, खुजली चल जाती है, और परकोटे का दरवाजा खुजली करने के कारण छूट जाता है। ऐसे ही प्रवचन में नींद आने से बहुत सारे उपयोगी मूल्यवान सूत्र हमारे हाथ से निकल जाते हैं। नींद स्थानक में ही क्यों आती है? क्योंकि यहाँ शान्ति है, यहाँ आदमी सारे झंझटों को बाहर छोड़ कर आता है। श्रावक के पांच अभिगम बताये हैं, पांचवा अभिगम है- 'मन की एकाग्रता'। श्रावक स्थानक में निश्चिंत होकर, चिंता रहित होकर आता है। इसलिये नींद आराम से आती है।

एक संत प्रवचन फरमा रहे थे। संतों के सामने एक श्रावकजी बैठे थे। उन्हें नींद आ रही थी। उन्हें श्रावक तो नहीं, श्रोता कह सकते हैं। श्रावक किसे कहते हैं? जो श्रद्धा सहित श्रवण करता है, उसे श्रावक कहते हैं, पर वे तो नींद में थे। हाँ तो कह रहा था। संत ने श्रावक जी से कहा- सो रहे हो? उसी समय हड़बड़ाकर बोला- ''नहीं महाराज।'' नींद में आदमी सच नहीं बोलता है। पास वाला कोई जगावे कि आपको नींद आ रही है तो कहता अरे नहीं। थोड़ी देर बाद संत ने फिर पूछा श्रावक जी, जी रहे हो? नींद में से एक दम अचकचाकर वही रटा हुआ जवाब- ''नहीं महाराज।''

हम यथार्थ में नहीं जी रहे हैं। क्योंकि द्रव्य निद्रा से भले जग गये हैं, लेकिन भाव

निद्रा, मोह की निद्रा में सो रहे हैं। यदि ज्ञान का प्रकाश होता है, तो व्यक्ति वास्तविक जीवन जीने लगता है। भगवान ने कहा- "एक दीपक की ज्योति है और दूसरा सूर्य का प्रकाश।" दीपक की ज्योति और सूर्य के प्रकाश में क्या अन्तर है? दीपक की ज्योति को हवा बुझाने में समर्थ होती है, जबकि सूर्य की रोशनी को हवा बुझाने में समर्थ नहीं होती है। आप जीवन बीमा कराते हैं। उस पालिसी में दो हाथ रहते हैं, बीच में ज्योति लगी रहती है। उसके नीचे लिखा रहता है-"**योगक्षेमं वहाम्यहम्**" योग और क्षेम में जिया गया जीवन ही सुरक्षित है। जीवन बीमा वाले उस जीवन को सुरक्षित करने का कहते हैं, जो एक दिन नष्ट होने वाला है। भगवान महावीर कह रहे हैं मैं बीमा दे रहा हूँ वह जीव को सुरक्षित करने के लिये है। हमने अभी आत्मा को सुरक्षित करने का कवच नहीं बांधा है। सत्संग में रहने वाला हमेशा सुरक्षित रहता है। महापुरुषों के साथ रहेंगे तो बाहर की हवा असर नहीं करेगी। प्रभु बचाने में समर्थ हैं। समर्थ की शरण लेने पर हमारे में भी सामर्थ्य आ जाता है।

आनन्द श्रावक कह रहा है- प्रभो! आपके वचनों पर श्रद्धा है। मेरे अन्तःकरण में महाव्रत लेने के अभी शुद्ध भाव जागृत नहीं हो पाये। इसलिये आप अभी आगार धर्म में मुझे प्रवेश दिलाइए। जो मेरा सुरक्षा कवच बने। भगवान से प्रार्थना कर रहा है, महाव्रत लेने में पूर्ण सामर्थ्य प्रकट नहीं हो रहा है, संयम के लिए पूर्ण उल्लास और उमंग नहीं आया है। कदम-कदम पर डग-डग पर संयम और विवेक रखना होगा। आनन्द श्रावक कह रहा है- "हे प्रभो! मैं आपके समक्ष 12 व्रत अंगीकार करना चाहता हूँ। मैं संसार सीमित करना चाहता हूँ।" श्रावक भी आराधक होता है तो संसार सीमित कर लेता है। कह रहा है अव्रती से व्रती बना दो। भगवान ने एक ही संदेश दिया-"**अहा सुहं देवाणुप्पिया। मां पडिबंधं करेह।**" समय मात्र का भी विलम्ब मत करो। व्यक्ति धर्म-कार्य में हमेशा विलम्ब करता रहता है। कल-कल करते काल आ जाता है। काल आने पर करना चाहोगे तो भी नहीं कर सकोगे। कल के भरोसे कुछ होने वाला नहीं है। भगवान ने संदेश दिया- "श्रद्धा जगाओ।" आनन्द श्रावक ने भगवान के वचनों को खाली नहीं जाने दिया। यहाँ पर भी आप आचार्य भगवन्त के वचनों को खाली नहीं जाने दोगे। हम आशावादी हैं, हमें निराश नहीं होना है। कोई न कोई वीर तो जागृत होंगे। भीतर में बीज प्रस्फुटित होगा। व्रत-नियम लेना सरल है, परन्तु उसका पालन करना बहुत कठिन है। दुकान खोलना बहुत सरल है, लेकिन दुकान को चलाना कठिन है। भोजन करना तो सरल है, लेकिन भोजन को पचाना कठिन है। धर्म क्रिया करना सरल है, पर मन के परिणाम शुद्ध रखना कठिन है। व्यक्ति सुखानुभूति के पीछे अपना समय व्यर्थ कर देता है। जो सोता है उसकी जिन्दगी व्यर्थ है। सोया हुआ आदमी बेहोश होता है। उसे होश नहीं रहता। धर्म से आनन्द की अनुभूति होती है, संसार के भोगों

से सुखानुभूति होती है। यह सुखानुभूति ही हमारे होश को नष्ट करती है। होश को बढ़ाने के लिये ज्ञान जागृत करना होगा। ज्ञान दो प्रकार का होता है। एक ज्ञान तो आने के बाद जाता नहीं- वह है अप्रतिपाती ज्ञान। एक ज्ञान ऐसा होता है जो आने के बाद चला जाता है-वह है प्रतिपाती ज्ञान। चार ज्ञान प्रतिपाती होते हैं, और एक ज्ञान अप्रतिपाती है- केवलज्ञान। पूर्ण आनन्दानुभूति तो केवलज्ञान में ही होती है। होश भी पूर्ण तभी जागृत होता है। बाहर की आंख बंद होते हुए भी साधक भीतर की प्रज्ञा से कार्य करता है। हम अभी स्वप्रज्ञा से नहीं चल सकते तो वीर आज्ञा से तो चलें।

खिल जाने दो अंतर की कलिओं को, कुछ और बनोगे श्रेष्ठ यहाँ,
खुल जाने दो अंतर की कड़ियों को, कुछ और बनोगे ज्येष्ठ यहाँ....।
चन्द्र से ज्यादा निर्मल हो फिर, पाप का कालिख क्यों आया?
सूर्य से ज्यादा तेजस्वी हो फिर, घोर अंधेरा क्यों छाया?
जग जाने दो अंतर ज्योति को, कुछ और बनोगे, श्रेष्ठ यहाँ।।

जीवनदीप ज्योति के समान अस्थिर है। महापुरुष फरमाते हैं, जो व्यक्ति व्रत नियम द्वारा परकोटा बांध लेता है, वह सुरक्षित हो जाता है। व्रत में वह सामर्थ्य है जो हमें बंधन से, दुर्गति से बचा सकता है। उस पर विषय-कषाय रूपी हवा के झोंकों का असर नहीं पड़ता है। आत्मा पर कालिख छा रही है जब तक छाई हुई कालिख समाप्त नहीं होगी तब तक धर्म में मन स्थिर नहीं होगा। अन्तःकरण को शुद्ध करें। सिद्ध बनने के लिये महापुरुषों का संसर्ग चाहिये। प्रभु महावीर का, संतों का सान्निध्य नहीं मिलने के कारण राजगृह के श्रावकों में भी ढिलाई आने लगी। हमें तो आचार्यदेव जैसे महापुरुषों का सान्निध्य मिला है। दृढ़ता के साथ पाप कार्य को कल पर टालो, धर्म कार्य को आज और अभी से प्रारम्भ करो। लेकिन हम अच्छे कार्य सामायिक, पौषध, संवर, उपवास, स्वाध्याय को कल पर टालते हैं। महाराज साहब आज नहीं, कल कर लूँगा। हमारे अन्तःकरण में शुद्धता होगी तो धर्म कार्य के लिये तैयार हो जायेंगे।धर्म कार्य में देरी नहीं करनी चाहिये। जहाँ देर है, वहाँ अंधेर है। ना देरी करो और ना ही अंधेरी गुफा में भटको। उजाले में आने के लिये महापुरुषों के वचनों को श्रवण करें, सत्संगति करें, सामर्थ्य अनुसार व्रत ग्रहण करें। यहाँ वर्षावास चल रहा है। वर्षावास का मतलब क्या? वर्ष भर के लिये आवास। यानि चार महीने में इक्ट्ठा कर लें जो वर्ष भर तक काम आता रहे। चार महीने का पानी इक्ट्ठा किया वर्ष भर के लिये काम आता है। वर्ष भर के लिये वीतराग वाणी का हृदय में आवास करने के लिये। महापुरुषों की वाणी को श्रवण कर भीतर अपनी आत्मा की चेतना को जागृत करने के लिये कदम बढ़ायेंगे तो वर्षावास सार्थक होगा। इन्हीं मंगल भावों के साथ। ■

आगम-चर्चा

प्राकृत आगम-साहित्य का संक्षिप्त परिचय

प्रो. सागरमल जैन

प्राकृत आगम-साहित्य

प्राकृत आगम साहित्य भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। यह साहित्य मूलतः अर्धमागधी प्राकृत में रचित है, फिर भी कालक्रम में इस पर शौरसेनी प्राकृत और महाराष्ट्री प्राकृत का प्रभाव देखा जाता है। अर्द्धमागधी साहित्य का रचना काल ई.पूर्व पाँचवी शती से लेकर ईसा की पाँचवी शती तक माना जाता है। जहाँ आचारांग, सूत्रकृतांग, इसिभासियाइं आदि ग्रन्थ ई.पूर्व चौथी-पाँचवीं शती की रचनाएँ हैं, वहीं अनुयोगद्वार, नन्दीसूत्र आदि क्रमशः ईसा की तृतीय शती और पाँचवीं शती की रचनाएँ हैं। उमास्वाति के तत्त्वार्थसूत्र और उसके स्वोपज्ञभाष्य में अंगआगम साहित्य के ग्रन्थों की संख्या बारह मानी गई है। श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों इस सम्बन्ध में एकमत हैं। दिगम्बर परम्परा में अंगबाह्य आगमों की संख्या चौदह सूचित की गई है। यद्यपि तत्त्वार्थ सूत्र मूल में अंगबाह्य के अनेक भेद भी कहे गये हैं। नन्दीसूत्र में अंगप्रविष्ट और अंगबाह्य आगमों की संख्या 78 बताई गई है, इसमें अंग आगम 12, आवश्यक 6, कालिकसूत्र 31 और उत्कालिकसूत्र 29 बताये गये हैं। इनमें से अनेक ग्रन्थ आज अनुपलब्ध हैं। दिगम्बर परम्परा आज अंग आगमों की संख्या एवं उनके नाम समान रूप से मान्य करके भी उनका लोप मानती है, किन्तु श्वेताम्बर परम्परा आज भी दृष्टिवाद को छोड़कर शेष अन्य आगम ग्रन्थों की सत्ता को स्वीकार करती है। यद्यपि यह सत्य है कि अनेक अंग आगमों की विषय वस्तु में आंशिक परिवर्तन, आंशिक लोप और आंशिक परिवर्धन देखा जाता है। फिर भी आचारांग, इसिभासियाइं और सूत्रकृतांग की विषयवस्तु की प्राचीनता से इंकार नहीं किया जा सकता है। यह सत्य है कि कालक्रम में विशेष रूप से उनकी वाचनाओं एवं उनके सम्पादन के समय उनमें आंशिक रूप से परिवर्तन, परिवर्धन और विलोप हुआ है। कुछ आगम ग्रंथ ऐसे भी हैं जिनकी विषयवस्तु में कालक्रम के आधार पर अनेक स्तर देखे जाते हैं जैसे भगवती सूत्र, रायपसेनीय आदि। उनके कुछ भाग अति प्राचीन हैं तो कुछ अंश अंतिम वल्लभीवाचना के समय प्रक्षिप्त भी हुए हैं। अतः ऐसे आगमों की विषयवस्तु की समीक्षा करते समय बहुत सावधानी रखना आवश्यक है, उनकी विषय वस्तु को न तो पूर्णतः परवर्ती माना जा सकता है और न पूर्णतः प्राचीन ही, जैसे रायपसेनीय का कुछ अंश बौद्ध त्रिपिटक

के पसेनीयसुत्त के समान है तो कुछ अंश ईसा की प्रथम, द्वितीय या तृतीय शताब्दी के हैं- जैसे सूर्याभदेव का कथन।

प्राकृत आगम-साहित्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि

जहाँ तक आगम साहित्य की दार्शनिक विषयवस्तु का प्रश्न है, आगमों की विषय वस्तु बहु-आयामी है, उसमें दर्शन, अध्यात्म, साधना, मुनि-आचार, गृहस्थ-आचार, कला, शिल्प, साहित्य, संस्कृति, इतिहास सभी समाहित हैं। साथ ही वे अनेक ऐसी ऐतिहासिक सूचनाओं से भी युक्त हैं, जो अन्यत्र दुर्लभ हैं। आगम साहित्य में अपने युग का यथार्थ चिन्तन देखा जाता है। इसिभासियाइं में जिस धार्मिक सहिष्णुता और उदारता का परिचय मिलता है, वह अद्वितीय है। ऐसी ही कुछ दृष्टि सूत्रकृतांग में भी देखी जाती है। इसिभासियाइं में जैन तीर्थंकर पार्श्व और महावीर के साथ-साथ सारिपुत्त, महाकाश्यप और वज्जीपुत्त जैसे बौद्ध श्रमणों, मंखलिगोशालक जैसे आजीवक सम्प्रदाय के ऋषियों तथा नारद, याज्ञवल्क्य आदि अनेक औपनिषदिक ऋषियों के उपदेश अपने यथार्थ रूप में संकलित हैं। आचारांग का प्रथम श्रुतस्कन्ध भारतीय अध्यात्म का शिखर सूत्रग्रन्थ है, इसके आत्मा सम्बन्धी अनेक अंश उपनिषदों के समान हैं। इसमें आत्मा के स्वरूप एवं अस्तित्व तथा आध्यात्मिक साधना के अनेक निर्देश उपलब्ध हैं। सूत्रकृतांग में तत्कालीन विभिन्न दार्शनिक मान्यताओं और धार्मिक साधनाओं के निर्देश हैं। स्थानांग और समवायांग बौद्ध धर्म के अंगुतर निकाय के समान जैन धर्म-दर्शन के संख्या आधारित विश्वकोष हैं, इनमें दार्शनिक सामग्री पर्याप्त रूप से उपलब्ध है। भगवतीसूत्र में जैन धर्म-दर्शन का प्राचीनतम स्वरूप उपलब्ध है, जिसके आधार पर जैन धर्म-दर्शन की विकास यात्रा को समझा जा सकता है। ज्ञाताधर्मकथा में भगवान महावीर द्वारा कथित उपदेशपरक उन्नीस कथाएँ हैं, तो उपासकदशा गृहस्थ की आचार व्यवस्था के साथ-साथ भगवान महावीर के दश प्रमुख उपासकों की जीवनचर्या भी उपस्थित करता है। अन्तकृत्‌दशा, अनुत्तरौपपातिकदशा और विपाकसूत्र प्राचीन युग के कुछ आदर्श साधकों के जीवनवृत्त उपस्थित करते हैं और इस प्रकार व्यक्ति को त्याग और संयम मार्ग अपनाने की प्रेरणा देते हैं। विपाकसूत्र की कथाएँ पुण्य और पाप कर्मों के क्रमशः शुभ एवं अशुभ फलों का विवेचन करती है। प्रश्नव्याकरण की विषय वस्तु के कालक्रम में पर्याप्त परिवर्तन हुआ है, फिर भी उसका वर्तमान संस्करण जैन तत्त्वमीमांसा के आस्रव एवं संवर तत्त्वों की विवेचना करता है। दृष्टिवाद को श्वेताम्बर परम्परा और कुछ अंशों में दिगम्बर परम्परा आज अनुपलब्ध मानती हैं। मेरी दृष्टि में इसके नाम से यह स्पष्ट होता है कि इसमें उस युग की विभिन्न दार्शनिक और साधनात्मक जीवन-दृष्टियों का उल्लेख हुआ होगा, जिसे कालान्तर में जैन

साधकों की श्रद्धा के च्युत होने की दृष्टि से अनुपयोगी मानकर विलुप्त कर दिया गया।

उपांग साहित्य में परिगणित औपपातिक सूत्र में उस युग की अनेक धार्मिक साधनाओं की परम्पराओं का निर्देश है। रायपसेनीयसुत्त आत्मा के अस्तित्व की असिद्धि या सिद्धि का एक प्रखर प्रयास है। साथ ही इसमें उस युग के मन्दिर-शिल्प एवं पूजा-विधि की भी अच्छी चर्चा है। इसमें नृत्य और वाद्य कलाओं का भी विपुल चित्रण है। जीवाजीवाभिगम- जीव और अजीव तत्त्वों की जैन दार्शनिक मान्यताओं का विस्तृत विवेचन करता है। चतुर्थ उपांगसूत्र प्रज्ञापना में जैन दार्शनिक मान्यताओं का 36 अध्ययनों में विस्तृत एवं प्रामाणिक विवेचन है। चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति जैन ज्योतिष के प्राचीनतम ग्रन्थ हैं, इनमें दार्शनिक चर्चा का प्रायः अभाव है, किन्तु वैदिक ज्योतिष से समरूपता है। जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति में सामान्यतः जैनलोकविभाग या सृष्टि विद्या का और विशेषरूप से जम्बूद्वीप का भौगोलिक विवेचन है। साथ ही इसमें ऋषभदेव का जीवनचरित्र भी प्रज्ञप्त है। शेष पाँच उपांग अति संक्षिप्त हैं। इनमें निरयावलिया में नरकगामी जीवों के दुःखों का वर्णन है तो वृष्णिदशा में वृष्णिवंश (कृष्ण के वंश) का उल्लेख है। मूलग्रन्थ उत्तराध्ययन और दशवैकालिक आचारशास्त्र से और विशेष रूप से मुनि-आचार से सम्बन्धित हैं। दशवैकालिकसूत्र तो मुनि-आचार से ही सम्बन्धित है, किन्तु उत्तराध्ययन में जैन तत्त्वमीमांसा का भी सुन्दर विवेचन है। इसी प्रकार चूलिकासूत्रों या मूलसूत्रों के रूप में मान्य नन्दीसूत्र एवं अनुयोगद्वार सूत्र तो जैन ज्ञानमीमांसा एवं प्रमाण-मीमांसा के आधारभूत ग्रन्थ हैं। इसी प्रकार प्रज्ञापनासूत्र जैन भाषादर्शन का आधार ग्रन्थ है। मूर्तिपूजक श्वेताम्बर परम्परा द्वारा पिण्डनिर्युक्ति या ओघनिर्युक्ति का समावेश मूलसूत्रों में किया जाता है, किन्तु ये दोनों ग्रन्थ भी मुनि-आचार से सम्बन्धित हैं। जबकि स्थानकवासी और तेरहपंथी परम्पराएँ इनमें नन्दीसूत्र और अनुयोगद्वार का समावेश करती हैं- इन दोनों की विषय वस्तु ज्ञान एवं प्रमाण मीमांसा है। श्वेताम्बर मूर्तिपूजक परम्परा में इन दोनों को चूलिकासूत्र कहा गया है, किन्तु ये दोनों ज्ञानमीमांसा के ग्रन्थ हैं। छेदसूत्रों में स्थानकवासी परम्परा दशाश्रुतस्कन्ध (आचारदशा), व्यवहारसूत्र, बृहत्कल्पसूत्र और निशीथ इन चार ग्रन्थों को मानती है, जबकि श्वेताम्बर मूर्तिपूजक परम्परा इनमें महानिशीथ और जीतकल्प को जोड़कर छह छेदसूत्र मानती है- इन सभी का सम्बन्ध मुनि आचार में लगे हुए दोषों की प्रायश्चित्त व्यवस्था से है, अतः अन्ततः ये भी जैन दर्शन से सम्बन्धित हैं। जैन आगमों में आवश्यक सूत्र का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसमें सामायिक, स्तवन, वंदन, प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग और प्रत्याख्यान- इन छह आवश्यक कर्तव्यों का निर्देश है। नन्दीसूत्र में इन छहों को स्वतंत्र ग्रन्थ माना गया है। आगम-साहित्य में वर्तमान में स्थानकवासी और तेरापंथी परम्पराएँ

बत्तीस आगम मानती हैं। मूर्तिपूजक परम्परा इनमें 10 प्रकीर्णकों और 2 छेदसूत्रों को बढ़ाकर आवश्यक सहित कुल पैंतालीस आगम मानती है। प्रकीर्णक साहित्य साधना और विशेषरूप से समाधिमरण की साधना से सम्बन्धित उच्चकोटि का साहित्य है, यद्यपि प्रकीर्णक साहित्य में दस प्रकीर्णकों के अतिरिक्त भी अनेक ग्रन्थ हैं, जिनकी संख्या तीस के लगभग है, इन्हें तथा आगमिकव्याख्या-ग्रन्थों यथा- निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि आदि को मिलाकर कुछ मूर्तिपूजक आचार्य 84 आगमों की बात करते हैं। वस्तुतः आगमिक-साहित्य में उसका व्याख्या-साहित्य भी मिला दिया जाये तो यह भारतीय प्राचीन साहित्य एवं दर्शन का एक बहुत ही विशाल भाग होगा तथा उसमें भारतीय विद्याओं के अनेक पक्ष सम्मिलित होंगे। इसी क्रम में यदि हम प्राकृत भाषा में निबद्ध और दिगम्बर परम्परा में मान्य आगम तुल्य ग्रन्थों पर विचार करें तो कषायप्राभृत, षट्खण्डागम, गोम्मट्टसार, षट्कर्मग्रन्थ (श्वे.) तथा पंचसंग्रह को जैन कर्म सिद्धान्त के विशिष्ट ग्रन्थ माना जा सकता है। इसी प्रकार आचार्य कुन्दकुन्द के समयसार, प्रवचनसार, नियमसार, पंचास्तिकायसार, जीवसमास (श्वे.) आदि में जैन अध्यात्म एवं जैन तत्त्वमीमांसा की विपुल सामग्री है। इसी प्रकार तिलोयपन्नत्ति, लोकविभाग (श्वे.) जैन सृष्टि विद्या के महत्वपूर्ण अंग है। साधना की दृष्टि से मूलाचार, भगवतीआराधना, आराधनापताका (श्वे.), संवेगरंगशाला आदि भी महत्त्वपूर्ण हैं। वैसे तो महाराष्ट्री एवं शौरसेनी प्राकृत में सैकड़ों ग्रन्थ ऐसे हैं, जिनकी पृष्ठभूमि को समझना आवश्यक है, किन्तु विस्तार भय से इस आलेख को यही विराम दे रहे हैं।

-निदेशक, प्राच्य विद्यापीठ, दुपाडारोड, शाजापुर (म.प्र.)

क्रोध को प्रेम से जीतें

श्री चन्द्रप्रभ जी

एक एस.पी. महोदय अपने लाव-लश्कर के साथ किसी दंगाग्रस्त क्षेत्र में पहुँचे। मौहल्ले के लोग बहुत गुस्साए हुए थे। उनमें से किसी ने एस.पी. के मुँह पर थूक दिया। यह देखते ही थानेदार ने रिवॉल्वर निकाल ली और उस व्यक्ति पर तान दी। वह गोली चलाने को तत्पर हुआ ही था कि एस.पी. ने कहा, 'ठहरो, क्या तुम्हारे पास रुमाल है?' 'हाँ, सर है।' 'मुझे रुमाल दो।' रुमाल हाथ में आया। एस.पी. ने मुँह पौंछकर रुमाल फेंक दिया और थानेदार से कहा, 'हमेशा याद रखना जो काम रुमाल से निपट जाए उसके लिए रिवॉल्वर चलाना बेवकूफी है।'

यही है क्रोध जीतने का पहला और कारगर फॉर्मूला कि जो काम प्रेम भरे शब्दों से पूरा हो सकता है, उसके लिए तैश क्यों खाया जाए। क्रोध तभी करें जब क्रोध करने के अतिरिक्त कोई विकल्प ही न बचे। अपने मातहत को, बेटे को, बहू को, नौकर को तभी डाँटें-डपटें जब इसके अलावा कोई रास्ता ही न रहे।

-'कैसे जिएँ क्रोध एवं चिंतामुक्त जीवन' से संकलित

चिन्तन

सुप्त और जागृत : एक विवेचन

डॉ. जवाहर लाल नाहटा

आचारांग सूत्र में कहा गया है- **'सुत्ता अमुणी मुणिणो सया जागरंति'** अर्थात् अमुनि सदा सोते हैं और मुनि सदा जागते हैं। अमुनि से यहाँ तात्पर्य सामान्य सांसारिक मनुष्यों से है। मुनि वे होते हैं जो मुक्ति और ज्ञान की साधना में सदा चिन्तन-मनन करते रहते हैं एवं सजग रहते हैं। आहार, मैथुन और निद्रा प्राणियों की जैविक आवश्यकता है, फिर भी मुनि-ज्ञानी और संयमी इन जैविक आवश्यकताओं पर विजय प्राप्त करके 'जिन' बन जाते हैं।

अमुनि सोते हैं, सांसारिक मनुष्य सोते हैं, अज्ञानी सोते हैं-क्योंकि ये प्रकृति (पुद्गलों) के अधीन हैं। जड़ता प्रकृति का स्वभाव है, इसलिए सुषुप्ति के समय मनुष्य निश्चल जड़ हो जाता है। कुछ मनुष्य सम्पूर्ण जीवन जड़वत् जीते हैं। किन्तु, विवेकशील मनुष्य जानते हैं कि मनुष्य केवल जड़ प्रकृति नहीं है, उसमें एक चेतन आत्मा भी होती है, जो पुद्गलों से मुक्त होना चाहती है। ज्ञान के बिना यह संभव नहीं। इसलिए कठोपनिषद् के ऋषि कहते हैं-

''उत्तिष्ठत जागृत प्राप्य वरान्निबोधत' -कठोपनिषद्, 1/3/14

''अरे अविद्याग्रस्त लोगों! उठो, अज्ञान निद्रा से जागो और ज्ञानी पुरुषों के समीप बैठ कर ज्ञान प्राप्त करो।'' यमराज नचिकेता को मृत्यु पर विजय प्राप्त करने के लिए यह सन्देश देते हैं। ऐसा नहीं करने वाले व्यक्ति संसार की मोह निद्रा में सोये रहते हैं और मृत्यु को प्राप्त होते हैं। मुनि अज्ञान निद्रा से जागकर साधना करते हैं और अमरत्व प्राप्त कर मुक्त हो जाते हैं।

संसार के अज्ञानी लोग खाने और सोने में ही सुख मानकर सन्तुष्ट हो जाते हैं, किन्तु ज्ञानीजन जागृत रहकर परमतत्त्व को पाने के लिए उसके विरह में दिन-रात व्याकुल रहते हैं। कबीरदास कहते हैं-

सुखिया सब संसार है, खावे अरु सोवै।
दुखिया दास कबीर है, जागे अरु रोवै।।

कबीरदास का यह रुदन एक भक्त की आत्मजागृति का रुदन है। उनके अनुसार परमतत्त्व को पाने की तड़फ, उसको न पाने की वेदना और रुदन वैसा ही होना चाहिये जैसा एक वियोगिनी स्त्री का अपने पति के प्रति होता है। प्रियतम न जाने कब आ जाये, वह दिन-

रात जागकर, खाना-पीना छोड़कर रुदन करती रहती है। इस वेदना की जागृति में उसे प्रियतम प्राप्त होते हैं। खाने-पीने के सांसारिक भोगों और निद्रा सुख से परमतत्त्व की प्राप्ति नहीं होती। इसलिए मुनि सदा जागते हैं और अमुनि सदा सोते रहते हैं। संसार के प्राणियों के लिए जो रात्रि होती है, उसमें मुनि-ज्ञानी और संयमी पुरुष जागते हैं। जब सांसारिक लोग जागकर भोग-विलास में मस्त रहते हैं, मुनिजन उसे अज्ञान की घनघोर निशा के समान देखते हैं-

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः।।

-भगवद् गीता, 2/69

जब संसार के सभी प्राणी सो जाते हैं और वातावरण शान्त हो जाता है, मुनियों के लिए यह वातवरण अनुकूल हो जाता है। इस निःशब्द एकान्त वातावरण में ज्ञानी पुरुष मनन, चिन्तन और गहन ध्यान में लीन होकर साधना करते हैं और अमरत्व की प्राप्ति करते हैं।

भगवतीसूत्र में इन्द्रभूति गौतम और भगवान महावीर के बीच निद्रा विषयक कुछ प्रश्नोत्तर मिलते हैं। उनके अनुसार छद्मस्थ (सर्वज्ञ होने के पहले की स्थिति) मनुष्य नींद लेते हैं, किन्तु केवली नींद नहीं लेते। वे नित्य जागृत रहते हैं। इसका कारण बताते हुए भगवान कहते हैं- ''नींद का हेतु दर्शनावरणीय कर्म है, जिसका उदय साधारण जीवों में सदैव रहता है, केवली पुरुषों में नहीं। क्योंकि उनके सारे कर्मों का क्षय हो चुका होता है।'' (भगवती सूत्र, 5/72-75) इसलिए जैन देवालयों में ध्यानस्थ तीर्थंकर प्रतिमाओं के नेत्र श्वेताम्बर परम्परा में पूर्ण रूपेण खुले रखे जाते हैं। उनके खुले नेत्र उनकी पूर्ण जागृति के सूचक हैं।

भगवान महावीर ने अपनी साधना के छद्मस्थ काल में आहार-संयम, इन्द्रिय-संयम के साथ-साथ निद्रा-संयम की पूर्ण साधना की। ''महावीर शरीर सुख के लिए अधिक नींद नहीं लेते थे। निद्रा का आक्रमण होने पर वे खड़े होकर ध्यान करते। चिर जागरण के पश्चात् कभी-कभी अति अल्प नींद लेते, किन्तु निद्रा के प्रति वे अप्रतिज्ञ रहते। भगवान पल भर की नींद के पश्चात् पुनः जागृत होकर ध्यान में बैठ जाते। कभी-कभी नींद से छुटकारा पाने हेतु कुछ समय के लिए बाहर चंक्रमण (चक्कर लगाना) करते।'' (आचारांग, 9/2/5-6) इस प्रकार भगवान महावीर अपने साधना-काल में नींद पर पूर्ण नियंत्रण करके सदैव जागृत रहे।

जागृति जीवन है और सुषुप्ति मृत्यु। यह विचार सांसारिक और आध्यात्मिक दोनों क्षेत्रों में लागू होता है। प्रगाढ़ आसुरी निद्रा में सोया हुआ व्यक्ति अपने शरीर की रक्षा करने में भी असमर्थ होता है। मदोन्मत्त व्यक्ति का अपने मन, वचन और काया पर नियंत्रण नहीं रहता। विकट परिस्थितियों में मूढ़ व्यक्ति हतप्रभ और किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाते हैं। इसी तरह आलस्य, तंद्रा, निद्रा, प्रचला आदि (बैठे-बैठे या खड़े-खड़े सोना) सुषुप्ति की श्रेणी

में ही आते हैं। कभी-कभी व्यक्ति देखते हुए नहीं देखता (पश्यन्नपि न पश्यति), जागते हुए भी नहीं जागता, जानते हुए भी अज्ञानी बना रहता है। ऐसे में सोये हुए को जगाया जा सकता है, किन्तु जागे हुए को कैसे जगाया जाये? वस्तुतः वे गहन तामसी महानिद्रा में सोये हुए हैं। दर्शनमोहनीय कर्म का क्षयोपशम या क्षय होने पर ही उनकी जागृति संभव है। दर्शनमोहनीय कर्म के उदय से हमारी संवेदन-शक्ति आच्छादित हो जाती है। यह भाव निद्रा की स्थिति है- जिसमें सोये हुए, मूर्च्छित और विवेक शून्य व्यक्ति मृतक के समान होते हैं, निश्चल और निष्क्रिय। ऐसे अज्ञानी-अकर्मण्य सोये रहें, यही अच्छा है। जागने पर वे अपना और दूसरों का अहित ही करेंगे।

ज्ञानी सदैव जागते हैं। निद्रा के समय उनका शरीर सोता है, चेतना जागृत रहती है। सम्यक् चारित्र के कारण वे स्वप्न में भी कोई मिथ्या कर्म नहीं करते। निद्रा ध्यान में विघ्न उत्पन्न करती है इसलिए मुनि ध्यान की साधना करते हुए नींद को अपने वश में करते हैं। ध्यान पूर्ण जागरण की अवस्था है, भले ही आँखें बन्द हों। ध्यान की चरम स्थिति, समाधि में मनुष्य अपने आत्म-भाव में पूर्ण जागृत रहता है।

-एसोशिएट प्रोफेसर (सेवानिवृत्त),
तेरापंथ भवन के पास, बरपेटा रोड़-781315 (असम)

क्षमापना-दिवस पर न्यौता

श्रीमती कमला सुराणा

(तर्जः- तलरिया मगरिया रे मोरूँ बाई लारे रैया)

स्वागत करसा मैं तो आपरो
घणा मान सूँ पधारिया व्याख्या में।
मंगल गावाँ आज सब मिलने
करलां आत्मा रो उत्थान धर्म ध्यान सूँ।
बधावणा करसा सामायिक संवर सूँ
हिलमिल मनावालां पर्व आज रो,
न्यौता आपने प्रतिक्रमण पौषध रो,
राग छोड़ूँ, द्वेष छोड़ूँ, शुद्ध भाव सूँ।
आरती उतारूँ मैं तो, क्षमा भाव सूँ,
स्वागत करसां मैं तो आपरो घणा मान सूँ।

-ई. 123, नेहरू पार्क, जोधपुर (राज.)

शोधालेख

पंच समवाय सिद्धान्त : एक समीक्षा (2)

डॉ. श्वेता जैन

स्वभाववाद : स्वभाव की ऐकान्तिक कारणता सम्बन्धी मत

स्वभाववाद एक प्राचीन सिद्धान्त है। जिसके अनुसार समस्त कार्यों का कारण स्वभाव है। स्वभाववादी कहते हैं कि संसार में स्वभाव के अतिरिक्त कोई भी कारण नहीं है, जिससे कार्य निष्पन्न होता हो। काँटों की तीक्ष्णता, मृगों और पक्षियों का विचित्र वर्ण आदि कार्य स्वभावजन्य हैं। सभी कार्य स्वभाव से जन्य होते हैं।

स्वभाववाद भी कालवाद की भाँति प्राचीन है। वेद में स्वभाववाद का स्पष्ट उल्लेख प्राप्त नहीं होता, किन्तु नासदीय सूक्त के अन्तर्गत सृष्टि विषयक जिन विभिन्न मतों का उल्लेख हुआ है, उनके आधार पर पं. मधुसूदन ओझा ने दश वादों का उत्थापन किया है। इसमें एक अपरवाद है। अपर का अर्थ पं. ओझा ने अ-पर अर्थात् स्व करते हुए अपरवाद को स्वभाववाद के रूप में प्रतिष्ठित किया है। 'स्वभाव भूतचिन्तका:' कहकर महाभारत में भूत चिन्तकों को स्वभाववादी के रूप में प्रकाशित किया गया है।

स्वभाववाद का विकास संस्कृत साहित्य की बुद्धचरित, बृहत्संहिता, पंचतन्त्र, हितोपदेश आदि कृतियों में भी दृष्टिगोचर होता है। बुद्धचरित में अश्वघोष ने स्वभाववाद से सम्बद्ध एक श्लोक लिखा है जो स्वभाववाद का वर्णन करते समय लगभग सभी दार्शनिक कृतियों में उद्धृत हुआ है, वह श्लोक है-

> **क: कण्टकस्य प्रकरोति तैक्ष्ण्यं, विचित्रभावं मृगपक्षिणां वा।**
> **स्वभावत: सर्वमिदं प्रवृत्तं न कामचारोऽस्ति कुत: प्रयत्न:।।**

स्वभाव की कारणता स्वीकृत होने के बावजूद भी ऐकान्तिक कारणता जैन मतावलम्बियों को मान्य नहीं है। फलस्वरूप जैनदार्शनिकों ने स्वग्रन्थों में स्वभाववाद का निरूपण करने के साथ युक्तियुक्त निरसन भी किया है। मल्लवादी क्षमाश्रमण विरचित द्वादशारनयचक्र, जिनभद्रगणि विरचित विशेषावश्यकभाष्य, हरिभद्रसूरिविरचित धर्मसंग्रहणि एवं शास्त्रवार्ता समुच्चय, अभयदेवसूरि रचित तत्त्वबोधविधायिनी टीका आदि इसके निदर्शन हैं। जैन ग्रन्थों में चर्चित स्वभाववाद से सम्बद्ध कतिपय बिन्दु इस प्रकार हैं-

स्वभाववादी के प्रमुख तर्क-

1. आचारांगसूत्र की टीका में शीलांकाचार्य ने स्वभाव को परिभाषित करते हुए कहा है-

"वस्तुन: स्वत एव तथापरिणतिभाव: स्वभाव: अर्थात् वस्तु का स्वत: तथारूप परिणत होना स्वभाव है। सभी भूत स्वभाव से ही प्रवृत्त और निवृत्त होते हैं।

2. शास्त्रवार्ता समुच्चय में हरिभद्रसूरि कहते हैं कि जीव के गर्भ से लेकर स्वर्गगमन तक के सभी कार्य स्वभाव से सम्पन्न होते हैं। पदार्थों की उत्पत्ति के साथ उनका विनाश भी उनके स्वभाव से ही नियत देश-काल में होता है।
3. संसार में मूंग, उड़द आदि का पाक भी स्वभाव के बिना नहीं होता, क्योंकि जिस वस्तु में पकने का स्वभाव नहीं है, वह काल तथा अन्य कारणों के होने पर भी परिपक्व नहीं होती।
4. स्वभाववाद के अनुसार समस्त प्राणियों का व्यवहार स्वभाव से संचालित होता है। प्राणी अपने स्वभाव से ही शुभ या अशुभ कार्य करते हैं। जगत् की विचित्रता भी स्वभाव जनित ही है। जैसे कांटों की तीक्ष्णता, फूलों की कोमलता आदि।

जैन दार्शनिकों द्वारा एकान्त स्वभाववाद का खण्डन-

1. कण्टकादि की तीक्ष्णता निर्हेतुक नहीं है, क्योंकि उसमें बीज आदि की कारणता सिद्ध है।
2. शास्त्रवार्तासमुच्चय के टीकाकार यशोविजय स्वभाववाद का निरसन करते हुए कहते हैं कि प्रत्येक कार्य के प्रति भिन्न-भिन्न स्वभाव को कारण मानने से घट आदि की एक जातीयता नहीं बन पाएगी। जबकि घट-पट आदि जैसे एक जाति के सहस्रों कार्य जगत् में देखे जाते हैं।
3. अभयदेवसूरि ने कहा है कि "स्वभावत: एव भावा जायन्ते" कथन में स्वात्मनि क्रियाविरोध दोष आता है। जो पदार्थ अनुत्पन्न है उसका उत्पन्न होने का स्वभाव नहीं माना जा सकता। उत्पन्न पदार्थ में भी उत्पन्न होने के स्वभाव की निवृत्ति माननी होगी, जिससे स्वभाव की नित्य कारणता का खण्डन हो जाता है।
4. हरिभद्रसूरि ने धर्मसंग्रहणि में जगत् की विचित्रता एवं सुख-दु:ख के अनुभव में एकमात्र स्वभाव को हेतु मानने वाले स्वभाववादियों पर प्रश्नों की बौछार कर दी है। वे कहते हैं- स्वभाव भाव रूप है या अभाव रूप ? यदि वह भावरूप है तो एक रूप है या अनेक रूप ? यदि भाव रूप में एक रूप है तो वह नित्य है या अनित्य ? यदि वह अनेक रूप है तो मूर्त है या अमूर्त ? इन प्रश्नों के उत्तरों का विकल्प प्रस्तुत करते हुए हरिभद्रसूरि ने स्वभाववाद का सबल निरसन किया है।

जैन दर्शन में स्वभाव की कथंचित् कारणता स्वीकृत

जैनदार्शनिकों ने स्वभाववाद का निरसन किया है तथापि नयवाद से जैनदर्शन में भी

स्वभाव की कारणता स्वीकृत है। षड्द्रव्य निजस्वभावानुसार कार्य करते हैं। गति, स्थिति, अवगाहना, परत्व-अपरत्व आदि कार्यों में षड्द्रव्यों का स्वभाव हेतु है। विस्रसा परिणमन में पदार्थ का अपना स्वभाव ही कारण बनता है। जीव भव्यत्व, अभव्यत्व, जीवत्व आदि के रूप में स्वभाव से ही कार्य करता है। ज्ञानावरण, दर्शनावरण आदि अन्य कर्मों का भी अपना-अपना स्वभाव है, जिसके अनुसार वे कार्य करते हैं। यह प्रकृतिबन्ध कहलाता है। यही कारण है कि जैनदार्शनिक पंचकारण समवाय में स्वभाव को भी स्थान देते हैं।

नियतिवाद : नियति की ऐकान्तिक कारणता सम्बन्धी मत

नियतिवाद के अनुसार नियति ही सब कार्यों का कारण है। नियतिवाद का निरूपण मंखलि गोशालक ने किया था। उनकी मान्यता का स्पष्ट उल्लेख व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र और बौद्ध त्रिपिटक के दीघनिकाय में हुआ है। सूत्रकृतांग और उपासकदशांग सूत्र में भी नियतिवाद की चर्चा है। गोशालक की सम्प्रदाय आजीवक सम्प्रदाय के नाम से प्रसिद्ध है, किन्तु वर्तमान में यह अस्तित्व में नहीं है। नियतिवाद का मन्तव्य है कि जो जब, जैसा और जिससे होना होता है; वह तब, वैसा और उससे ही होता है। नियति के स्वरूप को प्रतिपादित करने वाला एक श्लोक सूत्रकृतांग और प्रश्नव्याकरण की टीका, सन्मतितर्क, शास्त्रवार्तासमुच्चय और लोकतत्त्वनिर्णय आदि दार्शनिक ग्रन्थों में उद्धृत है, जो इस प्रकार है-

प्राप्तव्यो नियतिबलाश्रयेण योऽर्थः सोऽवश्यं भवति नृणां शुभोऽशुभो वा।
भूतानां महति कृतेऽपि हि प्रयत्ने नाभाव्यं भवति न भाविनोऽस्ति नाशः।।

अर्थात् जो पदार्थ नियति के बल के आश्रय से प्राप्तव्य होता है, वह शुभ या अशुभ पदार्थ मनुष्यों को अवश्य प्राप्त होता है। प्राणियों के द्वारा महान् प्रयत्न करने पर भी अभाव्य कभी नहीं होता और भावी का कभी नाश नहीं होता है।

नियतिवाद का कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है, किन्तु इस सिद्धान्त का प्रभाव भारतीय वाङ्मय के विभिन्न ग्रन्थों में दृग्गोचर होता है। आगम, त्रिपिटक, उपनिषद्, पुराण, संस्कृत महाकाव्य एवं नाटकों में भी नियति के प्रतिपादक उल्लेख उपलब्ध होते हैं।

जैनदर्शन के विभिन्न ग्रन्थों में नियतिवाद का निरूपण हुआ है, जिससे नियतिवाद की विभिन्न विशेषताएँ पूर्वपक्ष के रूप में प्रकाश में आई हैं।

नियतिवादी के प्रमुख तर्क-

1. सुख-दुःख की प्राप्ति अपने या दूसरे के निमित्त से नहीं, अपितु नियति के कारण से होती है। संसार में त्रस व स्थावर प्राणी हैं, वे सब नियति के प्रभाव से ही औदारिक आदि शरीर को प्राप्त करते हैं। ये नियति के कारण ही बाल्य, युवा और वृद्धावस्था को प्राप्त होते हैं। *-सूत्रकृतांग, पौण्डरिक अध्ययन*

2. नियति एक पृथक् तत्त्व है, जिसके वश में सभी भाव हैं और वे नियत रूप से ही उत्पन्न होते हैं। जो, जब, जिससे होना होता है वह तब उससे ही नियत रूप से प्राप्त होता है। ऐसा नहीं मानने पर कार्य-कारण व्यवस्था और प्रतिनियत व्यवस्था संभव नहीं है।

-नन्दीसूत्र की अवचूरि

3. हरिभद्रसूरि कहते हैं कि नियतिजन्यता प्रत्येक वस्तु का साधारण धर्म है। सभी पदार्थ नियति से उत्पन्न होते हैं- "नियतेनैव रूपेण सर्वे भावा भवन्ति।"
4. एक ही नियति से द्रव्य, क्षेत्र, काल एवं भाव की अपेक्षा से विभिन्न स्वरूप प्रकट होते हैं। अपेक्षा से वह द्रव्य-नियति, क्षेत्र-नियति, काल-नियति और भाव-नियति से जानी जा सकती है।

जैनदर्शन के अनुसार एकान्त नियति की कारणता का खण्डन

1. नियति को स्वीकार करने पर शास्त्रोपदेश की व्यर्थता एवं शुभाशुभ क्रिया-फल के नियम का अभाव सिद्ध होता है।
2. ज्ञान को उत्पन्न करने वाली नियति अज्ञान को उत्पन्न नहीं कर सकती।
3. नियति के अतिरिक्त कारण को अंगीकृत किये बिना जगत् की विचित्रता सम्भव नहीं है।
4. नियति के सर्वात्मक होने से सदैव सब वस्तुएँ सब आकार वाली हो जायेंगी तथा उनमें पूर्व, पश्चात् और युगपद् का व्यवहार संभव नहीं होगा।

नियति की एकान्त कारणता का खण्डन स्वयं भगवान् महावीर ने किया, जिसका वर्णन उपासकदशांग सूत्र में नियतिवादी आजीवक मत के उपासक सकडालपुत्र का भगवान् के साथ हुए संवाद में प्राप्त होता है। इस संवाद में नियतिवाद को अव्यावहारिक एवं असत्य बताया गया है तथा उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, पुरुषार्थ, पराक्रम आदि के महत्त्व का स्थापन किया गया है। सर्व भावों को नियत मानने का उन्होंने निरसन किया है। भगवान महावीर के बाद के आचार्यों ने भी नियतिवाद का निरूपण कर उसका खण्डन किया है। सूत्रकृतांग में नियतिवाद का सांकेतिक निरूपण हुआ है। टीकाकार शीलांकाचार्य ने सूत्रकृतांग की गाथा में आए 'संगइअं' पद का अर्थ नियतिकृत स्वीकार किया है- "नियतिकृतं सांगतिकमित्युच्यते" जिस जीव को जिस समय जहाँ जिस प्रकार के सुख-दुःख को अनुभव करना होता है, वह संगति कहलाती है। यह संगति ही नियति है। प्राणियों के सुख-दुःख आदि उनके उद्योग द्वारा किए हुए नहीं, किन्तु उनकी नियति द्वारा किए हुए होते हैं, इसलिए वे सांगतिक कहलाते हैं। नियतिवाद का निरसन करते हुए सूत्रकृतांग में नियतिवादी

को बुद्धिहीन बताया है। आगम का मन्तव्य है कि पूर्वकृत कर्म एवं पुरुषार्थ भी व्यक्ति के सुख-दु:ख में हेतु होते हैं। टीकाकार शीलांकाचार्य के मतानुसार सुख-दु:ख आदि कथंचित् नियति से होते हैं अर्थात् उनमें पूर्वकृत कर्म कारण होता है। कथंचित् वे अनियतिकृत भी होते हैं, क्योंकि उनमें काल, स्वभाव, पुरुषकार आदि की अपेक्षा होती है। यदि नियतिवाद को स्वीकार किया जाए तो परलोक के लिए की गई क्रियाएँ व्यर्थ हो जायेंगी। पुरुषार्थ को व्यर्थ नहीं माना जा सकता। नियति स्वत: नियन्त्रित है या किसी अन्य से नियन्त्रित है, इस प्रकार का प्रश्न उठाकर नियतिवाद को अप्रामाणिक ठहराया गया है।

जैनदर्शन में नियति की कथंचित् स्वीकृति

जैनदर्शन में नियति की कथंचित् कारणता स्वीकार की गई है। काल लब्धि के रूप में 'कालनियति' को मान्य किया गया है, क्योंकि उसी काल में होना, अन्य काल में न होना नियति का ही एक रूप है। कहा गया है- ''देशनाकाललब्ध्यादिबाह्यकारणसंपदि'' सम्यक्त्व और मोक्ष सभी काललब्धि की अपेक्षा रखते हैं।

सर्वज्ञता की अवधारणा में भी कथंचित् नियति की कारणता स्वीकृत हुई है, क्योंकि सर्वज्ञ समस्त द्रव्यों और उनकी समस्त पर्यायों को जानता है इसलिए उनके ज्ञान में जानी गई अवस्थाएँ, घटनाएँ या कार्य नियत होते हैं। यही नहीं उनके ज्ञान में विभिन्न जीवों के भावों या परिणामों के आधार पर भावी गतियों या जीवन की भावी घटनाओं को भी जान लिया जाता है।

परिणमनशील जगत् की परिणमन व्यवस्था 'क्रमनियमित' है। जगत् में जो भी परिणमन निरन्तर हो रहा है, वह सब एक निश्चित क्रम में व्यवस्थित रूप से हो रहा है। स्थूलदृष्टि से देखने पर जो परिणमन अव्यवस्थित दिखाई देता है, गहराई से विचार करने पर उसमें भी एक सुव्यवस्थित व्यवस्था नज़र आती है। इस प्रकार पर्याय की क्रमबद्धता नियति की कोटि में गृहीत की जाती है। **(क्रमश:)**

-अतिथि अध्यापक, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)

बाल-अभिमत

'जिनवाणी' में ऐसी नई-नई प्रेरणादायक कहानियाँ आती हैं, जिससे हमें अच्छे संस्कार मिलते हैं, और हम साधु-साध्वी के पास जाकर धर्म-ध्यान की ओर प्रेरित होते हैं।

-सुश्री मीनू बोहरा (बाल-स्तम्भ जून-2013 प्रतियोगिता की प्रतिभागी),
सुपुत्री श्री गौतमचन्द जी बोहरा, 26, फतहनगर कॉलोनी, ब्यावर (राज.)

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः82)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

श्री धर्मचन्द जैन

(गमा का थोकड़ा-5)

जिज्ञासा- पृथ्वी, पानी, वनस्पति के द्वारों में कितने जीव आते हैं?

समाधान- पृथ्वी, पानी, वनस्पति इन तीन घरों में 26 जीव आते हैं- 14 वैक्रिय के तथा 12 औदारिक के।

वैक्रिय के 14 जीवों में 10 भवनपति, 1 वाणव्यन्तर, 1 ज्योतिषी, 1 पहला देवलोक तथा 1 दूसरा देवलोक सम्मिलित है। औदारिक के 12 जीवों में पाँच स्थावर, 3 विकलेन्द्रिय, 1 असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, 1 संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, 1 संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी मनुष्य शामिल है।

दूसरे शब्दों में ऐसा भी कहा जा सकता है कि औदारिक के कुल 14 जीव के भेदों में से 2 युगलिक के भेद (असंख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी तिर्यंच तथा असंख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी मनुष्य) को छोड़कर शेष 12 औदारिक के जीव पृथ्वी, पानी, वनस्पति के घरों में आते हैं।

जिज्ञासा- तेऊ तथा वायु इन दो स्थावर के घरों में कितने जीव आते हैं?

समाधान- तेऊ तथा वायुकाय के घरों में 12 औदारिक के जीव आते हैं। पृथ्वी, पानी, वनस्पति में आने वाले औदारिक के वे ही 12 जीव तेऊ, वायु में भी आते हैं।

जिज्ञासा- पृथ्वी, पानी, वनस्पति के जीवों की क्या-क्या प्रमुख विशेषताएँ हैं?

समाधान- पृथ्वी, पानी, वनस्पति के जीवों की प्रमुख विशेषताएँ निम्नांकित हैं-

1. इन तीनों में सूक्ष्म व बादर दोनों प्रकार के जीव होते हैं। इन दोनों में भी अपर्याप्त तथा पर्याप्त दोनों प्रकार के नाम कर्म के उदय वाले जीव मिलते हैं।

2. वैक्रिय के 14 जीव जो इन तीन स्थावरों में आते हैं, वे सभी पर्याप्त

नामकर्म के उदय वाले होते हैं। अर्थात् देवगति से आये हुए जीव अपर्याप्त अवस्था में काल नहीं करते। पर्याप्त बनते ही हैं।

3. केवली की आगति में तीनों स्थावर शामिल होने के कारण इनमें अनेक जीव आगामी भव में साधु बनने वाले, क्षपक श्रेणि करने वाले तथा मोक्ष प्राप्त करने वाले भी होते हैं।

4. सभी सूक्ष्म नाम कर्म के उदय वाले सूक्ष्म जीव सम्पूर्ण लोक में ठसाठस भरे हैं तथा बादर नामकर्म के उदय वाले बादर जीव लोक के एक हिस्से में, अनेक हिस्सों में होते हैं।

5. बादर पृथ्वी, पानी, वनस्पति में तेजोलेश्या भी होती है। यह तेजोलेश्या ऐसे लब्धि पर्याप्त जीवों में होती है, जो वैक्रिय के 14 घरों से आये हैं। इनमें भी सभी जीवों में न होकर केवल उन्हीं जीवों में होती है जो तेजोलेश्या में काल करके पृथ्वी, पानी, वनस्पति में आकर उत्पन्न हुए हैं। यह तेजो लेश्या शरीर पर्याप्ति पूर्ण करने से पहले ही समाप्त हो जाती है।

6. औदारिक के 12 जीव जो पृथ्वी, पानी, वनस्पति में आते हैं, उनमें पृथ्वी, पानी, वनस्पति में तेजोलेश्या नहीं पाई जाती, क्योंकि तिर्यंच-मनुष्य तेजोलेश्या में रहते पृथ्वी, पानी, वनस्पति का आयुष्य बन्ध नहीं करते हैं और जब आयुष्य ही नहीं बान्धते तो फिर पृथ्वी, पानी, वनस्पति में तेजो लेश्या में कैसे आ सकते हैं? अर्थात् नहीं आते। यह सामान्य नियम है कि जीव जिस लेश्या में आयु बन्ध करता है, उसी लेश्या में मरण को प्राप्त होता है तथा उसी लेश्या में अगले भव में जन्म लेता है।

जिज्ञासा– तेऊ, वायु के जीवों की क्या-क्या प्रमुख विशेषताएँ हैं?

समाधान– तेऊ, वायु के जीवों की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

1. तेऊ, वायु के जीव गति स्वभाव वाले होने के कारण, इन्हें गति त्रस भी कहा जाता है।

2. तेऊ, वायु से निकले जीव अगले एक भव में मिथ्यादृष्टि ही रहते हैं। सम्यक्त्व प्राप्त नहीं कर पाते।

3. तेऊ, वायु में संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी मनुष्य तथा असन्नी मनुष्य दोनों ही आकर उत्पन्न हो सकते हैं, किन्तु तेऊ, वायु के जीव

आगामी भव में मनुष्य के घर में उत्पन्न नहीं हो सकते।

4. तेऊ, वायु जीवों में कृष्ण, नील, कापोत ये तीन लेश्याएँ ही मिलती हैं, किन्तु तेजो लेश्या नहीं मिल सकती, क्योंकि वैक्रिय के घरों के देवता तेऊ, वायु में आकर उत्पन्न ही नहीं होते हैं।

5. नीच गोत्र का बन्ध, नीच गोत्र का उदय तथा नीच गोत्र की सत्ता यह भंग मात्र तेऊ, बायु के जीवों में ही मिलता है।

जिज्ञासा– तीन विकलेन्द्रिय में कितने जीव आते हैं?

समाधान– तेऊ, वायु के समान तीन विकलेन्द्रिय में भी औदारिक के वे ही 12 जीव आते हैं।

जिज्ञासा– तीन विकलेन्द्रिय जीवों की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?

समाधान– तीन विकलेन्द्रिय जीवों की प्रमुख विशेषताएँ निम्नांकित हैं–

1. तीन विकलेन्द्रिय के अपर्याप्त अवस्था में सास्वादन समकित हो सकती है। यह सास्वादन समकित ऐसे जीवों में होती है जो पिछले भव में सामान्य मनुष्य-तिर्यंच हो, वहाँ उपशम समकित प्राप्त करें, नीचे गिरते सास्वादन में आ जाये और आयु पूर्ण हो जाने से सास्वादन समकित में ही काल करके तीन विकलेन्द्रिय में आकर उत्पन्न हो जायें। ऐसे जीवों में शरीर पर्याप्ति के पहले-पहले ही वह समकित वापस चली जाती है, 6 आवलिका की स्थिति पूर्ण हो जाने पर वे जीव मिथ्यात्वी बन जाते हैं।

2. विकलेन्द्रिय में तेजो लेश्या नहीं पाई जाती है।

3. विकलेन्द्रिय में प्रति समय जीव नहीं उपजते, जब विरह पड़ता है तो विरह काल अन्तर्मुहूर्त में कोई भी जीव उत्पन्न नहीं होते, किन्तु पहले उत्पन्न हुए जीवों में कोई न कोई जीव अपर्याप्त अवस्था में मिलते ही हैं।

4. विकलेन्द्रिय जीवों का उत्पत्ति का विरह काल छोटा अन्तर्मुहूर्त है, जबकि अपर्याप्त अवस्था का काल, विरह की अपेक्षा बड़ा अन्तर्मुहूर्त है, यही कारण है कि विकलेन्द्रिय के अपर्याप्त जीव भी शाश्वत माने गये हैं।

5. तीन विकलेन्द्रिय से निकला जीव अगले भव में मनुष्य, सम्यग्दृष्टि, श्रावक एवं साधु बन सकता है, किन्तु वह क्षपक श्रेणि नहीं चढ़ सकता, केवली नहीं हो सकता, मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता।

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

श्रद्धार्पण

आगमादर्श मेरे आराध्य देव!(2)*

महासती श्री यशप्रभा जी म.सा.

आचार को ग्रहण करने वाले
उसके अनुसार क्रिया करने वाले
''से एवं आया'' आचार धर्म की
उत्कृष्ट परिपालना करने वाले **आप**
सूत्रकृतांग सूत्र का प्रत्येक सूत्र हो-
सप्तभंगी और स्याद्वाद से परिपूर्ण
आपकी वाणी
क्रियावादियों को निष्क्रिय बनाती है
अक्रियावादियों का अहंकार गलाती है
विनयवादियों को गुण और दोष का भेद बताती है और
अज्ञानवादियों के अज्ञान को दूर भगाती है
क्योंकि
''से पण्णया अक्खय सागरे वा''
अक्षय सागर के समान
अथाह आपकी श्रुतमयी प्रज्ञा
अनुभवों का आगम है जो
बहुश्रुतता, परिचित श्रुतता
विचित्र श्रुतता और घोष विशुद्धि कारकता रूप
चारों प्रकार की श्रुत संपदा से संपन्न है,
कार्य उत्पन्न होने पर
तत्काल निर्णय देने वाली चिंतनमयी प्रज्ञा
आपकी स्वाध्याय रमणता की देन है जो
साधकों को साधना के नये-नये आयाम देती है,

* पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा-अर्द्धशती वर्ष पर महासतीवर्या द्वारा अभिव्यक्त भावों का कृत संकलन।

ध्यान की परकाष्ठा पर पहुँची हुई
आपकी अनुभवमयी प्रज्ञा को
अभिव्यक्त करना संभव ही नहीं है
कितनी विलक्षण है आपकी अनुभवमयी प्रज्ञा
जब आप अपनी साधना में गहरे उतरते हो तो
स्वयं कुछ पा लेते हो और जब
ध्यान साधना से बाहर आते हो तो
आपको देखने वाला बहुत कुछ पा जाता है
श्रुतमयी प्रज्ञा भले ही आपका प्रभाव है
पर अनुभवमयी प्रज्ञा आपका स्वभाव है
जिसमें
विकारों का बहिष्कार है
विचारों का परिष्कार है एवं
वीतरागता का साक्षात्कार है
इस तरह आभ्यन्तर तप से अपनी आत्मा को तपाकर
आप स्थितप्रज्ञ बन गए,
न सुख आपको मूर्च्छित करता है और
न दुःख व्यथित करता है
आत्मानन्द के मानसरोवर में रमण करने वाले आप
स्थानांग का प्रत्येक स्थान हो-
आपके जीवन में
आत्म एकत्व की अनुभूति है
ज्ञाता-द्रष्टा भाव का द्वित्व है
सरलता-सजगता-सहिष्णुता की त्रिपुटी है
ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप की चतुराई है
पंचशील की पालना है
छः काया की यतना है
सप्तभयों से मुक्ति है
अष्टगुणों की युक्ति है

ब्रह्मचर्य की नवनिधि है
दस यति धर्मों की सम्यक् विधि है
आपका जीवन
संख्या के गणित पर नहीं श्रद्धा के गणित पर चलता है
उम्र के गणित पर नहीं अनुभव के गणित पर चलता है
अपने चेहरे की परिपक्व रेखाओं में आपने
दुनिया भर का अनुभव समेट लिया है
आपकी इस गणना के सामने
ज्योतिषी की गणना भी नाकाम हो जाती है
क्योंकि
ज्योतिषी की गणना तो मात्र
साधकों का भविष्य बताती है, पर
आपकी गणना
साधकों का भविष्य बनाती भी है।
इस तरह
गुणों के निर्दोष आचरण से
अपने जीवन को
संख्यात्मक ही नहीं गुणात्मक भी बनाने वाले **आप**
समवायांग सूत्र का प्रत्येक समवाय हो
समता केवल आपके वचन में ही नहीं
मन की मौन भाषा में भी परिलक्षित है
तन में ही नहीं
जीवन से भी मुखरित है
जो समता मात्र वचन से ही अभिव्यक्त होती है
वह दुनिया को लुभाने की होती है
जो समता मात्र तन से प्रकट होती है
वह दुनियाँ को दिखाने की होती है
जो समता मात्र मन से होती है
वह व्यक्तित्व को सजाने की होती है, लेकिन

जो समता आत्मा से प्रकट होती है
वह भवों को घटाने वाली होती है
आत्मा के प्रदेश-प्रदेश में
उस समता को रमा कर आप
"**समत्तदंसी**" बन गये
"**सम्मभूयाइं पासओ**" आपका जीवन मंत्र बन गया है
आपके आचरण में
आयतुला पयासु प्रतिबिंबित है
आपकी यतना में
समो य सव्वभूएसु प्रतिध्वनित है
आपके प्रवचनों में
समियाए धम्मे आरिएहिं पवेइए गुंजित है
आपके अंतःकरण में
समयाए समणो होइ की देशना झंकृत है
इस प्रकार अपनी समग्र साधना को
समता का पर्याय बना जीभ से नहीं जीवन से
समो णिंदा पसंसासु का संदेश प्रचारित करने वाले **आप**
व्याख्याप्रज्ञप्ति की प्रत्येक व्याख्या हो-
शास्त्र और साहित्य तो
केवल दृष्टि देते हैं, गति नहीं
पर आपके व्याख्यान तो हमें
गति की मति और शक्ति भी देते हैं
क्योंकि इसमें
स्व-स्वरूप के दर्शन हैं
शाश्वत सत्य का श्रवण है
शुभभावों की सुवास है
श्रुतवाणी का रसपान है और
शुद्ध समकित का स्पर्शन है
इस व्याख्याप्रज्ञप्ति का

अथ आत्मानुभूति है तो
इति आनंदानुभूति है, जिससे हमारा
ज्ञान जागृत होता है
दर्शन परिष्कृत होता है
चारित्र व्यवस्थित होता है और
तप अंगीकृत होता है
त्याग और वैराग्य से परिपूर्ण आपकी वाणी में
केवल शब्दों का शृंगार ही नहीं
जीवन की यथार्थता का आख्यान भी है
जिसे सुनकर
हमारी पाँचों इन्द्रियाँ
इस हद तक तृप्त हो जाती हैं कि
बाहर के विषयों की इच्छा ही शेष नहीं रहती

(क्रमशः)

स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता

जिनवाणी के इस अंक में प्रकाशित 'स्वास्थ्य-विज्ञान' स्तम्भ पर कुछ प्रश्न दिए जा रहे हैं, आप इनका उत्तर 15 सितम्बर 2013 तक श्री चंचलमल जी चोरडिया के 'स्वास्थ्य-आलेख' में अंकित पते पर अपने फोन नं., ई-मेल एवं पते सहित सीधे प्रेषित कर सकते हैं। इस प्रतियोगिता में किसी भी वय का व्यक्ति भाग ले सकता है। सर्वाधिक अंक प्राप्तकर्ताओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार के अन्तर्गत 1000/-, 750/- एवं 500/- की राशि प्रेषित की जाएगी।

1. आँख की रुग्णता के पाँच कारण बताइये।
2. प्राप्त वस्तु का दुरुपयोग करने पर कर्मसिद्धान्त के अनुसार क्या परिणाम मिलता है?
3. क्या आधुनिक विज्ञान 'भाव चक्षु-इन्द्रिय' का इलाज कर सकता है? यदि कोई विधि हो तो बताएँ।
4. दूर और नजदीक की दृष्टि कमजोर क्यों होती है?
5. आपके दादाजी मोतियाबिम्ब से ग्रसित हैं, आप उनको क्या इलाज बतायेंगे?
6. नेत्र-ज्योति अच्छी करने के कौनसे चार उपाय आपको ज्यादा ठीक लगते हैं और क्यों?
7. स्वास्थ्य आलेख पढ़कर क्या आपने उन विधियों से इलाज किया है? यदि हाँ, तो वह विधि किस प्रकार प्रभावकारी रही?

गुण-प्रेक्षण

आगमचक्षु संघनायक (2)*

महासती श्री पद्मप्रभा जी म.सा.

दूसरे अंग सूत्रकृतांग में
प्रभु महावीर की संस्तुति
श्रद्धा विनय समर्पण की
असामान्य अनन्यतम त्रिपुटी
जंबू स्वामी की पृच्छा
आर्य सुधर्मा की उपकृति
गुरु-शिष्य की परंपरा
अविच्छिन्न श्रमण संस्कृति
विनीत स्वर,
अंजलिबद्ध कर,
पुच्छिंस्सु णं समणा माहणा य......
रात्रि स्वप्न में अवतरित हुई
एक सौम्य मुखाकृति,
होठों पर थी जिज्ञासा
हृदय में असीम श्रद्धा-भक्ति,
कैसे हैं गुरुदेव हीरा?
बताइये ना श्री महासती?
हृदय से सुनूँगा मैं
हृदय की अनुभूति,
श्रद्धा संयुत स्वर
हो रहे थे मुखर
कहं च णाणं, कहं दंसणं से.....
उनकी सद्गुण सुधा का
रसास्वादन करने के लिए,
मेरी रसना
चित्त में जाकर तलफ रही है,
आँखें उनके यथार्थ स्वरूप के
अभिज्ञान के लिए
बिलख रही हैं,
कर्णेन्द्रिय संजोकर बैठा हूँ,
वीतराग संगीत सुनने........
अरे! अरे!!
यह क्या
त्वरा कीजिए महासती!
रुकिए नहीं, सोचिए नहीं
विलम्ब नहीं, अविलम्ब
मेरी पिपासा को
शांत कीजिए,
सतीवर!
देर नहीं अब दया कीजिए,
कृपा सागर, कृपा कीजिए,
भावों की अभिव्यक्ति दीजिए,
प्रार्थना मेरी स्वीकार कीजिए।
तृषित हूँ प्यास लगी है,
नीर की आस जगी है,
सद्गुणों का नीर पिलाकर

* पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा-अर्द्धशती वर्ष पर महासतीप्रवरा द्वारा अभिव्यक्त भावों का संकलित रूप।

प्यास मेरी शांत कीजिए।
नति की तति
श्री चरणों में विनति
विधियुक्त प्रणति
करिए भावों की प्रस्तुति.....
जिज्ञासु....
बड़ी असमंजस की है मेरी स्थिति,
कैसे दूँ मैं,
अंतरंग भावों की अभिव्यक्ति
दिग्दिगंत में फैल रही
जिनके तप-संयम की विश्रुति,
क्या संभव है कर पाना
उनके असाधारण गुणों की स्तुति?
जो स्वयं उपमित है,
उनको उपमा क्या दूँ?
जिनका नाम सर्वविदित है,
उनका वर्णन क्या करुँ?
जिनका व्यक्तित्व अपरिमित है,
उन्हें सीमा में कैसे बाँधू?
जिनके सद्गुण अगणित हैं,
उनके गुणगान कैसे करूँ?
जिज्ञासु!
तुम्ही बताओ
जो स्वयं प्रकाशपुंज हैं,
जो सूर्य से आलोकित हैं,
तेजरूप हैं,
भला मैं क्या उनके जीवन पर
प्रकाश डालूँ?
जो सर्वस्तुत्य हैं,
क्या मैं उनकी स्तुति करूँ?
जिज्ञासु!
ऐसा स्थैर्य, बल, बुद्धि,
छंद, प्रयोग, अलंकार कहाँ से लाऊँ
कि, जिसमें इस अलौकिक
व्यक्तित्व को गाऊँ?
उनका जीवन हर नये
रचनाकार, कवि, लेखक को
सांत्वना का अद्भुत पुरस्कार
देता नज़र आता है।
प्रतिक्षण अनन्त गुणा
विस्तरित होता हुआ दिखाई पड़ता है।
और......फिर......
मेरी लेखनी में वो सामर्थ्य कहाँ
कि, जो गुरुवर के लिए
गुरुतर शब्द संजो दे?
महासती!
क्या आपने आगम नहीं पढ़े?
क्या आप नहीं जानती कि,
स्तव स्तुति से,
ज्ञान-दर्शन-चारित्र रूप
बोधिलाभ की प्राप्ति होती है।
चतुर्विंशति स्तव से,
दर्शन की विशुद्धि होती है।
और,
वर्णसंज्वलनता अर्थात्
यथायोग्य संयमपालक
गुरु के प्रशस्त गुणों का
संकीर्तन करना, यह शिष्य का

परम पुनीत कर्त्तव्य है।
कृपासिंधु! अपने
दायित्व का निर्वहन कीजिए।
सुनो! सुनो!!
जिज्ञासु,
मैं कर्त्तव्य विमुख नहीं
हाँ, किंकर्त्तव्य विमूढ अवश्य हूँ,
कृतघ्न नहीं, पर कृतज्ञ हूँ,
जिन्होंने मेरे संयम के
हरपल को निखारा/संवारा
उन्हीं के संयम-जीवन के
गुणग्राम का यह सुअवसर है
मैं, इस अवसर को
चूकना नहीं चाहती।
जिज्ञासु.......
मैं हूँ एक नन्हीं-सी किरण
और वे हैं,
श्रुतज्ञान के अलौकिक महासूर्य।
किरण का कर्त्तव्य है,
सूर्य नमन, स्मरण, पूजन, अर्चन
मैं उसी महासूर्य को,
सहस्रकिरण को
शब्दों के फूलों से,
भावों के चंदन से,
मन की पीठिका पर,
अनुभवों के जल से
अभिषिक्त कर रही हूँ।
मेरा यह सिंचन
शब्दों से नहीं, श्रद्धा से भरा है
अक्षरों से नहीं, आस्था से भरा है।
लो! मेरी लेखनी अब
उनके जीवन के हर पल का
साक्ष्य प्रस्तुत करने को उद्यत है।
जिज्ञासु!
उनका जीवन इतना अधिक
सजीव और जीवन्त है,
उर्वर और अभिराम है कि,
वे क्या हैं और क्या नहीं
जब इसकी प्रशस्ति लिखने बैठती हूँ,
तो शब्द स्वयं व्याख्या
करने बैठ जाते हैं,
और तब.....
सचमुच! वे मुझे व्याख्याप्रज्ञप्ति
नज़र आते हैं।
उनका व्यक्तित्व,
शास्त्रीय संदर्भों की
समीक्षात्मक व्याख्या है।
उनके जीवन के जिस भी पहलू की
व्याख्या करें तो,
आचारांग, सूत्रकृतांग, भगवती
के आदर्श स्वयं स्पष्ट होते जाते हैं।
वस्तुतः उनका समग्र जीवन ही
आगम और आचार का जीवन्त
स्वरूप है।
जिज्ञासु.....
उनकी प्रज्ञा में कहीं भी
प्रमाद नहीं है।
मैंने उन्हें कभी अलसाते, मुरझाते

सुस्त नयनों में नहीं देखा।
वे हमेशा प्रसन्नता के
फूल खिलाते रहते हैं।
कांटों से अलग-थलग
शांत सुधारस में भीगे रहते हैं।
उनकी अन्तरात्मा एक
राग और रागिनी बन चुकी है।
उनका जीवन
लयबद्ध बन चुका है।
वे सुर में जीते हैं
उनका सुर कभी नहीं टूटता।
सच कहूँ जिज्ञासु.....
गुरुदेव वो अनुपम हस्ती हैं
कि, जिनमें चतुर्थकाल के समस्त
संदर्भ साक्षात् होते हैं।
उन्होंने जिनशासन के
धवलवेश पर किसी भी प्रकार का,
प्रमत्त भाव का धब्बा
अपने अप्रमत्त भाव से
नहीं लगने दिया।
वे सतत जागृतभाव-आत्मबोधिभाव
से भरे रहते हैं।
और हमें भी इसी प्रकार
संयम साधना के लिए अपना
जीवन्त उपदेश दे रहे हैं।
सतीवर.....
मैं तो उनकी गुणगाथा की
महक से ही प्राणवान हो रहा हूँ,
पुलकित और आनंदित हो रहा हूँ,
और, आपने तो मेरी प्यास को
और अधिक बढ़ा दिया है।
जिज्ञासु!
तुम सही कह रहे हो।
गुरुदेव का जीवन ही
सद्गुणों का आयतन है,
और,
उनका संयम
अनेकानेक सद्गुणों से शोधित है,
और शोभित भी।
प्रथम दर्शन में ही
उनके चेहरे पर तैरते
नैसर्गिक हास्य में
मुझे श्रद्धा का विहंगम
सौंदर्य मिल गया।
उनकी संयम ऊर्जा में,
आँखों की हर रश्मि में
वरदान झलक रहा था,
कण-कण से कृपा महर का
भाव छलक रहा था।
मुझे इतना वात्सल्य,
इतनी कृपा पहली बार ही मिली।
वो सौभाग्य सूचक क्षण
उनके वरदानों का
अमृत कलश बन गया,
पलकों पर स्नेह तैर आया।

(क्रमशः)

समाज-चिन्तन

क्या जैन समाज ध्यान देगा?

डॉ. रश्मिभाई झवेरी

विश्व के प्रमुख धर्मों की गणना में जितनी ख्याति या विश्रुतता ईसाई धर्म, इस्लाम धर्म, बौद्ध धर्म, हिन्दू धर्म आदि की है, उतनी जैन धर्म की नहीं है। विश्व के अनेक तटस्थ विद्वानों का यह अभिमत है कि जैन धर्म अन्य धर्मों की तुलना में अधिक तर्कसंगत, वैज्ञानिक, सर्वकल्याणकारी और 'साम्प्रदायिक कट्टरता से मुक्त' है। फिर भी क्या कारण है कि जैन धर्म और भगवान महावीर के विषय में अनुपाततः बहुत कम जानकारी विश्व के लोगों तक पहुँचती है? आज के सूचना तकनीकी, इलेक्ट्रोनिक एवं प्रिण्ट मीडिया के युग में तो प्रौद्योगिकी द्वारा ऐसे सहज माध्यम उपलब्ध कराए गए हैं, जिनके द्वारा पूरे विश्व में जन-जन तक जैन धर्म एवं भगवान महावीर की विपुल जानकारी पहुँचाई जा सकती है। आज भगवान महावीर की वाणी, उनके अनुपम सिद्धान्तों एवं उनके अनुप्रयोगों (Applications) को विश्वजनहितार्थ अधिकाधिक व्यापक बनाया जा सकता है।

इस परिप्रेक्ष्य में गंभीर अनुचिन्तन की अपेक्षा है। इस दृष्टि से इस आलेख के माध्यम से सभी जैन आचार्यों, जैन विद्वानों, जैन संस्थाओं से सम्बद्ध पदाधिकारियों, उदारमना महानुभावों, जैन समाज के अग्रणियों आदि से एक विनम्र अपील की जा रही है कि वे निम्नलिखित कतिपय बातों पर ध्यान दें।

1. प्राथमिकता (Priority)

जैन समाज के विभिन्न सम्प्रदायों में जैन शासन की प्रभावना आदि की दृष्टि से अनेक भिन्न-भिन्न प्रवृत्तियाँ चल रही हैं। उन्हें अपनी-अपनी दृष्टि से आवश्यक मानकर चलाया जाता है। उन्हीं के साथ उपर्युक्त आवश्यकता को भी प्राथमिकता (Priority) देना जरूरी है। यदि 'जैन धर्म को विश्वव्यापी बनाने' की दिशा में जिन बातों की अपेक्षा है, उन्हें प्राथमिकता मिलती है और पूरा जैन समाज इस दिशा में सक्रियता से कदम उठाता है, तो संभवतः कोई कारण नहीं कि हम इस कार्य में सफल न हों।

2. संसाधन (Resources)

प्रस्तुत सुझाव की क्रियान्विति में दो प्रकार के संसाधन अपेक्षित हैं-

1. मानव-संसाधन
2. आर्थिक संसाधन, कुशल प्रबन्धन आदि।

पहले प्रकार के संसाधन में उन विद्वानों की आवश्यकता है (जिनमें साधु-साध्वियाँ भी हो सकती हैं, श्रावक-श्राविकाएँ या अन्य व्यक्ति भी) जिन्हें विशेष रूप से इस कार्य में जोड़ा जा सकता है या वे स्वयं अपने आपको इस कार्य में जोड़ें।

दूसरे प्रकार का संसाधन समाज-सापेक्ष है।

जैन समाज प्रथम प्रकार की संसाधन पूर्ति में कितना सक्षम है, यह गम्भीर आकलन का विषय है। वैसे तो जैन समाज में विद्वान साधु-साध्वियों, श्रावक-श्राविकाओं की कमी नहीं है और अन्य विद्वान् व्यक्तियों की भी कमी नहीं है। किन्तु इस कार्य के लिए ऐसे विद्वानों की जरूरत है जो जैन सिद्धान्त, जैन वाङ्मय आदि के मर्मज्ञ हों और अपनी मेधा एवं प्रतिभा के द्वारा उन्हें युगीन भाव, भाषा, शैली आदि में प्रस्तुति दे सकें।

दूसरे प्रकार के संसाधन की दृष्टि से भी जैन समाज समृद्ध है। वैसे तो पूरा आकलन करने से ही ज्ञात हो सकता है, पर सामान्य आधारों पर भी प्रतीत हो रहा है कि धार्मिक, सामाजिक, शैक्षिक आदि प्रवृत्तियों की दृष्टि से समाज विपुल मात्रा में संसाधनों को जुटाता है। किन्तु जहाँ तक प्रस्तुत विषय का सम्बन्ध है इस ओर समाज का इतना ध्यान नहीं है या इस विषय को तुलनात्मक रूप में अन्य प्रवृत्तियों की अपेक्षा उपेक्षित किया जा रहा है।

विद्वान् एवं शोध-संस्थान

(क) पिछली शताब्दी में जैन-विद्वानों एवं अन्य विद्वानों ने सामान्यतः जैन वाङ्मय का निर्माण करने की दिशा में प्रशंसनीय कार्य किया है। इनका प्रकाशन भी आधुनिक (वर्तमान युग में प्रचलित) भाषाओं (हिन्दी, अंग्रेजी आदि) में हुआ है। किन्तु अन्यान्य धर्मों के वाङ्मय की तुलना में यह स्वल्प है तथा आधुनिक विधाओं से इनका प्रचार-प्रसार तो और भी स्वल्प है। जब तक इस दिशा में प्रचुर प्रयत्न नहीं होगा, तब तक लक्ष्य-प्राप्ति संभव नहीं है। इतना ही नहीं, युग की रफ्तार को देखते हुए तो इस दिशा में होने वाले प्रयत्नों में अविलम्ब लगना होगा और स्वल्प समय में अधिकाधिक उपलब्धि कैसे हो, इसका प्रयत्न करना होगा।

(ख) पिछले छह-सात दशकों में इस दिशा में कार्य करने वाले कतिपय उच्च स्तरीय शोध-संस्थाओं की स्थापना भी जैन समाज के प्रयत्न से हुई और उनमें कार्य भी हो रहा है। किन्तु पहले तो इनकी संख्या भी बहुत अल्प है तथा ये संस्थान भी अपने आपमें छोटी-मोटी समस्याओं से घिरे रहते हैं। अपेक्षा है, ऐसी संस्थाओं की संख्या में अच्छी अभिवृद्धि हो तथा गुणवत्ता और कार्यकारिता की दृष्टि से भी इनका अच्छा विकास हो।

4. आवश्यक है व्यापक प्रचार-प्रसार

विद्वानों और शोध-संस्थाओं द्वारा जो कार्य निष्पन्न होता है, यदि उसका व्यापक प्रचार-प्रसार नहीं होगा तो किए हुए कार्य की निष्पत्ति सीमित ही रह जाएगी। आज देखने में आ रहा है कि अन्यान्य धर्म-सम्प्रदायों द्वारा विपुल मात्रा में साहित्य का प्रकाशन किया जा रहा है और उसके व्यापक प्रचार-प्रसार की भी पर्याप्त व्यवस्था एवं प्रबन्धन किया जा रहा है।

(क) वर्तमान युग में साहित्य को व्यावसायिक दक्षता के साथ जन-जन तक पहुँचाया जा रहा है। विपणन (Marketing) अपने आपमें एक दक्ष प्रबन्धन की अपेक्षा रखता है। जैन समाज के अनेक प्रकाशन संस्थान हैं, पर प्रायः दक्ष प्रबन्धन द्वारा विपणन न होने से, यह प्रकाशन केवल सीमित लोगों तक ही पहुँच पाता है। क्या जैन समाज में मार्केटिंग में दक्ष प्रबन्धकों की कमी है? यदि नहीं है तो, किस कारण जैन साहित्य व्यापक रूप में पूरे विश्व में उपलब्ध नहीं हो रहा है? जैन समाज को इस पर गंभीर चिन्तन कर जैन-साहित्य को विश्व-व्यापी बनाने के लिए निश्चित रूप से विशेष प्रयत्न करना होगा।

विश्व के सभी विश्वविद्यालयों, शैक्षिक संस्थाओं, सार्वजनिक पुस्तकालयों आदि में जहाँ अन्य लगभग सभी प्रमुख धर्मों का मौलिक साहित्य एवं उनके सिद्धान्तों की व्याख्या जन-भोग्य रूप में प्रस्तुत करने वाला साहित्य अनेक भाषाओं में उपलब्ध हो रहा है, वहाँ जैन धर्म का मौलिक वाङ्मय एवं अन्य व्याख्यात्मक साहित्य लगभग नगण्य रूप में ही मिलता है। यह बहुत ही पीड़ा-जनक स्थिति है।

(ख) साहित्य की उपलब्धि इण्टरनेट आदि पर भी व्यापक रूप में करवाना वर्तमान युग में महावीर की वाणी और सिद्धान्त को विश्व-व्यापी बनाने की दिशा में ठोस कदम होगा।

(ग) वर्तमान युग विज्ञापन एवं मीडिया का युग है। प्रायः देखा जाता है कि जैन साहित्य के मुद्रण, प्रकाशन (साज-सज्जा) आदि पर तो काफी अर्थ-व्यय किया जाता है, पर उसके व्यापक विज्ञापन आदि पर कम ध्यान दिया जाता है। अन्य धर्म के लोग संभवतः इस पर पूरा ध्यान देते हैं, जिससे उनका साहित्य व्यापक रूप में प्रसारित हो जाता है, जबकि जैन समाज अभी इस दिशा में काफी पीछे है, ऐसा लग रहा है। आज के विज्ञापन के युग में तो नकली माल भी लोग धड़ल्ले से बेच रहे हैं तो असली-सत्य मार्ग को यदि व्यापक रूप में विज्ञापित किया जाए, तो क्यों नहीं वह विश्व-मानस को प्रभावित कर पाएगा?

विज्ञापन की भांति ही प्रिण्ट मीडिया और इलेक्ट्रानिक मीडिया के माध्यम से आकर्षक प्रस्तुति भी आधुनिक युग का सशक्त साधन है। व्यापक प्रचार-प्रसार की अलग-अलग लक्ष्य-समूह के लिए अलग-अलग ढंग में प्रस्तुति हो तो वह और अधिक प्रभावपूर्ण बनती है। जैसे बच्चों के लिए कहानी, अभिनय, संगीत आदि के माध्यम से कथ्य की प्रस्तुति। मीडिया के अलावा यही सामग्री श्रव्य-दृश्य सीडी आदि के माध्यम से भी प्रस्तुत की जा सकती है तथा इसकी उपलब्धि भी साहित्य की भांति समुचित विपणन के साथ हो तो कोई कारण नहीं वह करोड़ों-करोड़ों लोगों तक न पहुँचे।

5. आगम-वाङ्मय

भगवान महावीर की वाणी आज आगम-वाङ्मय के रूप में उपलब्ध है। श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों जैन परम्पराओं में अपना-अपना जो भी आगम-साहित्य है, उसे उपर्युल्लिखित साधनों के द्वारा विश्व-व्यापी बनाने की आवश्यकता है। यह अपने आपमें एक बहुत विशाल कार्य है, जिसके लिए अपेक्षा है- उन विद्वानों को प्रेरित एवं प्रोत्साहित करने की जो इसके लिए सक्षम हैं। फिर एतदर्थ प्रचुर मात्रा में संसाधन तथा पर्याप्त मात्रा में व्यवस्था, प्रबन्धन, प्रचार-प्रसार, विपणन, विज्ञांपन आदि की जरूरत रहेगी।

इस दृष्टि से-

1. प्रतिभा-युक्त मेधावी विद्वानों को खोजना होगा। उन्हें पर्याप्त इन्सेण्टिव आदि देकर इस कार्य में नियोजित करना होगा। मूल भारतीय भाषाओं- हिन्दी, गुजराती आदि में साहित्य तैयार कर फिर उन्हें अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं में अच्छे अनुवादकों द्वारा भाषान्तर करवाकर व्यापक रूप में प्रचारित-प्रसारित करना होगा।
2. समाज के सक्षम, दक्ष, शिक्षित एवं कार्यक्षम व्यक्तियों को तैयार करना होगा जो इस योजना के साथ जुड़ें और व्यवस्था, प्रबन्धन, विपणन आदि को आधुनिक विधाओं के साथ सम्पादित कर सकें।
3. समाज में उदारमना भामाशाहों को प्रोत्साहित करना होगा, उन्हें 'आगम-वाणी' के माहात्म्य को समझाना होगा, इसकी निष्पत्तिस्वरूप होने वाली जैन शासन की प्रभावना का बोध कराना होगा आदि।

उपसंहार

यह इतना अधिक महत्त्वपूर्ण कार्य है कि आशा है जैन समाज के सभी दायित्वशील लोगों- आचार्यगण, विद्वद्गण, संस्थाओं के पदाधिकारीगण, उदारचेता अर्थाधिपतिगण,

सामाजिक नेतृगण, कार्यकर्तागण, शिक्षाविदों, साहित्यकारों, पत्रकारों- द्वारा इस पर ध्यान दिया जाएगा। समयबद्ध, सुनियोजित योजना के साथ पूरा जैन समाज इस दिशा में अविलम्ब प्रयत्नशील होगा, इस आशा और विश्वास के साथ- **जैनं जयतु शासनम्।**

विरोधाभास

श्री देवेन्द्रनाथ मोदी

(संकलित अंग्रेजी कविता 'पेराडोक्स' का हिन्दी अनुवाद)

हमारे भवन हैं ऊँचे से ऊँचे,
किन्तु हमारा स्वभाव चला गया नीचे से नीचे।
हमारे पास हैं बहुत बड़े-बड़े घर
लेकिन परिवार होते गए छोटे-से-छोटे,
जिनमें भी अपनापन है बेघर।
हमने सम्पत्तियाँ तो बढ़ा ली हैं कई गुना
परन्तु घटा लिए हैं अपने ही मूल्य,
आदर्श रह गया है अनसुना।
आमदनी तो खूब बढ़ाली है अपनी
पर नैतिकता है गई टूट
मात्रा का विस्तार तो कर लिया है अपार
परन्तु गुणवत्ता तो है गई खूट।
हमारी सड़कें तो बन गई हैं खूब चौड़ी
लेकिन दृष्टिकोण हो गए हैं बहुत संकड़े
जिनकी कीमत नहीं है दो कौड़ी।
जानकारी और ज्ञान तो बहुत है बढ़ा लिया
परन्तु निर्णय शक्ति है निरन्तर घट रही।
विशेषज्ञता तो हर क्षेत्र में है हो रही
किन्तु समस्याओं से धरती है फट रही।
अणु को विखंडित करते चले गए
पर खंडित नहीं कर पाए अपना ही राग-द्वेष।
यों हमने अन्तरिक्ष को है जीत लिया
पर जीत न पाए अपनों का ही अन्तर्हृदय।
ऐसा है यह अजीब समय
इंसान हो गया लम्बा और चरित्र बहुत छोटा
मुनाफों का लगा चौतरफा अम्बार
लेकिन सम्बन्धों का रूप हो गया बहुत खोटा।

-"हुकम", 5ए/1, सुभाषनगर, पालरोड़, जोधपुर-342008 (राज.)

युवा-स्तम्भ

तिरोहित होता जैनाचार

श्री पारसमल चण्डालिया

जैन समाज एक अत्यन्त गौरवशाली एवं यशस्वी समाज रहा है। इसके आचार, विचार, रीति रिवाज, परम्पराएँ तथा व्यवहार उच्च माने जाते हैं। लेकिन आज जब हम समाज की स्थिति देखते हैं तो बहुत ही दुःख होता है कि कहाँ वह प्राचीन प्रतिष्ठित सभ्य जैन समाज और कहाँ आज का पतन के गर्त की ओर बढ़ता जैन समाज? इस चारित्रिक पतन के पीछे क्या कारण हैं? यह विचार चिंतनीय है। चारित्रिक उत्थान के लिये सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है। हम स्वयं सुधरें और फिर दूसरों को प्रेरणा करें, तो आदर्श स्थापित किया जा सकता है।

जैन समाज में विवाह, जन्म-दिन आदि खुशी के प्रसंगों, पर्वों या धार्मिक अनुष्ठानों के अवसर पर सामूहिक भोज की परम्परा रही है। प्राचीन समय के सामूहिक भोजन और आजकल के सामूहिक भोजनों में रात-दिन का अंतर है। हम निम्न बातों पर चिंतन करते हुए अपनी प्रवृत्तियों में सुधार लायें और जन्म से नहीं कर्म से जैन बनने का प्रयास करेंः

1. रात्रि भोजन- अहिंसा धर्म की कसौटी है। इस कारण रात्रि भोजन निषेध की बात किसी न किसी रूप में विभिन्न ग्रंथों में मिलती है। जैन धर्म में तो रात्रि भोजन का पूर्ण निषेध है। यदि कोई सद्गृहस्थ रात्रि में भोजन न करता हो तो सहज कल्पना हो जाती है कि वह व्यक्ति जैन होना चाहिए। इस प्रकार रात्रि भोजन न करना जैनियों की आज एक पहचान बना हुआ है। जब ओसवाल समाज का उद्भव हुआ उस समय भी उनके लिये रात्रि में भोजन का त्याग आवश्यक मापदण्ड रखा गया था। परन्तु वर्तमान व्यवस्थाओं, परिस्थितियों तथा रात्रि भोजन के दुष्प्रभावों के गूढ़ रहस्य को न समझने के कारण जैन समाज में भी रात्रि भोजन का प्रचलन दिन प्रतिदिन बढ़ने लगा है, जिस पर समाज को चिंतन करना चाहिए। रात्रिभोजन आरोग्य के साथ वैज्ञानिक, आध्यात्मिक, सामाजिक एवं पारिवारिक दृष्टिकोण से अनुपयोगी है, हानिकारक है तथा प्रकृति के विरुद्ध है, अतः-

1. रात्रिकालीन सामूहिक भोजों का प्रचलन बंद करें। इसके लिये दिन में बारात, दिन में फेरे, दिन में भोजन का लक्ष्य रखें।
2. यदि सायंकाल को भोज होता है, तो सूर्यास्त से पूर्व ही भोजन की समुचित व्यवस्था करके समय निर्धारित किया जाय। रात्रि के प्रकाश के बारे में सूक्ष्म जीवों की उत्पत्ति

के संबंध में हमारी मिथ्या धारणायें हैं। जिसके फलस्वरूप रात्रि भोजन को आधुनिकता का प्रतीक समझने की भूल हो रही है। सोते हुए को जगाया जा रहा है, परन्तु जो जागृत व्यक्ति निद्रा का बहाना कर सोये, उनका जगना बड़ा मुश्किल है।

2. बफे भोजन और झूठा छोड़ना– जैन समाज में आजकल बैठकर जिमाने की परिपाटी प्रायः बंद सी हो गयी है। सामूहिक भोजन में Buffet भोजन का सिलसिला अन्य समाजों की देखा देखी जैन समाज में भी जोरों से चल पड़ा है। अतः चाहते हुए, न चाहते हुए भी इसी प्रणाली को स्वीकार करना पड़ रहा है। बफे भोजन शुरु करते समय लोगों के मन में यह भावना रही होगी कि इसमें समय, श्रम व भोजन की बचत होगी, जूठा नहीं जायेगा, परन्तु वर्तमान में ऐसा बहुत कम देखा जा रहा है। धार्मिक संस्कारों की कमी एवं विवेक के अभाव में बफे भोजन भी जूठा छोड़ना फैशन और आम बात हो गयी है। जबकि हमारे पूर्वज अन्न को देवता मान कर जूठा छोड़ना पाप समझते थे। कवि पारदर्शी के शब्दों में–

कभी न जूठा छोड़ना, रखना इसका ध्यान।
करे ''पारदर्शी'' नहीं, भोजन का अपमान।।

यही कारण है कि आज भी कई श्रावक-श्राविकाएँ भोजन में जूठा नहीं छोड़ने का नियम लेकर थाली धोकर पीते हैं। बैठकर जिमाते समय जो सामग्री जूठन बच जाती थी उसका विवेकपूर्वक उपयोग कर लिया जाता था, किन्तु आज महंगाई के युग में भी ढेर सारी भोज्य सामग्री प्लेटों में जूठन के रूप में छोड़कर हम गौरव का अनुभव कर रहे हैं? यह खाद्य सामग्री यूँ ही व्यर्थ गटरों में चली जाती है, सड़ती है और पर्यावरण प्रदूषित करने के साथ-साथ कई जीवों की हिंसा का कारण बनती है, अतः हम कहीं भी किसी भी समय भोजन के लिये जाएं, निम्न बातों का ध्यान रखें:-

1. भोजन के लिए प्लेट उठाते समय यह मानस बनालें कि- आज मुझे जूठा बिल्कुल नहीं छोड़ना है, द्रव्यों की मर्यादा कर लें- जितनी चीजें काम में लेनी है, उनकी संख्या तय कर लें और फिर अपनी रुचि के अनुसार थोड़ी-थोड़ी मात्रा में वे वस्तुएँ लें।
2. एक प्लेट में एक से ज्यादा व्यक्तियों के साथ भोजन नहीं लें, इससे जूठा छूटने की संभावना बढ़ती है।
3. आज व्यक्ति का भोजन के सम्बन्ध में जितना संयम रहना चाहिये उतना नहीं है। अतः भोजन करते समय विवेक रखें कि इस भोजन में बनायी गई सभी वस्तुएँ (आइटम) मेरे लिए ही नहीं बनायी गयी है, अतः सभी का टेस्ट लेना जरूरी नहीं है। स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए जो आवश्यक हो, वही थोड़ी मात्रा में लें।

4. सामूहिक भोज में भी घर की तरह ही भोजन करने का लक्ष्य रखें।
5. लंच और डिनर रोगों के मंच नहीं बन जायें, अतः जब चाहा, जो चाहा, जहाँ चाहा और जैसा चाहा पेट में डालकर पाचन शक्ति खराब नहीं करें।
6. एक साथ सभी चीजें प्लेट में नहीं लें। एक क्रम निश्चित कर लें। सब्जी थोड़ी ही लेने का लक्ष्य रखें।
7. प्लेट में आइटम लेकर काउंटर के पास खड़े नहीं रहें, ताकि दूसरों को असुविधा न हो।

3. जमीकंद प्रयोग– आजकल जैन समाज में जमीकंद का प्रयोग बढ़ता जा रहा है, जो कि उचित नहीं है। जैन धर्म एवं वैज्ञानिकों के अनुसार जमीकंद में अनंत जीव होते हैं। अतः इन जीवों को अभयदान देने की भावना रखें और सामूहिक भोजों में जमीकंद का प्रयोग बंद करें। कई ऐसी धर्मशालाएँ एवं भोजन स्थल हैं, जहाँ इनका प्रयोग प्रतिबंधित है। कई गाँवों में सामूहिक निर्णय लेकर इस पर अंकुश भी लगाया गया है। अतः स्थानीय स्तर पर प्रयास कर सामूहिक भोज में जमीकंद के प्रयोग को प्रतिबंधित करना आवश्यक है। सम्पूर्ण हरी का त्याग संभव न हो तो कम से कम पर्व तिथियों को तो हरी का त्याग रखने का लक्ष्य होना चाहिए।

4. फूलों का प्रयोग– विवाह आदि के अवसरों पर जैन समाज में फूलों का उपयोग बढ़ता जा रहा है। फूलों में संख्यात-असंख्यात-अनंत जीव भी हो सकते हैं, अतः सचित्त फूल पत्तों की माला या उनका सजावट में उपयोग नहीं करना चाहिए। इनके स्थान पर प्लास्टिक के फूल, बेल, प्रिन्टेड कपड़े आदि का उपयोग किया जा सकता है।

5. आडम्बर प्रदर्शन– दूसरों के देखादेखी जैन समाज में भी दहेज का दिखावा बढ़ रहा है। सगाई समारोह, रिंग सेरेमनी आदि के नाम पर धन का अपव्यय एवं प्रदर्शन उचित नहीं है। विद्युत डेकोरेशन में भी हजारों रुपये बर्बाद किये जाते हैं। बिजली की चकाचौंध में होने वाला खर्च व उनसे होने वाले जीवों के नाश से बचने के लिए दिन में ही विवाह आयोजित किये जायें। ऐसा करके सहज ही रात्रि भोजन का त्याग किया जा सकता है। हम जितना प्रदर्शन घटायेंगे उतनी जैनत्व की शोभा बढ़ेगी। ऐसा करने में अपना भी भला है और दूसरों का भी।

विवाह जैसे पवित्र बंधन पर लाखों करोड़ों का अपव्यय क्यों? क्यों रचते हैं हम आडम्बर युक्त विवाह, यह तो सिर्फ बड़े लोगों की शान है, पर इससे निम्न वर्ग परेशान है, इतनी फिजूल खर्ची में तो कई जैन परिवारों को पाला जा सकता है।

वर्तमान में सामाजिक संस्कृति दिन-ब-दिन बिगड़ती जा रही है। जैनियों के लिए यह

चिंतन का विषय है। उसमें सुधार लाने की आवश्यकता है। साधारण परिस्थिति के लोग बढ़ती हुई महंगाई में पिसते जा रहे हैं तो धनाढ्य कहलाने वाले और अनापशनाप खर्च करने वाले जैनियों की ओर भी कई लोग अंगुलियाँ उठा रहे हैं। हमारे पूर्वजों ने मनुष्य का सांसारिक जीवन सुखमय बना रहे, आपस में प्रेम संगठन बढ़े, इसके लिए वैवाहिक व्यवस्था बनाई। वैवाहिक कार्यक्रम सादगीपूर्वक संपन्न हो और वर्तमान में बढ़ रही दुष्प्रवृत्तियों पर अंकुश लगे, इसके लिए निम्न सुझावों पर चिंतन कर अमल में लाना आवश्यक है-

1. विवाह दिन में और जैन विधि से कराये जायं।
2. भोजन का आयोजन दिन में रखें।
3. सामूहिक विवाह का आयोजन दिन में संभव हो सके तो खर्च की बचत हो।
4. खाना दिन में बन सके, ऐसा प्रयास हो।
5. मैदा, पानी बिना छाना काम में न लें।
6. जूठा न डालें, इसके लिए कपडे के बैनर आदि लगावें।
7. भोजन में जमीकंद का उपयोग न करें।
8. भोजन में 12-15 आइटम से अधिक न रखें।
9. मंडप सादा हो, तड़क-भड़क से बचें।
10. पाँच सितारा या ऐसी होटलों में जहाँ शाकाहार एवं माँसाहार साथ-साथ पकता हो बारात नहीं उतारें।
11. सड़क पर नहीं नाचें।
12. आतिशबाजी का प्रयोग नहीं करें।
13. लाइट (विद्युत) का अपव्यय न हो। तेउकाय के जीवों को अभयदान मिले, ऐसा प्रयास हो।
14. सचित्त फूलों का उपयोग नहीं करें, वनस्पतिकाय के जीवों को अभयदान दें।
15. डांडिया राज एवं गीत-संगीत की महफिलें आयोजित नहीं करें।
16. आडम्बर एवं प्रदर्शन में सम्पत्ति का दुरुपयोग नहीं करते हुए, उसे साधर्मी सेवा एवं दान पुण्य में लगायें।
17. जल की एक बूँद में असंख्य जीव हैं ऐसा सोचकर व्यर्थ में पानी न गिरे, पानी का दुरुपयोग न हो-ऐसी व्यवस्था करें।

हमारा जैन समाज सक्षम है, धनाढ्य है, बुद्धिशाली है। जैन समाज की अपनी एक

छवि है। इस छवि में निखार लाने के लिए कुछ ऐसी सामाजिक व्यवस्थाओं की आवश्यकता है जो वर्तमान परिवेश में सही व खरी उतरे। इसके लिए हम सब जैन भाई मिल कर समाज की व्यवस्था में पूरी भागीदारी निभायें और एक दूसरे के सहयोगी बनें।

जागरूक साथियों, सक्रिय कार्यकर्त्ताओं और बुद्धिजीवियों से मेरा विनम्र आग्रह है कि समाज की वर्तमान परिस्थिति का आकलन करते हुए स्थानीय स्तर पर ऐसा संगठन बनायें, जो समाज में बढ़ती हुई कुरूढियों और कुरीतियों के विरोध में आवाज उठाये। आडम्बर प्रदर्शन पर रोक लगाये और एक अहिंसक क्रांति एवं विनम्र व्यवहार के साथ ऐसा वातावरण तैयार करे कि जैन समाज की गौरवशाली परम्परा सुरक्षित रह सके। स्थानीय स्तर पर ऐसा प्रयास कर हम दूसरों के सामने भी आदर्श स्थापित कर सकेंगे।

-7/14, उत्तरी नेहरु नगर, बिट्ठल बस्ती, बंगाली मिठाई के सामने, ब्यावर-305901 (राज.)

इतणो ही मैं चाहूँ

श्री पुखराज मोहनोत

भाया सुण लीजो, सब धर्मध्यान रो ठाट लगा दीजो।
बहना भी सुणजो, जप-तप, संवर-पौषध री थे लड़ियां जड़ दीजो।।

चौमासा रे च्यारूँ महीने, व्रत अर नियम में रहिजो।
दया, एकासन, उपवास, अठाई, मासखमण भी पचक्खिजो।।

बायां, भायां टाबर टोली, सगला हिल-मिल ने आईजो।
दिनभर थानक मांय रहीने, आतम री जोत जगाईजो।।

बखाण सुणजो, सुणने गुणजो, गुणने हिरदे धर लीजो।
सिंझारा परकूणो करने, सबसूं खम लीजो।।

गुरुहस्ती रो ध्यान धरीजो, पूज्य हीरा ने वर लीजो।
उपाध्याय पूज्य मान मुनि ने, नित-नित वन्दना कर लीजो।।

ज्ञान-ध्यान, तप-त्याग निराला, और कठा लग गुण गाऊँ।
बण्यो राखिजो ठाट सदा ही, बस इतणो ही मैं चाहूँ।।

-10/567, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर-342008 (राज.)

नारी-स्तम्भ

परिवार : जीवन-निर्माण का आधार

उपाध्याय श्री प्रवीणऋषि जी

मनुष्य का यह परम सौभाग्य है कि उसे परिवार मिला है। परिवार का सौभाग्य न इन्द्र को मिलता है और न ही तिर्यंच गति में यह व्यवस्था है। नरक गति में तो परिवार होने का सवाल ही नहीं है। परिवार जैसी पुनीत संस्था का वरदान केवल मनुष्य के पास है। देवता जैसे उत्पन्न होते हैं, वैसे ही जीते हैं। उन्हें कोई सँभालने वाला नहीं होता है। किसी को माँ कहकर पुकारने का सुख देवता को नहीं मिल सकता। कहीं डर लगने या भय की स्थिति पैदा हो जाने पर किसी को पिता कहकर पुकारने का सुख देवता को नसीब नहीं है। यह सुख यदि किसी को मिलता है तो केवल इंसान को मिलता है; और आज यही सुख भयावह संकट में है। जो सुख स्वर्गलोक में नहीं मिलता, वह सुख परिवार में मिलता है। जो दु:ख नरक में नहीं मिलता, वह दु:ख परिवार में मिलता है। अपने का दगा झेलने का दु:ख अत्यन्त कष्टकर होता है।

सनसनीखेज खबर

सालभर पहले अखबारों में एक सनसनीखेज खबर पढ़ी थी। आंध्रप्रदेश की घटना थी कि एक बेटे ने जिंदा माँ को श्मशान में पहुँचा दिया। श्मशान घाट पर जो परिचारक था, उसकी आँखे मुर्दों को जलाते-जलाते पथरा गयी थीं। उस दिन जिंदा माँ को जलाते हुए देखकर उसका दिल भी काँप उठा। लेकिन बेटों को कुछ फरक नहीं पड़ा! ऐसे बेटे यदि किसी माँ को मिल जायें तो उस माँ के लिए नरक का दु:ख भी छोटा हो जाता है। जिस घर में पढ़ा-लिखा बेटा अपने पिता से कहता है कि आपको क्या समझ में आता है ? उस समय पिता की मन:स्थिति पिता ही जान सकता है। परिवार में माता-पिता की अवमानना की बढ़ती स्थितियाँ व्यक्ति और समाज को कमजोर कर रही हैं।

भटकता यौवन

कल एक बेटा मुम्बई से यहाँ पर पहुँचा था। उसने जो खबर सुनाई वह दिल को भीतर तक हिलाने वाली है। बड़ी मुश्किल से वह बोलने लगा। दूसरों की मौजूदगी में वह अपनी बात मेरे समक्ष रखने में हिचकिचा रहा था। उसने मुझसे पूछा, ''महाराज साहेब! क्या आपको भारतीय दण्ड संहिता की धारा 377 के बारे में कुछ पता है ?''

मैंने कहा, ''नहीं, क्या अर्थ है इसका ?''

इसके बारे में शायद कइयों को पता होगा, कइयों को पता नहीं होगा। यौन अपराध से सम्बन्धित इस धारा के बारे में लड़खड़ाती जुबान से बोलते हुए उसने कहा, ''आपको कहने में मुझे संकोच हो रहा है। मन तैयार नहीं हो पा रहा है।'' ऐसा कहते हुए उसकी आँखों से आँसुओं की धार बहने लग गई। वह फूट-फूट कर रोते हुए बोला, ''महाराज साहेब! मुझे बचाओ। मेरे माता-पिता मेरी शादी करना चाहते हैं, और मैं इस चक्कर में फँस गया हूँ कि मैं शादी कर नहीं सकता!''

उस युवक ने हाल ही में सी.ए. की परीक्षा दी है। माँ-बाप का इकलौता बेटा है। करोड़पति का बेटा है। उसकी बात बताने जैसी नहीं है, लेकिन एक कटु हकीकत है। न सिर्फ उस युवक की, अपितु समाज के अनेक युवक-युवतियों की! आज बेटे-बेटी माँ-बाप से दूर अंधियारी राहों पर भटक गये हैं। बुजुर्गों ने घर में दीवारें बनाई थीं कि शर्म टिक जाए। लेकिन आजकल घर की दीवारों की आड़ में शर्म डूब रही है। पहले दीवारें इसलिए बनती थीं कि बड़ों का लिहाज रह जाए। अब घर में कमरे इसलिए बनते हैं कि बड़ों का लिहाज नहीं करना पड़े।

विचार करने पर ताज्जुब होता है। नियमित प्रतिक्रमण करने के बावजूद उसके कदम ऐसे बहक गये कि अब वह संभलना चाह रहा है तो भी संभल नहीं पा रहा है। जब उसकी पूरी बात सुनी तो मैंने कहा, ''बेटा तुम्हारी गलती नहीं है, तुम्हारे पिता की गलती है। तुम्हारे पिता ने तुम्हें पैसा दिया, लेकिन अपनापन नहीं दिया। मनी (धन) दिया, लेकिन मन नहीं दिया। तुम्हारे घर के अंदर ही रिश्ता समाप्त हो गया!'' सिसकियाँ भरते हुए उसने पूछा, ''महाराज साहेब! अब मुझे क्या करना चाहिये?'' ऐसी विकट स्थिति में बेटे को कुछ भी बोलने से समाधान होने वाला नहीं था। मैंने उसको कहा, ''तुम्हारे पिताजी को कहना कि उन्हें महाराज साहेब ने याद किया है।''

लुकाछिपी अनुचित

ऐसी अनेक जटिल समस्याएँ रोज सामने आती हैं। लोग कहते हैं कि मोबाइल ने बहुत बिगाड़ा कर दिया है। यह मोबाइल क्या आ गया, बेटी घर पर होती है, लेकिन घर वालों की नहीं होती है! शाम के वक्त घर की छतों और टेरेस पर लड़कियों को मोबाइल-वार्तालाप में मशगूल देखा जा सकता है। जिस बेटी को अपने दोस्त के साथ बात करने के लिए माँ-बाप से छुपना पड़ता हो, वह दोस्ती कैसी होगी? माँ-बाप इस बात को कैसे स्वीकार/सहन कर लेते हैं कि बेटी अपने दोस्त (फ्रेंड) के साथ बोलने के लिये, उनके सामने बोलने की बजाय अकेले में, एकान्त में जाकर बोलती है। और माँ-बाप चुप रह जाते हैं! इस प्रकार का व्यवहार अस्वीकार्य है।

वह कैसा रिश्ता है जो किसी बेटी को उसके माँ-बाप से छुपकर जीना/निभाना पड़ता है। और उस रिश्ते को यदि मंजूर किया जाता है या उसे संरक्षण दिया जाता है तो यह आचरण माँ-बाप से अधिक बेटी की जिन्दगी के लिए नुकसानदायक है। जिस पुत्र को पिता के साथ बातचीत के लिए हिम्मत जुटानी पड़ती हो, समय मांगना पड़ता हो; उस पिता का क्या होगा, मुझे नहीं पता, लेकिन इस प्रकार की दूरियों से पुत्र का जीवन दिशाहीन हो जाता है। ऐसी उपेक्षाओं और नादानियों से व्यक्ति और परिवार के जीवन में भारी भरकम समस्याएँ खड़ी हो जाती हैं। जिस प्रकार तीसरे चरण में पहुँचा हुआ कैंसर नियंत्रित नहीं हो सकता है, उसी प्रकार ऐसी भयावह समस्याएँ उलझती ही चली जाती हैं।

घर को सराय नहीं बनाएं

सिकन्द्राबाद में चातुर्मास चल रहा था। वहाँ कुछ बुजुर्ग व्यक्ति मेरे पास बैठे हुए थे। शाम के वक्त मैंने वरिष्ठ नागरिक परिषद् का गठन करने के लिए मीटिंग बुलायी थी। मैंने उन वरिष्ठ नागरिकों (सीनियर सिटिजन्स) से पूछा, "क्या आप छाती पर हाथ रखकर कह सकते हैं कि आपका बेटा या पोता ऐसा कुछ नहीं करता है कि जिसके कारण से आपको गर्दन नीची झुकानी पड़े?"

वे बोले, "महाराज साहेब! हम दावा नहीं कर सकते।"

यदि माँ-बाप को पता नहीं है कि उनके बेटे-बेटी कहाँ जाते हैं, क्या करते हैं, क्या खाते-पीते हैं, कहाँ रुकते और ठहरते हैं; तो जरा सोचिये कि यह आपका घर है या सराय (लॉज)? घर में कितने बजे आना, घर से कितने बजे जाना, घर का सदस्य घर के अंदर है या बाहर; यदि घर में रहने वाले को यह खबर नहीं है तो वह घर कैसे हुआ! कई बार किसी को समाचार देने होते हैं और श्रीमतीजी फोन उठाती हैं। पूछते हैं कि श्रीमानजी कहाँ है तो बोलती हैं, घर में नहीं हैं, कहाँ गए पता नहीं। जब गृहमंत्री को प्रधानमंत्री के कार्यक्रम का पता नहीं रहेगा तो देश की क्या हालत होगी।

घर या ब्यूटी पार्लर

लोगों की ज़िन्दगी अनेक विडम्बनाओं से घिरी है। घर में सामायिक करने की जगह है या नहीं, पूँजनी घर में है या नहीं; लेकिन मुँहपत्ती मुफ़्त में चाहिये, सामायिक के साधन मुफ़्त में चाहिये! यह बात किसी को कड़वी या तीखी लग सकती है, लेकिन सच है। आजकल हर घर में ब्यूटी पार्लर मिल जायेगा। शृंगार प्रसाधन (कॉस्मेटिक) चाहे जितने महंगे हों, उनको खरीदने के लिए कोई सौजन्य (स्पॉन्सरशिप) नहीं चाहिये। लेकिन धार्मिक उपकरण और पुस्तकें मुफ़्त में चाहिये। सब्जी खरीदते समय मेहनतकश माली से भाव-तौल (बार्गेनिंग) करने वाली बहिनें कॉस्मेटिक की 10 ग्राम की ट्यूब के लिए

खुशी-खुशी दो सौ रुपये दे देती हैं। जिंदगी के लिए उपयोगी वस्तुओं के लिए भाव-तौल करने वाली बहिनें, जिंदगी को बर्बाद करने वाली वस्तुओं को खरीदते समय कुछ नहीं सोचती हैं।

वस्तुतः बात कॉस्मेटिक के अंधाधुंध उपयोग की ही नहीं है। सवाल यह है कि जब किसी घर में युवा बेटी अपनी माँ को अभिनेत्री बनते हुए देखती है तो उस बेटी को किस राह पर आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलेगी ? बेटी के सामने माँ, माँ बनकर रहे तो बेटी, बेटी बनकर रहेगी। और बेटी के सामने माँ यदि अभिनेत्री बनकर रहती है तो माँ, बेटी को अभिनेत्री बनने से रोक नहीं सकती। कभी-कभी लगता है कि जितना बजट आजकल कॉस्मेटिक का होने लगा है, उतना स्वास्थ्य पर भी खर्च नहीं किया जाता होगा? महंगा कॉस्मेटिक खरीदने वाले धर्मदान के समय जी चुराते हैं। जिस घर में ऐसा विवेक नहीं हो, उसे घर कहने में हिचक होती है। घर-परिवार में ऐसी विचारहीनता होने से समाज कमजोर पड़ता है।

नन्दनवन बने परिवार

वे लोग सौभाग्यशाली हैं, जिन्हें उनके माता-पिता के धर्ममय सुसंस्कार और आशीर्वाद प्राप्त हुए। इसी वजह से वे धर्म, संस्कृति, सत्संग आदि पावन निमित्तों से अपने जीवन को सन्मार्ग पर आगे बढ़ाते हैं। लेकिन विचार कीजिये, जिन बच्चों को माता-पिता के सुसंस्कारों की छत नहीं मिल रही है, वे बच्चे कहाँ जायेंगे ? आज के वातावरण में बच्चों को सुसंस्कार प्रदान करना बेहद जरूरी है।

क्रूर सभ्यता

महाराष्ट्र का एक सर्वे अखबार में प्रकाशित हुआ था कि किस समाज में लड़कियाँ कम और लड़के ज्यादा हैं ? मुझे दुःख व आश्चर्य हुआ कि उस समाज में पहली पंक्ति में जैन समाज का नाम था! किसी भी रूप में स्त्री-पुरुष अनुपात बिगड़ता है तो यह बेहद अफसोसजनक है। समाज में ऐसी अप्रिय घटनाओं के बारे में जानकर मुझे विचार आता है कि उस घर से गोचरी नहीं लेनी चाहिये, जिस घर में गर्भपात करवाया गया हो। उस माँ के हाथ से गोचरी नहीं लेनी, जिसने गर्भपात करवाया हो। इस सम्बन्ध में मुझे एक बहिन की दुस्साहस भरी घटना याद आती है। मैं इन्दौर से उज्जैन जा रहा था। रास्ते में एक जैन परिवार के फार्म हाउस पर मेरा ठहरना हुआ। जब मैं वहाँ ठहरा तो वह परिवार वहाँ पहुँचा। एक बहिन जब मुझे आहार बहराने लगी तो मैं अपने आपको कहने से रोक नहीं सका। मैंने कहा, "मैं तुम्हारे हाथ से रोटी तब ही ले सकता हूँ जब तुम कभी भी गर्भपात नहीं करवाने का संकल्प करो।" उस बहिन ने मेरे आग्रह की उपेक्षा कर डाली! बात उस समय हद पार कर गई जब मैंने इन्दौर से प्रकाशित होने वाले प्रमुख दैनिक अखबार 'नई दुनिया' में उसी

बहिन का लिखा हुआ लेख पढ़ा कि गर्भपात करवाना क्यों जरूरी है! यह लेख उसने छपवाया।

कोई परिवार समाज में लाखों रुपये दान करता है और उस दान की वजह से समाज में उसका सत्कार होता है। मान लीजिये यदि उस परिवार का कोई सदस्य गर्भपात केन्द्र चलाता है और समाज यदि उसके उस हिंसककृत्य के विरोध की हिम्मत नहीं जुटा पाता है तो यह बेहद चिन्ताजनक है। ऐसी घटनाएँ मुझे भीतर से हिला देती हैं। असल में कोई भी गर्भपात केन्द्र मानव-हत्या का कत्लखाना होता है। दु:खद आश्चर्य है कि ऐसे कत्लखाने बस्तियों में खुलते जा रहे हैं और कहीं कोई विरोध नहीं कर रहा है! क्या जमाना आ गया है कि जो माँ जान देकर बच्चे को संभालती थी, बचाती थी; वही माँ बच्चे की जान लेकर जीना चाहती है। ये कैसी क्रूर सभ्यता है, ये कैसा कानून है कि कोख को ही कत्लखाने में तब्दील किया जा रहा है!

त्रिवेणी में स्नान

अब एक नया अधिनियम बना है कि जो बच्चे अपने माता-पिता को नहीं संभालेंगे, वे कानूनन अपराधी ठहराये जायेंगे। सवाल यह है कि क्या कानून बना देने से बुजुर्गों की सार-संभाल हो जायेगी? कभी कोई बुजुर्ग माँ-बाप आते हैं और अपना दर्द बयां करके दिल हल्का कर जाते हैं। लेकिन ऐसी दर्दभरी दास्तान सुनकर दिल भारी हो जाता है कि कहाँ जा रहा है हमारा समाज? आज हमारे परिवारों में पारिवारिक भावनाएँ लुप्त होती जा रही हैं।

एक बात पक्की है कि आदमी जनमता नहीं है, आदमी बनता है। जनम तो मनुष्य के शरीर का होता है, लेकिन परिवार आदमी को बनाता है, आदमी में मनुष्यत्व का विकास करता है। संत कबीर आज से सैंकड़ों साल पहले कह गये -

कबीरा सौ कोसो फिरियो, मिनखां बड़ा सुकाल।
जिनके देखे दु:ख टले, उनका बड़ा अकाल।।

सदियों पहले भी यह हालत थी, तो आज क्या हालत होगी ? कौन बना सकता है आदमी को आदमी? आदमी को आदमी बनाने का काम कोई कर सकता है तो केवल परिवार कर सकता है। सद्गुरु एवं धर्मप्रवृत्ति उसमें सहायक हो सकती है। केवल मनुष्य का चोला मिल जाने से कोई मनुष्य नहीं बनता, मनुष्य बनने के लिए श्रद्धा, संस्कार और समर्पण की त्रिवेणी में स्नान करना पड़ता है।

इस त्रिवेणी में स्नान किया या नहीं किया, इसके लिए अपने मन को टटोलना पड़ता है। परिवार में जिन व्यक्तियों के बीच आप जीते हैं, जो आपके परिवारजन हैं, निकटतम हैं; यदि उनके प्रति भी आपके मन में भरोसा नहीं हैं तो फिर जीने का क्या आनन्द है। कभी ऐसा

हो जाये कि आपने घर का दरवाजा खोला और आपको आते हुए देखकर आपकी जीवन-संगिनी एकदम से मोबाइल स्वीच-ऑफ कर देती है। ऐसे समय में किसी जीवन-साथी के मन में क्या आयेगा ? जो व्यक्ति अपने सहयात्री पर भरोसा नहीं कर सकता है, वह देव, गुरु और धर्म पर क्या भरोसा करेगा ? जिनके साथ 24 घंटे जीते हों, जो तुम्हारे सुख-दुःख के साथी हैं, उनको आप श्रद्धा की नज़र से नहीं देख सके तो अनदेखे भगवान को कैसे श्रद्धा की नज़र से देख पाओगे ? (क्रमशः)

विचारों में गंदगी मत आने दो

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

द्वंद विचारों में है
रिश्तों में नहीं
मन बिगड़ता है
तब रिश्ते बिगड़ते हैं
मन संभलता है तो
रिश्ते महकते हैं
मन के सागर में
ज्वार भाटा मत आने दो
उठती विचारों की तरंगों को
मत मचलने दो
विचारों का यही तूफान
तबाही मचा देता है
भाई-भाई में दूरियाँ बढ़ा देता है
सारा खेल विचारों का है
यह प्रभाव पाँचवें आरे का है
विचारों में गंदगी मत आने दो
चेतना के दीप को पूरी तरह जग जाने दो
देखो मन की मलिनता का अंधेरा
दूर हट जाएगा क्लेश द्वंद का सारा मिट जाएगा
पवित्र रिश्तों में सदा बंधे रहो
ज़िंदगी चार दिन की है
बस यही बात मन से कहो

-जनता साड़ी सेण्टर, स्टेशन रोड़, दुर्ग-491001 (छतीसगढ़)

गीत

ऐ मेरे चेतन सम्भल

मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा.

(तर्जः- ऐ मेरे प्यारे वतन..........।)

ऐ मेरे चेतन संभल, आज्ञा प्रभु की चलता चल
करले आतम ज्ञान।।
तू ही अर्हन् सिद्ध है, तू स्वयं संबुद्ध है,
क्यों बना अनजान।।

देख तेरे कितने साथी, पा गये मुक्ति का माल,
क्यों अभी भी जग में उलझा, करले खुद से ही सवाल।
वक्त ना जाए गुजर, लम्बा है तेरा सफर,
हो न जाए शाम।। ऐ मेरे..........।।

ये चपल मन भ्रमित बनके भोग सुख को देता मान,
बहुत खोया अब न खोना, होके रहना सावधान।
मोड़ मन की वृत्तियां, करले संयमित इन्द्रियाँ,
आत्महित पहचान।। ऐ मेरे.......।।

छोड़ चिंता करले चिन्तन, नहीं किसी का दोष है,
जो किया सो मिल रहा, फिर क्यों नहीं संतोष है।
तू ही तेरा शत्रु है, तू ही तेरा मित्र है,
सुनले आगमज्ञान।। ऐ मेरे........।।

बीते कल को भूल के, अब सोच आगे का भला,
जो कहा 'गौतम' से प्रभु ने, सीख वो जीवन कला।
माना है मुश्किल डगर, पाना है मंजिल मगर,
चलता चल अविराम।। ऐ मेरे.....।।

-संकलित

अभिव्यक्ति

आओ! ध्यान में रम जाएँ

श्रीमती अभिलाषा हीरावत

अरिहन्त सिद्ध केवली सारे,
मंजिल पाए शुक्ल ध्यान सहारे,
चलो, उनका अनुसरण कर आएँ,
आओ! ध्यान में रम जाएँ।

उत्तराध्ययन, आचारांग या हो नन्दी,
ध्यान की सबने की है प्रशस्ति,
चलो, हम भी उस की महिमा गाएँ,
आओ! ध्यान में रम जाएँ।

तप के भेद में इसे बताया,
स्वाध्याय के बाद ध्यान को गाया,
चलो, स्व-अध्ययन ध्यान में कर आएँ,
आओ! ध्यान में रम जाएँ।

शुरू करें हम आना-पान से,
मन को सूक्ष्म बनाएँ,
चलो, बाह्य आलम्बन छोड़ भीतर कदम बढ़ाएँ,
आओ! ध्यान में रम जाएँ।

श्रुत-चिन्तन में युग बीते,
पर जन्म-मरण के पल न रीते,
चलो, अब भावित प्रज्ञा जगाएँ,
आओ! ध्यान में रम जाएँ।

सिहरन, पुलकन, धड़कन, फड़कन,
भिन्न-भिन्न सब है संवेदन,

चलो, संवेदन देख, समरस ज्योत जगाएँ,
आओ! ध्यान में रम जाएँ।

हर सुख में हर्षे, दु:ख में रोए,
राग-द्वेष में जागे सोए,
चलो, विष बेल की जड़ें खोज आएँ,
आओ! ध्यान में रम जाएँ।

निर्मल चित्त निर्मलता बाँटे,
राग-द्वेष की बेड़ियाँ काटे,
चलो, निसर्ग के नियम को जान आएँ,
आओ! ध्यान में रम जाएँ।

समग्र शरीर का अन्तरवलोकन कर के,
अनित्य बोध का दर्शन कर लें,
चलो, धर्म धारण कर सम्बोधि को पाएँ,
आओ! ध्यान में रम जाएँ।

शाश्वत नहीं देह में कोई संवेदन,
अपनी काया पर करें, सत्य का अन्वेषण,
चलो, उत्तम मंगल-पथ छू कर आएँ,
आओ! ध्यान में रम जाएँ।

लाखों ने अपनाया इसको, आत्म-जागृति जगाई,
जागृत जिसकी चेतना, मुदित राह उसने है पाई,
चलो, हम भी उसी राह को पाएँ,
आओ! ध्यान में रम जाएँ।

समता की गंगा में, अनित्य की गहराई देख आएँ,
क्षण-क्षण जागृत रह, हम अनासक्त बन जाएँ,
चलो, मुक्ति के मार्ग में मुदिता अनन्ती पाएँ,
आओ! ध्यान में रम जाएँ।

-मुम्बई (महा.)

श्रावक-जीवन

मार्गानुसारी के गुण

श्री दुलीचन्द जैन 'साहित्यरत्न'

आचार्य हरिभद्रसूरि जैन धर्म के महान् व्याख्याता तथा 14 विद्याओं के पारंगत आचार्य थे। कहा जाता है कि उन्होंने 1444 ग्रन्थों की रचना की थी। उनमें से कुछ ही अब उपलब्ध हैं। श्रावकाचार के बारे में उनका ग्रन्थ 'धर्मबिन्दु' आज भी उपलब्ध है तथा अतीव प्रसिद्ध है। वे साध्वी महत्तरा याकिनी से प्रभावित होकर जैन धर्म में दीक्षित हुए थे, अतः उन्होंने अपनी कृतियों के अंत में 'महत्तरा याकिनी धर्मसूनु' शब्द का उल्लेख कर अपनी धर्म माता को अमर बना दिया।

'धर्मबिन्दु' ग्रन्थ में श्रावकाचार का विस्तृत विवेचन किया गया है। उसी में सामान्य गृहस्थों के लिए सरल भाषा में मार्गानुसारी के 35 गुणों का वर्णन उपलब्ध है। ये गुण व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक जीवन के विकास के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं। इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:-

1. श्रावक न्याय-नीति से धन का उपार्जन करे।
2. वह शिष्ट पुरुषों के आचार की प्रशंसा करे।
3. वह अपने कुल और शील से समान, किन्तु भिन्न गोत्रवालों के साथ विवाह करने वाला हो।
4. वह पापों से डरने वाला हो।
5. वह प्रसिद्ध देशाचार का पालन करे।
6. वह किसी की निंदा न करे।
7. वह ऐसे स्थान पर घर बनाये, जो न एकदम खुला हो और न एकदम गुप्त हो।
8. घर में बाहर निकलने के द्वार अनेक न हों।
9. वह सदाचारी पुरुषों की संगति करे।
10. वह माता-पिता की सेवा भक्ति करे।
11. वह लड़ाई-झगड़े और बखेड़े पैदा करने वाली जगह से दूर रहे, अर्थात् चित्त में क्षोभ उत्पन्न करने वाले स्थान में न रहे।
12. वह किसी भी निन्दनीय काम में प्रवृत्ति न करे।
13. वह आय के अनुसार व्यय करे।

14. वह बुद्धि के आठ गुणों से युक्त होकर प्रतिदिन धर्म श्रवण करे।
15. वह अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार वस्त्र पहने।
16. वह अजीर्ण होने पर भोजन नहीं करे।
17. वह नियत समय पर संतोष के साथ भोजन करे।
18. वह धर्म के साथ अर्थ-पुरुषार्थ, काम-पुरुषार्थ और मोक्ष-पुरुषार्थ का इस प्रकार सेवन करे कि कोई किसी का बाधक न हो।
19. वह अतिथि, साधु और दीन-असहायजनों का यथायोग्य सत्कार करे।
20. वह कभी दुराग्रह के वशीभूत न हो।
21. वह देश और काल के प्रतिकूल आचरण न करे।
22. वह अपनी शक्ति और अशक्ति को समझे। अपने सामर्थ्य का विचार करके ही किसी काम में हाथ डाले, सामर्थ्य न होने पर हाथ न डाले।
23. वह सदाचारी पुरुषों की तथा अपने से अधिक ज्ञानवान पुरुषों की विनय भक्ति करे।
24. वह गुणों का पक्षपाती हो- जहाँ कहीं गुण दिखाई दें, उन्हें ग्रहण करे और उनकी प्रशंसा करे।
25. जिनके पालन-पोषण करने आदि का उत्तरदायित्व अपने ऊपर हो, वह उनका पालन-पोषण करे।
26. वह दीर्घदर्शी हो अर्थात् आगे-पीछे का विचार करके कार्य करे।
27. वह अपने हित-अहित को समझे, भलाई-बुराई को समझे।
28. वह कृतज्ञ हो अर्थात् अपने प्रति किये हुए उपकार को नम्रता पूर्वक स्वीकार करे।
29. वह लोकप्रिय हो अर्थात् अपने सदाचार एवं सेवा कार्य के द्वारा जनता का प्रेम प्राप्त करे।
30. वह अनुचित कार्य करने में लज्जा का अनुभव करे।
31. वह दयावान हो।
32. वह सौम्य हो, उसके चेहरे पर शांति और प्रसन्नता झलकती हो।
33. वह परोपकार करने में उद्यत रहे, दूसरों की सेवा करने का अवसर आने पर पीछे न हटे।
34. वह काम-क्रोधादि छह आंतरिक शत्रुओं को त्यागने में उद्यत हो।
35. वह इन्द्रियों को अपने वश में रखे।

-चेयरमेन, करुणा अन्तरराष्ट्रीय, 70, टी.टी.के.रोड़, अल्वारपेट, चेन्नई-600018

स्वास्थ्य-विज्ञान

बिना दवा आँखों के रोगों का उपचार

डॉ. चंचलमल चोरडिया

आजकल आंखों के रोग बहुत बढ़ रहे हैं। आंखों के रोगों के कारण अपौष्टिक आहार, धूल भरा प्रदूषित वातावरण, तेज प्रकाश में देखना, कम प्रकाश में पढ़ना, लगातार टी.वी. देखना, बात-बात में आंसू निकालना, नेत्र रोगियों से संक्रमण, कम्प्यूटर पर अधिक कार्य करने के अलावा क्षमता से अधिक आंखों पर जोर देकर कार्य लेना तथा अधिक कामभोग अथवा अनावश्यक वीर्य स्खलन, बात-बात में अनावश्यक क्रोध करना अथवा चिड़चिड़ा स्वभाव, देर रात तक जागृत रहना एवं प्रात: देर से उठना, खट्टे पदार्थों का अधिक सेवन तथा आंखों के माध्यम से विकार बढ़ाने वाले दृश्य आदि हो सकते हैं। उपर्युक्त कारणों से आंखों की दृष्टि कमजोर होती है। अत: उपचार के साथ आँखों का संयम भी अति आवश्यक होता है। हम ऐसे कार्यों से यथा संभव बचें, जो आंखों में रोग पैदा करते हैं।

आध्यात्मिक दृष्टि अथवा कर्म सिद्धान्तानुसार जिस वस्तु का हम दुरुपयोग करते हैं वह वस्तु या तो मिलती नहीं या अच्छी नहीं मिलती। जन्मजात अन्धता एवं आंखों के विभिन्न रोगों का पूर्वजन्मों के कर्मों से सीधा सम्बन्ध होता है। आँख है तो देखे बिना नहीं रह सकते। परन्तु किसी वस्तु को देखते रहना और उस अनित्य वस्तु की इच्छा की पूर्ति हेतु उसकी स्मृति बनाए रखने से नेत्र विकार सम्भव है। दिखना अलग है, देखना अलग है, देखते रहना अलग होता है एवं देखी हुई भौतिक वस्तु को प्राप्त करने हेतु चिंतन एवं चिंता अलग होती है। यदि कोई नासमझ बच्चा अपने पापा को नोट गिनते देख पापा से 1000 रुपये का नोट मांगे तो पापा प्रेमवश उसको नोट दे दें। परन्तु यदि वह नासमझ बच्चा उस नोट को फाड़ दे एवं अपने पापा से दूसरा मांगे तो बच्चे से कितना भी प्यार हो, पापा पुन: उसे सही नोट कभी नहीं देंगे। कर्म सिद्धान्त का नामकर्म इसी सिद्धान्त का पालन करता है।

चक्षु इन्द्रिय के दो भाग होते हैं- 1. द्रव्य चक्षु इन्द्रिय, 2. भाव चक्षु इन्द्रिय। द्रव्य चक्षु इन्द्रिय का संबंध आंख के बाह्य आकार एवं उसके भौतिक उपकरण से होता है, जबकि भाव इन्द्रिय का संबंध देखने की चैतन्य ऊर्जा से होता है। आधुनिक नेत्र चिकित्सक मात्र उपकरण में आए विकारों को दूर कर सकते हैं, परन्तु जिसकी दृष्टि ही न हो उसका उपचार नहीं कर सकते। अत: यहाँ भी ऐसे ही उपकरण संबंधी आंखों के रोगों के प्रभावशाली,

अहिंसक उपचार का विवेचन किया जा रहा है।

मानव शरीर के सारे अंग, उपांग और अवयव पूर्ण सहयोग और तालमेल से कार्य करते हैं। प्रत्येक कार्य को करने में शरीर के उस अवयव को प्रत्यक्ष-परोक्ष कम-ज्यादा अन्य अवयवों का सहयोग मिलता है। अतः शरीर के किसी भाग में कोई गड़बड़ी हो तो उस भाग से अनावश्यक कार्य न करवाये जाएँ एवं अन्य सहयोगी अवयवों का अधिकाधिक सहयोग लिया जाए तो कोई भी रोग असाध्य और संक्रामक नहीं रहता।

आंखों का सीधा संबंध चीनी पंच तत्त्व सिद्धान्त के अनुसार यकृत और पित्ताशय से भी होता है। आंखों में रोग का आन्तरिक प्रभाव यकृत-पित्ताशय का असंतुलन अथवा पूर्ण क्षमता से कार्य न कर पाना होता है। अतः यकृत और पित्ताशय की पंच ऊर्जाओं को बियोल मेरेडियन में संतुलित और नियन्त्रित रखा जाए तो यकृत-पित्ताशय के असंतुलन से होने वाले, आंखों के अनेक रोगों से बचा जा सकता है।

1. दूर या नजदीक की कमजोर दृष्टिः- जब यकृत की वायु ऊर्जा कम हो जाती है, तो नजदीक की दृष्टि कमजोर होने लगती है। परन्तु जब यकृत में शुष्क ऊर्जा की कमी हो जाती है तो दूर की वस्तुएँ देखने में कठिनाई होती है। अतः यकृत की बियोल मेरेडियन में वायु ऊर्जा को बढ़ाकर नजदीक की दृष्टि और शुष्क ऊर्जा को बराबर कर दूर की दृष्टि को सुधारा जा सकता है।

2. मोतियाबिंब का उपचारः- मोतियाबिंब (Cataract) होने का एक मुख्य कारण यकृत की ठण्डक ऊर्जा का बढ़ना भी होता है। अतः जब यकृत में ठण्डक ऊर्जा बढ़ जाती है तो, केटरेक्ट (Cataract) होने लगता है। अतः उस स्थिति आने से पूर्व यदि यकृत की ठण्डक ऊर्जा को कम रखा जाए तो केटरेक्ट होने की संभावनाएँ कम हो जाती है।

वृद्धावस्था में मोतियाबिंब पकने से पूर्व मुंह में पानी भरकर नियमित सूर्य से तप्त हरे पानी से अथवा ताजे स्वमूत्र से अथवा त्रिफला के पानी से नियमित आंखें धोने से भी केटरेक्ट होने की संभावना कम हो जाती है। परन्तु केटरेक्ट होने के पश्चात् यदि पुराने स्वमूत्र को दिन में दो बार आंखों में डाला जाए तो केटरेक्ट साफ हो सकता है और शल्य चिकित्सा की आवश्यकता नहीं रहती। जितना स्वमूत्र पुराना होता है, उतना उपचार अधिक प्रभावशाली होता है। फिर भी कम से कम 15 से 20 दिन पुराना स्वमूत्र तो होना ही चाहिए। पुराना शिवाम्बु आंखों में डालने से असहनीय जलन हो सकती है। अतः हमें एक दम पुराना शिवाम्बु आंखों में डालने के बजाय पहले उसी दिन का, फिर दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवें दिन के हिसाब से अवधि क्रमशः बढ़ाते-बढ़ाते 15 से 20 दिन तक अवधि बढ़ाकर स्वमूत्र नियमित डालना चाहिए। इससे आंखों का पुराने स्वमूत्र के साथ तालमेल

हो जाता है। किसी दुष्प्रभाव की संभावना नहीं रहती। इंदौर के अनुभवी शिवाम्बु चिकित्सक माणक चन्द जी मारू के परामर्श से ऐसे बहुत से आंखों के रोगियों को शल्य चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ी।

3. रतौन्धी:- कुछ व्यक्तियों को रात्रि में देखने और पढ़ने में परेशानी होती है अथवा रतौन्धी का रोग हो जाता है। यदि ऐसे रोगियों के यकृत की वायु और ताप ऊर्जा आवश्यकतानुसार बढ़ा दी जाए तो संतोषजनक परिणाम आने लगते हैं।

4. रंग न पहचान पाना (Colour Blindness)**:-** चन्द रोगियों को कुछ रंग पहचानने में परेशानी होती है। यदि हरा रंग पहचानने में कठिनाई हो तो यकृत की वायु ऊर्जा बढ़ाने से अच्छे परिणाम आते हैं। ठीक उसी प्रकार लाल रंग न पहचानने वालों की ताप, पीला रंग न पहचानने वालों की नमी और नीला रंग न पहचानने वालों के यकृत की ठण्डक ऊर्जा बढ़ाने और संतुलित करने से लाभ होता है।

5. आंखों के अन्य रोगों का उपचार:- चीनी पंच तत्त्व सिद्धान्त के अनुसार आंख यकृत, पित्ताशय यिन-यांग परिवार का सदस्य होती है। अतः यकृत व पित्ताशय को संतुलित एवं स्वस्थ रख आंखों के सभी रोगों का प्रभावशाली उपचार किया जा सकता है।

यदि आंखें झपकती हों तो पित्ताशय की वायु ऊर्जा घटाने से, आंखें लाल हो तो पित्ताशय के ताप की ऊर्जा कम करने से, आंखों में बिना विशेष कारण पानी आता हो तो पित्ताशय की नमी ऊर्जा को कम करने से, आंखे खटकती हो तो पित्ताशय की शुष्क ऊर्जा कम करने से अच्छे परिणाम आते हैं। ऊर्जा घटाने हेतु बटन चुम्बक का उत्तरी ध्रुव तथा ऊर्जा बढ़ाने हेतु बटन चुम्बक का दक्षिणी ध्रुव बियोल मेरेडियन के संबंधित ऊर्जा प्रतिवेदन बिन्दुओं पर लगाना चाहिए। आंखों के उपर्युक्त रोग यदि लम्बे समय तक हों तो पित्ताशय के स्थान पर यकृत की संबंधित ऊर्जा को घटाना चाहिए। यदि आंखों से बराबर न दिखता हो तो भी यकृत की ठण्डक ऊर्जा घटानी एवं ताप ऊर्जा बढ़ानी चाहिए।

नेत्र ज्योति अच्छी रखने के उपाय:-

1. आज्ञा चक्र, विशुद्धि चक्र, नाभि चक्र एवं आंखों पर एकाग्रता पूर्वक प्रातःकाल ध्यान करने से नेत्र दृष्टि सुधरती है।
2. प्राण मुद्रा, उदान मुद्रा, नमस्कार मुद्रा एवं ज्ञान मुद्रा नियमित करने से आंखों के रोग होने की संभावनाएँ कम हो जाती हैं।
3. चन्द्र स्वर एवं सूर्य स्वर को आवश्यकतानुसार संतुलित रखने से आंखों के रोगों में शीघ्र अच्छे परिणाम मिलते हैं।

4. हथेली एवं पगथली में सभी दर्दस्थ प्रतिवेदन बिन्दुओं पर एक्यूप्रेशर करने से आंखों के सभी रोग ठीक होते हैं।
5. प्रतिदिन आंखों का व्यायाम करने से अर्थात् आंखों को दायें-बायें, ऊपर-नीचे, तिरछी बायें नीचे, दाहिने तिरछी ऊपर, तिरछी दाहिने नीचे, तिरछी बांयें ऊपर, बहुत दूर और बिल्कुल समीप के पदार्थों को देखने से आंखों की मांसपेशियाँ सक्रिय होती है। आंखों की पलकों को गोल-गोल घुमाने, दोनो हथेलियों के अंगूठे के नीचे के ऊभरे भाग को रगड़ कर आंखों पर स्पर्श करने से आंखों का भारीपन कम होता है तथा नेत्र ज्योति सुधरती है।
6. प्रात:काल उदित सूर्य के सामने देखने से आंखों की रोशनी बढ़ती है।
7. मुंह में पानी भरकर त्रिफला के पानी से या सूर्य तप्त हरे पानी से अथवा स्वमूत्र से आंखों को धोने से आंखों की दृष्टि सुधरती है।
8. प्रात:काल निद्रा त्याग के समय आंखों में अपने बासी थूक का अंजन करने से आंखों के विकार दूर होते हैं।
9. स्वमूत्र से नेति क्रिया करने से आंखों के विकार दूर होते हैं।
10. रात्रि में निद्रा में आंखों पर मेथी की पट्टी बांध कर सोने से अथवा कम शक्ति वाले चुम्बक आंखों पर स्पर्श करने से आंखें सशक्त हो जाती है।
11. प्रात: नंगें पांव हरी घास पर चलने, हरे रंग का ध्यान करने, हरी वस्तुओं को देखने एवं भोजन में हरी सब्जियों का सेवन आंखों के लिये लाभप्रद होता है।
12. पीयूष ग्रन्थि ओप्टिकल नर्व पर नियन्त्रण रखती है। पीयूष एवं अन्य ग्रन्थियों पर एक्यूप्रेशर द्वारा उपचार करने से आंखों के रोग होने की संभावना कम हो जाती है।
13. पगथली के तलवों में नियमित तेल मर्दन करने से नेत्र ज्योति सुधरती है।

उपर्युक्त बातों का यथा संभव पालन करने से आंखों के अनेक रोगों में न केवल शीघ्र लाभ मिलता है, अपितु आंखों की ज्योति भी सुधरती है।

वायु ऊर्जा, ताप ऊर्जा, शुष्क ऊर्जा, नमी ऊर्जा आदि घटाने-बढ़ाने हेतु अंगुली पर संकेत बिन्दु का चार्ट दिया जा रहा है।

-चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)

फोन: 0291-2621454, 94141-34606

E-mail: cmchordia.jodhpur@gmail.com,
Website: www.chordiahealthzone.com, www.chordiahealthzone.in

(इस आलेख के प्रश्न पृष्ठ संख्या 51 पर देखें)

LEFT PALM बांयीं हथेली

1. DRYNESS (शुष्कता)	1. WIND (वायु)
2. COLDNESS (ठण्डक)	2. HEAT OR HOTNESS (ताप)
3. WIND (वायु)	3. HUMIDITY (आर्द्रता/नमी)
4. HEAT OR HOTNESS (ताप)	4. DRYNESS (शुष्कता)
5. HUMIDITY (आर्द्रता/नमी)	5. COLDNESS (ठण्डक)

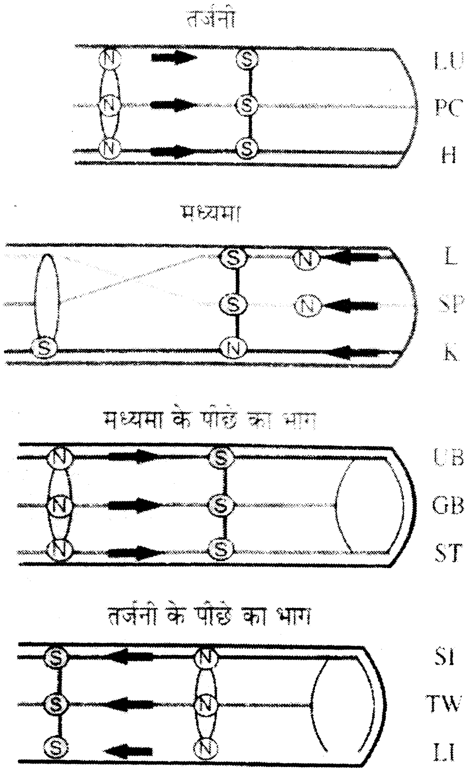

विभिन्न मेरीडियनों में ऊर्जा बढ़ाने हेतु बियोल मेरेडियन में चुम्बक लगाने की स्थिति

ST - आमाशय
GB - पित्ताशय (गालब्लेडर)
UB - मूत्राशय (ब्लेडर)
L - यकृत (लीवर)
K - गुर्दा (कीडनी)
SP - तिल्ली (स्पलीन)
H - हृदय (हार्ट)
PC - पेरिकार्डियन (मस्तिष्क)
LU - फेंफड़ा
LI - बड़ी आंत
SI - छोटी आंत
TW - त्रिअग्नि (मेरूदण्ड)
S - बटन चुम्बक का दक्षिणी ध्रुव
N - बटन चुम्बक का उत्तरी ध्रुव

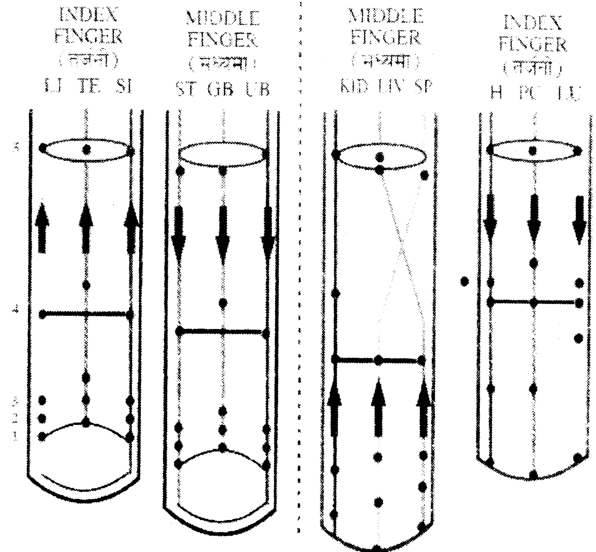

बियोल मेरेडियन से संबंधित अंगों के प्रमुख ऊर्जा प्रतिवेदन केन्द्र

कविता

इन्द्रिय-विजय की राह से

डॉ. रमेश 'मंयक'

जब तक
चित्तवृत्तियाँ बनी रहेंगी
इन्द्रियों की गुलाम
विषय-वासना के घोड़ों की
नहीं कसेगी लगाम
मन-इधर-उधर दौड़ लगाएगा
विद्रूप-वासना की विषयवस्तु
आकर्षक ही नज़र आएगी,
चित्त-आत्मरमणता की ओर
कैसे उन्मुख हो पाएगा ?

इन्द्रियाँ तो जननी हैं
राग-द्वेष की, कारक-दुःख क्लेश की
भटकाने वाली
संयम से दूर ले जाने वाली।

करना ही होगा-
राग-द्वेष के भावों पर नियंत्रण
अपनाना ही होगा संयम का विधान
संतुलित चिंतन से आएगा
समरसता का ज्ञान।

रूप-रंग; स्वाद-गंध, स्पर्श से उत्पन्न
संघर्षों को त्यागने की प्रवृत्ति
अभ्यास से आएगी
इन्द्रिय-विजय की राह से
देह परम पद पाएगी।

-बी-8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़-312001 (राज.)

बाल-स्तम्भ

क्षमा : आनन्द का द्वार

डॉ. धर्मचन्द जैन

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के व्यक्ति 15 सितम्बर 2013 तक जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, श्रीमती शरद चन्द्रिका मुणोत सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुमार छात्रावास के सामने, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003(राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

अमित, मुदित और सुमित तीनों घनिष्ठ मित्र थे। वे विद्यालय में तीनों साथ बैठते, साथ ही भोजन करते और तीनों साथ ही खेलते। उनके घर भी आस-पास थे। अतः कभी-कभी गृह-कार्य भी साथ में करते थे। किन्तु कभी-कभी उनके बीच झगड़ा भी होता था। छोटी-मोटी बातों की वे परवाह नहीं करते थे। एक दूसरे का ध्यान रखते थे। किन्तु सुमित की मम्मी को उसके दोस्तों का अपने घर आना-जाना अच्छा नहीं लगता था। एक दिन खेल-खेल में अमित के हाथ से क्रॉकरी की एक-दो प्लेट टूट गयी, जो सुमित के मामा लाए थे। इस बात पर वह बहुत नाराज हुई। उस घटना के बाद सुमित को अपने मित्रों के घर पर भी भेजना उसकी मम्मी ने बन्द कर दिया। सुमित के दोस्तों को उसकी मम्मी की यह आदत चुभती रही। सुमित का धीरे-धीरे दोस्तों के यहाँ जाना कम होने लगा। सुमित भी बुझा-बुझा सा रहने लगा। उसे अपनी मम्मी पर रोष आता था। मम्मी से वह जब कभी दोस्तों के घर जाने या उनके साथ खेलने के लिए पूछता तो मम्मी मना कर देती। उसका मन खिन्न रहने लगा, पढ़ाई में भी वह पिछड़ने लगा, स्कूल में भी दोस्तों के साथ मिलने-जुलने में उसे संकोच होने लगा। अब तो वह अपने मित्रों से बात-बात पर झगड़ने लगा, उसके मित्र भी उससे खफा हो गए। वह अपना दुःखड़ा किसको सुनाए, यह समझ में नहीं आ रहा था। मम्मी से कहने की तो उसे हिम्मत ही नहीं थी। जब अर्द्धवार्षिक परीक्षा का परिणाम लेकर सुमित घर पर रोता-रोता आया तो उसके पिता सुनील ने कारण जानने के लिए उससे पूछा-"क्या बात है? रो क्यों रहे हो।" सुमित ने अंकतालिका पिता के सामने कर दी। अंकतालिका देखकर पिता को आश्चर्य हुआ और वे सोचने लगे कि सुमित तो पढ़ने में

शुरू से होशियार रहा है, अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होता रहा है, फिर इस बार परिणाम इतना कमजोर क्यों? पिता के मस्तिष्क में दो दिन पहले की घटना घूमने लगी कि शाम को मैं जब जल्दी घर लौटा तो सुमित वीडियो गेम खेल रहा था। मैंने उससे पूछा कि तुम मैदान में जाकर अपने दोस्तों के साथ क्यों नहीं खेलते हो, तब उस समय यह बिना कुछ बोले दूसरे कमरे में चला गया। मैंने इस बात पर उस दिन ध्यान नहीं दिया, आज ऐसा लग रहा है कि जरूर इस घटना में राज छिपा है। यह विचार आते ही उसके पिता सुमित को ढूंढने लगे। उन्होंने देखा कि वह कमरे की खिड़की से मैदान में खेल रहे बच्चों की तरफ सूनी-सूनी आँखों से देख रहा है। उसके पिता ने बड़े प्यार से सुमित के सिर पर हाथ फेरकर उसे अपने पास सोफे पर बिठाया और अपनी पत्नी दिव्या को भी आवाज लगाकर वहीं बुलवा लिया।

तीनों अहाते में सोफे पर में बैठे हुए एक-दूसरे को देख रहे थे। पिता सुनील ने कुछ विचार कर बात प्रारम्भ की। अपने पुत्र सुमित को सम्बोधित करते हुए कहा- बेटा! क्या बात है, उधर मैदान की तरफ क्यों देख रहे थे?

सुमित– पापा! मैदान में मेरे दोस्त खेल रहे थे तो मैं उनको देख रहा था।

सुनील– तो तुम उनके साथ खेलने क्यों नहीं चले गये?

सुमित– पापा! मम्मी मुझे खेलने जाने नहीं देती। मैं कहता हूँ तो मुझे डाँटती है।

सुनील– दिव्या! तुम बच्चे को खेलने क्यों नहीं जाने देती?

दिव्या– इसके दोस्त ढंग के नहीं है, घर पर आए तो क्रॉकरी का सेट खराब कर गए। ऐसे दोस्तों के साथ खेलने से यह बिगड़ेगा या सुधरेगा?

सुनील– दिव्या! तुम बच्चों का स्वभाव नहीं जानती। कभी कोई गलती हो जाने से उन्हें इतनी बड़ी सज़ा नहीं दी जा सकती। खेलते-खेलते या असावधानी से कोई नुकसान हो भी जाता है तो इसका मतलब यह तो नहीं कि तुम उनके मेल-जोल एवं खेलने पर प्रतिबन्ध लगा दो। क्या इस प्रतिबन्ध से बच्चा सुधरा हुआ रहेगा? इस पर विचार करो।

दिव्या– आप क्या चाहते हैं, मैं उन निकम्मे दोस्तों के साथ खेलने भेज दूँ?

सुनील– क्या तुम नहीं देख रही हो कि सुमित जब उन बच्चों के साथ खेलता था तो सदैव प्रसन्न रहता था। अपने स्कूल का गृहकार्य भी समय पर पूरा कर लेता था तथा परीक्षा में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होता था।

दिव्या– दिनभर खेलते रहने से कोई पढ़ाई नहीं होती, खेलने नहीं जाने से अभी इसके पास अधिक समय है, यह पढ़ाई क्यों नहीं करता?

सुनील– दिव्या! तुम समझती नहीं हो, बच्चों के मनोविज्ञान को। बच्चे प्रसन्न रहेंगे तो

अपना काम मन लगाकर करेंगे। मैं यह नहीं कहता कि यह दिन भर खेले, किन्तु कुछ समय के लिए खेलने की अनुमति हो तो बच्चों का विकास ज्यादा अच्छे ढंग से होता है। खेलने से शारीरिक एवं मानसिक शक्ति का विकास होता है। तुम देखती नहीं हो कि यह कुछ दिनों से गुमसुम रहता है, पढ़ने के समय में भी यह टी.वी. के आगे बैठा रहता है। तुम सुमित का विकास चाहती हो तो इसे इसके दोस्तों के साथ थोड़ी देर खेलने की छूट दो।

दिव्या– मुझे उन बच्चों से नफरत है। मैं उन्हें माफ नहीं कर सकती।

सुनील– दिव्या तुम बड़ी हो। बच्चों से हुई गलती को माफ कर सकती हो, यही तुम्हारा बड़प्पन है। बच्चे तो गलती कर भूल जाते हैं, तुम उसे अभी तक लेकर बैठी हो। क्रॉकरी की एक-दो प्लेट टूट भी गई तो क्या हो गया, वह नई भी आ सकती है।

दिव्या– (बीच में बोल पड़ी) मेरा पूरा क्रॉकरी का सेट बिगड़ गया, यह क्या इतनी सी बात है? और तो और यह सेट मेरा भाई विदेश से मेरे लिए बहुत प्यार से लाया था। इसके दोस्तों ने उसको तोड़ दिया और आप चाहते हैं कि मैं उनको माफ कर दूँ? यह कभी नहीं हो सकता।

सुनील– क्रॉकरी के सेट के लिए इतना राग ठीक नहीं। बच्चों की खुशी इससे बड़ी है। क्रॉकरी तो निर्जीव है, टूट गई तो उससे भी अच्छी आ सकती है, किन्तु बच्चों का मन टूट गया एवं उनका भविष्य खराब हो गया तो उसकी पूर्ति किसी प्रकार सम्भव नहीं है। तुम्हारा वस्तुओं के प्रति इतना गहरा राग ही तुम्हारे हृदय की उदारता को कम कर रहा है, इस राग को तोड़ने पर तुम्हें भी आनन्द का अनुभव होगा तथा बच्चे की खुशी को देखकर तुम दुगुनी खुशी का अनुभव करोगी। अब तुम यदि सुमित की खुशी चाहती हो तो उन खेलते हुए बच्चों को मैं इधर बुलाता हूँ और तुम उनसे माफी माँग लो। (सुनील आवाज देकर मैदान में खेल रहे सुमित के दोस्तों, अमित एवं मुदित को बुलाता है। अंकल की आवाज सुनकर बच्चे चौंकते हैं तथा एक बार विचारकर दौड़कर आते हैं तथा घर के अहाते में प्रवेश करते हैं।)

मुदित, अमित– अंकल, नमस्ते!

सुनील– आओ बच्चों! यहाँ बैठो (दूसरे सोफे की ओर इशारा करते हुए) तुम दोनों से कुछ बात करनी है। आंटी (सुमित की मम्मी) ने तुमको उस दिन डाँटा और सुमित के साथ खेलने पर भी प्रतिबन्ध लगा दिया, इसका मुझे खेद है। आज तुम्हारी आंटी तुमसे गले मिलकर क्षमा मांग रही है।

(दिव्या खड़ी होकर बच्चों से गले मिलती है तथा उनको अपने घर के भीतर आने के लिए कहती है। यह देखकर सुमित का चेहरा प्रफुल्लित हो जाता है। तीनों दोस्त फिर से एक हो जाते हैं। सभी साथ बैठकर नाश्ता करते हैं।)

क्षमाभाव मनुष्य का बहुत बड़ा गुण है, जिसके सद्भाव में ही प्रेम सुरक्षित रहता है। परिवार के सदस्य हों या मित्र, छोटी-छोटी गलतियों को माफ करके ही आनन्द से रह सकते हैं। हर बात का बुरा मानना क्षमाशीलता में बाधक है, इसलिए हृदय को उदार बनाकर स्नेह एवं प्रेममय वातावरण में जीने का आनन्द लेना चाहिए। जैन परम्परा का क्षमापर्व भी यही संदेश देता है-

क्षमा आनन्द का द्वार है, पनपता जहाँ कलह नहीं।
मैत्री बनती प्रगाढ़ इससे, मन-मुटाव का काम नहीं।।

प्रश्नः-

1. क्षमा करने का क्या अभिप्राय है?
2. मित्रों के साथ खेलने में बालकों को आनन्द क्यों आता है?
3. सुमित की मम्मी के बारे में आपके क्या विचार हैं?
4. क्रॉकरी का सेट मूल्यवान था या प्रेमभाव?
5. प्रेमभाव को सुरक्षित रखने के लिए क्या आवश्यक है?
6. क्या आपने कभी अपने मित्र को दिल से क्षमा किया? यदि किया, तो एक घटना का उल्लेख करें।
7. चित्त का शान्त रहना क्यों आवश्यक है?

बाल-स्तम्भ [जून-2013] का परिणाम

जिनवाणी के जून-2013 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'आगम-बोध' कथा के प्रश्नों के उत्तर 65 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक 30 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	लक्की के. जैन-दौड्डबालापुर (कर्नाटक)	29.5
द्वितीय पुरस्कार-300/-	अर्पित जैन-जोधपुर (राज.)	25.5
तृतीय पुरस्कार- 200/-	पायल मेहता-ब्यावर(राज.)	24
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	हर्ष कोठारी-जयपुर(राज.)	23.5
	प्रखर गाँधी-चित्तौड़गढ़(राज.)	23
	भूमि सिंघवी-जोधपुर (राज.)	23
	अरिष्ट कोठारी-अजमेर (राज.)	23
	अखिल जैन-जयपुर(राज.)	23

आओ स्वाध्याय करें

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्

द्वारा प्रायोजित त्रैमासिक प्रतियोगिता (33)

प्रस्तुत त्रैमासिक प्रतियोगिता-परीक्षा "मई-जून-जुलाई-2013" के अंकों पर आधारित है। इसमें कुल 50 प्रश्न पूछे गए हैं, जिनके उत्तर नमन मेहता सुपुत्र श्री सुमतिचन्द मेहता, गजराज नेमीचंद जैन किराणा मर्चेण्ट, सदर बाजार, पीपाड़ शहर-342601(राज.) के पते पर 15 सितम्बर 2013 तक मिल जाने चाहिए। सम्पर्क फोनः- 94141-16766

(अ) निम्न पंक्तियाँ कौनसे शास्त्र से उद्धृत है, लिखिए-

1. कडाण कम्माण ण मोक्ख अत्थि।
2. गर्हा से अपुरस्कार अर्थात् दूसरों से पुरस्कार पाने की भावना घटती है।
3. कुमित्र की बजाय जंगल में रहना अच्छा है।
4. हिंसा आदि से आत्मा की यहाँ भी हानि होती है और आगे भी।
5. पंच समवाय मिल्या होत है कारज सब।
6. सहिए आयगवेसए स भिक्खू।
7. स्वभाव से ही सब उत्पन्न होते हैं।
8. आणाए मामगं धम्मं।
9. अढ़ाईद्वीप को समय क्षेत्र भी कहा गया है।
10. आया णे अज्जो! सामाइयस्स अट्ठे।
11. जिसके भीतर मोह का अन्त हो गया, उसके दुःख का भी अन्त हो गया।
12. असुहो पावं त्ति हवदि जस्स।
13. श्रेष्ठ मुनिवर ज्ञानादि के आश्रय से मोक्षमार्ग में विचरण करते हैं।
14. श्रेणिक राजा और चेलणा रानी के भौतिक रूप-सौन्दर्य एवं सुख को देखकर भगवान के अनेक साधुओं ने नियाणा किया।
15. हे भगवन्! क्या देवेन्द्र देवराज सनत्कुमार भवी यावत् चरम हैं?

(ब) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

16. संघ का एक-एक ...... अपना-अपना कार्य करे।
17. सेवा कभी .... नहीं हो सकती।

18. कषाय छोड़कर .... की ओर निरन्तर बढ़ते जाना है।
19. .... से भी मनोभावों पर असर पड़ता है।
20. जो देखा जाय वह है अनात्मा, जो ....जाय वह है परमात्मा।
21. प्रभु को श्रद्धावश .... कहा।
22. .... करने पर शरीर और मन पर नियंत्रण रखने पड़ते हैं।
23. भगवान ने जो मंत्र बताया, वह ......को दूर कर सकता है।
24. .... से हो जीवन निर्मित, निर्जरा से करें......... को सर्जित।
25. उपाध्यायश्री .... की उत्तम निधि हैं।
26. मोक्ष प्राप्त करना प्रत्येक जीव का .... है।
27. कर्मों को मूल कारण मानेंगे तो .... में विषमता नहीं आयेगी।
28. एक शंका का दोष ...... विकेट एक साथ गिराता है।
29. शाश्वत सुख के लिए प्रतिपल प्रयत्न करने वाले जीव ......कहलाते हैं।
30. आप श्रुत अभ्यासी की पात्रता और श्रुत की .... का पूरा ध्यान रखते हैं।

(स) मुझे पहिचानो (केवल एक शब्द में)-

31. मेरे क्षेत्र में लोग भूल और भ्रम के शिकार हैं।
32. मुझमें प्रभु महावीर के अनुभव युक्त वचन हैं।
33. ज्ञान, दर्शन, तीन गुप्ति की अपेक्षा मैं पाँच प्रकार का हूँ।
34. मैंने 16 वर्ष की किशोरावस्था में मासखमण किया।
35. मुझसे छूत के रोगी के समान बचना चाहिए।
36. मैं अविस्मरणीय पुरस्कार की उपलब्धि हूँ।
37. मैं वह भेंट हूँ जो भव-परम्परा से बचाने वाली हूँ।
38. मुझ पुरस्कार की उपासना में 12 माह में 12 पौषध करना है।
39. मेरे पथ से भटकने पर महा सर्वनाश होता है।
40. हम निवृत्ति की प्रेरणा करते हैं।
41. मुझे सोच-समझकर चरण धरने चाहिए।
42. बीते हुए का चिंतन नहीं करना मेरी औषधि है।
43. हम अधिकतम 15 भवों में मुक्ति प्राप्त कर ही लेते हैं।
44. साध्वी डॉ. मंजुश्री द्वारा लिखित मुझ शोधग्रन्थ में कुल कितने अध्याय हैं?
45. मेरा तो पापी पर भी सुप्रभाव है।

(द) निम्न शब्दों को तोड़िए और पुनः जोड़िए तथा 'आगमवाणी' शीर्षक के अन्तर्गत आयी आगम अथवा अर्थ की पंक्ति बनाइए– सही रूप में लाइए–

जैसेः- कात्या अनर्थ सारता गाह गृहै धुलगी।

उत्तरः- अनगार का अर्थ है गृह त्यागी साधु।

46. अपक्ष का मौका है गारथ पथन।
47. वरण्ण मिकुओ अत्ताग वारं असो माणसं।
48. जीना अविवशी हैं।
49. नशा कीरती कदचित्त हहीं एसी।
50. संजीव नेता हर अबाक देह में है।

पाठक-प्रतिक्रिया

श्री सम्पतराज चौधरी

जुलाई 2013 माह की 'जिनवाणी' में आपका शोधालेख 'Concept of Śrutajñāna' पढ़ा। 'श्रुतज्ञान' को आपने अनेकानेक प्राचीन दिगम्बर एवं श्वेताम्बर ग्रन्थों के प्रमाण के साथ क्रमबद्ध और तार्किक रीति से अनेक आयामों में अपनी सुबोध शैली में परिभाषित कर अन्त में निष्कर्ष निकाला कि वस्तुतः 'श्रुतज्ञान' आत्मज्ञान है। नन्दीसूत्र और आवश्यक निर्युक्ति में श्रुतज्ञान को जिन चौदह वर्गों में विभक्त किया है, उनमें अजैन शास्त्रों यथा 'रामायण' और 'महाभारत' को मिथ्याश्रुत की श्रेणी में लिया है। जिसे आपने समीचीन नहीं माना, क्योंकि सम्यक् दृष्टि के अभाव में किसी के लिए कोई भी शास्त्र मिथ्याश्रुत हो सकता है। शास्त्रों की वाणी को समझने के लिए इस तरह की अनेकान्त दृष्टि अत्यावश्यक है। लेख अत्यन्त सुन्दर और ज्ञानवर्धक है। हिन्दी भाषा की तरह अपनी बात कहने के लिए अंग्रेजी भाषा पर भी आपका समान अधिकार है, यह इस लेख से ज्ञात हुआ। डॉ. श्वेता जैन का शोधालेख 'पंचसमवाय सिद्धान्त : एक समीक्षा' भी इसी तरह का है। एक नई चीज इस बार 'जिनवाणी' में देखने को मिली– महासतीवर्या यशप्रभाजी और पद्मप्रभा जी के आचार्यप्रवर की प्रशस्ति में दो आलेख। इससे पता चलता है कि रत्नसंघ की उदीयमान साध्वी–वर्ग में अपने भावों को सुन्दर साहित्यिक शैली में अभिव्यक्त करने की अपार सम्भावनाएँ हैं, जिन्हें समुचित रूप से उजागर करने की महती आवश्यकता है। आशा है ऐसे आलेख आगे भी आते रहेंगे। 'जिनवाणी' को निरन्तर नई दृष्टि प्रदान करने के लिए आपका अभिनन्दन।

–कार्याध्यक्ष, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (40)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग तीन-सामान्य श्रुतधर खण्ड-प्रथम)** के आधार पर संचालित मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह तेरहवीं किश्त है। प्रतियोगी के उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 सितम्बर 2013 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - *पूर्णिमा लोढ़ा, अध्यक्ष*

जैनधर्म का मौलिक इतिहास (भाग-3)

(पृष्ठ सं.761 से 806 तक से प्रश्न)

मुझे पहचानोः-

1. मैं राजा भीम का क्षत्रिय कुलोत्पन्न मामा था।
2. मैंने अन्नजल का त्याग कर इंगितमरण का वरण किया।
3. मैं सबके लिए अविश्वसनीय हूँ।
4. मेरा विवाह कुमारी लीलावती से कर दिया।
5. मैंने सूराचार्य का नगर में प्रवेश करवाया।
6. मैं दुराचारी, दुष्ट, अत्याचारी होने के साथ-साथ गोमांस भक्षक हूँ?
7. मैं अश्वारोहियों के घेरे से बाहर निकला।
8. मैंने चैत्यों के निर्माण के लिये 12 लाख मुद्राएँ प्रदान कीं।
9. मैंने गाँव-गाँव में लोगों को जैनधर्म के प्रति आस्थावान बनाया।
10. मैं सूराचार्य के नाम से लोक-विश्रुत हुआ।

किसने-किसको कहा:-

11. आप, मैं और आत्मीयजन यहाँ श्मशान में कैसे आये हैं?
12. मैं आपके अतिरिक्त किसी अन्य की स्तुति कैसे कर सकता हूँ?
13. हम तुम्हारे इस होनहार पुत्र भीम की याचना करते हैं।
14. मैंने यह सम्पूर्ण राज्य तुझे दे दिया है।
15. इस तिलकमञ्जरी ग्रन्थ का शोधन कौन करेगा?

नीचे दिये गये प्रश्न पुस्तक के नहीं हैं, बाहर के हैं। इनके उत्तर में जानवरों के नाम लिखना है:-

16. दरवाजा बंद रखो।
17. बरगद हाथ के बाहर है।
18. बताशे रखो।
19. मिरगा यकीनन छोटा है।
20. बक-बक रीता करती रहती है।
21. साहिर नहीं गया।
22. मेरी छतरी लाओ।
23. कहाँ गिलसिया रहती है।
24. विवेक छुआछूत मानता है।
25. लड़ना घर में मना है।

नामाक्षरी वंदन

श्री दिनेश ललवानी

जग में ज्ञान फैलाये-गुरु हस्ती नाम सुहाये
यत्र-तत्र-सर्वत्र ही जय जयकार है।
हजारों लाखों श्रावक-श्राविका प्रतिबोध है पाये
स्वर में थी अद्भुत शक्ति नई चेतना लाये
तीर्थ स्वरूप पीपाड़ नगरी श्रद्धा धाम कहाये
हीरा गुरुवर रत्न संघ की बगिया को महकाये
राह निर्मल बनाये - प्रेरणादीप जलाये।।1।।

माला के जगमग मोती मान गुरु को वंदन
नतमस्तक होकर करता श्रद्धा भाव समर्पण
गुरु हस्ती - जय हीरा और मान गुरु गुण गाये
रूपा नंदन गुरु हस्ती का निश दिन ध्यान लगाये
'दिनेश' है शीश नवाये, नामाक्षरी बनाये।।2।।

-ग्रीन व्यू अपार्टमेन्ट, सी-4, अपर भानू नगर, सिलीगुड़ी (प. बंगाल)

आचार्य हीराचन्द्र दीक्षा अर्द्धशताब्दी विशेषांक हेतु रचनाएँ आमन्त्रित

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, आगमज्ञ, चारित्रनिष्ठ, जिनशासन गौरव, परमपूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी महाराज सा. के संयमनिष्ठ जीवन का यह दीक्षा स्वर्ण-जयन्ती वर्ष चल रहा है। आगामी कार्तिक शुक्ला षष्ठी, 8 नवम्बर, 2013 को आपके संयममय जीवन के 50 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं तथा 51 वें वर्ष में प्रवेश हो रहा है। इस अवसर पर हम परमपूज्य आचार्यप्रवर पर जिनवाणी का एक विशेषांक उनके साधनामय जीवन के वैशिष्ट्य पर प्रकाशित कर रहे हैं, जिसमें आचार्यप्रवर के जीवन के विविध पहलुओं एवं उनकी कृतियों पर प्रेरणाप्रद सामग्री प्रकाशित की जाएगी। एतदर्थ श्रद्धालु श्रावकों एवं विद्वद्जनों से अनुरोध है कि वे आचार्यप्रवर के जीवन से सम्बद्ध निम्नांकित बिन्दुओं में से किसी एक पर अपने आलेख/संस्मरण/ भजन/स्तवन आदि 10 सितम्बर 2013 के पूर्व जिनवाणी पत्रिका के सम्पादकीय कार्यालय, नेहरूपार्क, जोधपुर के पते पर प्रेषित कर अनुगृहीत करें।

1. आचार्य प्रवर का बाल्यकाल एवं वैराग्यमय जीवन
2. आचार्य हस्ती के सान्निध्य में जीवन का विकास
3. गुरु-भक्ति के आदर्श
4. चातुर्मासों की उपलब्धियों के विशेष प्रसंग
5. प्रभावक प्रवचनशैली
6. अनुशासन की दृढ़ता
7. आचारनिष्ठा में अग्रणी
8. आचार्यश्री के प्रमुख अभियान
9. कुशल संघनायकत्व
10. सद्गुणों के पुंज
11. ध्यान-मौन आदि की साधना
12. दूरदर्शिता एवं निर्णय-शक्ति
13. दक्षिण भारत में धर्मप्रचार
14. आचार्य हीरा की दृढ़ संकल्पशक्ति
15. आचार्य हीरा की आगम निष्ठा
16. संस्कार-प्रबोधन
17. सामायिक-स्वाध्याय की प्रेरणा
18. व्यसन-फैशन के त्याग की प्रेरणा
19. आचार्यकाल में नूतन उपक्रम-
   (अ) आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड
   (ब) वीतराग ध्यान शिविर
20. शीलव्रत आराधन
21. रात्रि-भोजन-त्याग अभियान
22. प्रतिक्रमण-स्मरण अभियान
24. सामूहिक सामायिक आराधना

जिनवाणी के पाठकों से विनम्र अनुरोध

जिनवाणी हिन्दी मासिक के पाठकों से अनुरोध है कि यदि आपके यहाँ एक ही पते पर एक से अधिक जिनवाणी पत्रिका आ रही हो, आपके यहाँ उन सभी का उपयोग/स्वाध्याय नहीं हो रहा हो तो आप इससे जिनवाणी कार्यालय को अवगत करावें, जिससे आपके यहाँ की अनुपयोगी पत्रिका किसी अन्य पाठक के लिए उपलब्ध हो सके।अनुरोध कर्ता-*मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर*

जीवन-बोध क्षणिकाएँ

श्री यशवन्तमुनि जी म.सा.

भोग-रोग

यह जीव देह-रोग का
उपचार करने का उपाय करता है,
पर भोग-रोग के उपचार का
विचार क्यों नहीं करता है?
देह का रोग तो एक
भव में मारता है,
पर भोग का रोग
भव-भव में मारता है।

परिचय-त्याग

जिसकी लोगों से नहीं,
स्वयं से ही बात करने में
है ज्यादा रुचि,
उसी की साधना है समूची,
और उसी की आत्मा
शाश्वत धाम पहुँची।

पत्रिका की उत्कृष्टता हेतु लेखकों से निवेदन

जिनवाणी मासिक पत्रिका की गुणवत्ता निरन्तर अभिवृद्ध होती रहे, एतदर्थ लेखकों एवं रचनाकारों से निवेदन है कि वे अपनी रचनाएँ एवं आलेख उत्कृष्ट से उत्कृष्टतर बनाकर भिजवाने का श्रम करें। जिनवाणी पत्रिका के विविध स्तम्भों में प्रकाशित श्रेष्ठ लेखों एवं रचनाओं को पुरस्कृत किया जाता है। विगत चार वर्षों से यह क्रम चल रहा है। शोधालेख भेजते समय प्रामाणिकता हेतु सन्दर्भ युक्त पाद टिप्पणों का पूर्ण उल्लेख आवश्यक है। आध्यात्मिक, नैतिक मूल्यों से युक्त आलेख, कविता, कथा आदि का स्वागत है। वैज्ञानिक आलेखों को तभी प्रकाशित किया जाता है जब उनकी पुष्टि/तुलना जैन धर्म-दर्शन से की गई हो। सद्गुणों के आधान, जीवन-व्यवहार के शोधन की प्रेरणा देने वाली रचनाएँ जिनवाणी में सदैव स्थान पाती हैं। नारी-स्तम्भ एवं युवास्तम्भ के लिए हमें श्रेष्ठ रचनाओं की प्रतीक्षा रहती है। बाल-स्तम्भ हेतु प्रेरक कथाओं की भी आवश्यकता रहती है।

जिनवाणी पत्रिका का अब तक जो स्तर उन्नत हुआ है, उसमें लेखकों एवं रचनाकारों का योगदान प्रशंसनीय है। आपकी रचना कदाचित् विलम्ब से प्रकाशित हो अथवा प्रकाशित न भी हो तो भी निराश न हों, अपितु आप अपना प्रयास जारी रखें। एक बार प्राप्त रचनाएँ लौटाना सम्भव नहीं है, अतः उनकी एक प्रति अपने पास सुरक्षित रखें। यदि आप कम्प्यूटर से E-mail द्वारा अपनी रचनाएं भेज सकें तो इसे प्राथमिकता दें। जिनवाणी का E-mail पता है- jinvani@yahoo.co.in यदि हाथ से लिखकर भेजें तो सुवाच्य हस्तलेख हो।

आपकी रचना श्रेष्ठता का पुरस्कार प्राप्त करे, ऐसी शुभकामना है। विभिन्न स्तम्भों में 2100 रुपये से लेकर 5100 रुपये की राशि का पुरस्कार सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के पूर्व अध्यक्ष श्री पी.शिखरमल सुराणा की ओर से देय है। *-डॉ. धर्मचन्द जैन, सम्पादक*

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

Development & Impact of Jainism in India & Abroad- Editor- Gunvant Barvalia, **Publisher-** Arham Spiritual centre's SKPG Jain Philosophical & Literary Research Centre, Office No.2, Mevad Patanwala Estate, L.B.S. Road, Ghatkopar (East), Mumbai-400077 (Mah.), email-gunvant.barvalia@gmail.com, **Available at-** (1) SAPNA Book House, Banglore, Mysore, Manglore, Phone-080-40114455, www.sapnaonline.com (2) Hindi Granth Karyalaya, Hirabaug, C.P. Tank, Charni Road (East), Mumbai-400064, **Pages**-8+220, **Price**- Rs.300, **Year**-2013

It is a good effort to present the development of Jainism in various states of India and abroad with a wider impact of it. The book contains 31 articles of learned scholars on various topics. A few topics are- 1. Contribution of foreign scholars in Jain Literature and Philosophy, 2. Jain Manuscripts, Collection in foreign countries, 3. Jain Images of India in Museums abroad, 4. Contribution of NRI's to Jain shasan, 5. Development and Impact of Jainism in Asia and Asian Dwip, 6. Contribution of Jaina Philosophy to Global Philosophies, Most of the articles are centered on development and impact of Jainism in the various states of India i.e. Gujarat, Karnataka, Maharashtra, Kashmir, Bengal, Kerala, Goa, Andhrapradesh, Orissa, Bihar, Tamilnadu, Uttarpradesh, Punjab, Rajasthan, Madhyapradesh, Haryana etc. The Book covers the Northeast India, Saurashtra also. One article has been given on Virchand Gandhi, an exponent of Jainism in the west. It is useful for a general and specific reader equally. The book gives a comparative table of number of Jaina monks and nuns from 1983 to 2012.

Gunvant Barvalia is involved in Jain Agam Mission of Shri Namramuniji, which has started work of English translation of Jain Agams also.

कथाकोष प्रकरण (जिनेश्वरसूरिविरचित)- ***प्रधान-सम्पादक***-आचार्य जिनविजयमुनि, ***प्रकाशक***- (1) प्राकृत भारती अकादमी, 13-ए, मेन मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.), फोन-0141-2524827 (2) श्रीमती अंगूरी सिंघी, 18 कापसहेड़ा एस्टेट, नई दिल्ली-110037, ***पृष्ठ***- 368 (बड़ा आकार), ***मूल्य***-400 रुपये मात्र, सन् 2008 (पुनर्मुद्रण)

प्राकृत भाषा में विशाल कथा साहित्य रचा गया है। 11 वीं शती के महान् आचार्य

श्री जिनेश्वरसूरि कृत कथाकोष प्रकरण उसी श्रृंखला में एक महत्त्वपूर्ण कृति है। ये वर्धमान सूरि के शिष्य थे तथा चैत्यवासी यतिजनों के शिथिलाचार के विरोधी थे। यतिजनों का आचरण जैन शास्त्रों के अनुकूल नहीं था। जिनेश्वर सूरि ने शास्त्रार्थ द्वारा भी उन्हें पराजित किया तथा उन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचना की। इन्हीं की शिष्य परम्परा में जिनदत्तसूरि (वि.सं. 1169-1211) से विधि पक्ष प्रारम्भ हुआ जो आगे चलकर खरतरगच्छ के नाम से प्रारम्भ हुआ। इनकी रचनाओं में प्रमालक्ष्म, लीलावईकहा, षट्स्थानक प्रकरण, पञ्चलिंगी प्रकरण एवं कथाकोश की गणना होती है। कथाकोश की रचना इन्होंने प्रवचन देने के उद्देश्य से की थी। कथाकोश ग्रन्थ मूलतः प्राकृत भाषा में 30 गाथाओं में रचित है तथा इस पर वृत्ति प्राकृत गद्य में लिखी गई है। इसमें प्रमुखतः 36 कथाएँ हैं तथा 4-5 अवान्तर कथाएँ हैं। इसमें कुछ कथाएँ जिनेश्वरसूरि द्वारा कल्पित हैं। पुस्तक में शालिभद्र सिंहकुमार, मनोरथ श्रावक आदि की कथाओं के माध्यम से जैन धर्म के प्रति रुचि जागृत करने का प्रयत्न किया गया है। पूर्व में यह ग्रन्थ सिंघी जैन ग्रन्थमाला, मुम्बई से 1949 में प्रकाशित हुआ था, अब सिंघी परिवार के सौजन्य से प्राकृत भारती अकादमी द्वारा इसे प्रकाशित किया गया है।

प्रभावक चरित (आचार्य प्रभाचन्द्र विरचित)- प्रधान-सम्पादक- आचार्य जिनविजयमुनि, ***प्रकाशक***- (1) प्राकृत भारती अकादमी, 13-ए, मेन मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.), फोन-0141-2524827 (2) श्रीमती अंगूरी सिंघी, 18 कापसहेड़ा एस्टेट, नई दिल्ली-110037, ***पृष्ठ***- 22+226 (बड़ा आकार), ***मूल्य***-400 रुपये मात्र, सन् 2009 (पुनर्मुद्रण)

जैन इतिहास ग्रन्थों की दृष्टि से 'प्रभावकचरितम्' नामक संस्कृत ग्रन्थ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यह ग्रन्थ भी पहले सिंघी जैन ग्रन्थमाला मुम्बई से सन् 1940 में प्रकाशित हुआ था। प्राकृत भारती अकादमी ने इसका पुनर्मुद्रण कर ग्रन्थ सबके लिए सुलभ बनाया है। इस ग्रन्थ में विक्रम की प्रथम शताब्दी से लेकर 13 वीं शताब्दी के पूर्वभाग तक के प्रमुख प्रभावक श्वेताम्बराचार्यों का विवरण प्राप्त होता है। आचार्य हेमचन्द्र ने त्रिषिष्टिशलाका पुरुषचरित में आचार्य वज्रस्वामी के पूर्व तक का वर्णन किया था, आचार्य प्रभाचन्द्र ने उन्हीं से प्रेरणा लेकर वज्रस्वामी एवं उनके उत्तरकालीन प्रभावक आचार्यों का चरित इस ग्रन्थ में संस्कृत श्लोकों में विस्तार से प्रस्तुत किया है। इस ग्रन्थ में चर्चित आचार्यों की नामावली इस प्रकार है-1. वज्रस्वामी, 2. आर्यरक्षित, 3. आर्यनन्दिल, 4. कालकसूरि, 5. पादलिप्तसूरि, 6. विजयसिंह सूरि, 7. जीवदेवसूरि, 8. वृद्धवादिसूरि, 9. हरिभद्रसूरि, 10. मल्लवादिसूरि, 11. बप्पभट्टिसूरि, 12. मानतुङ्गसूरि, 13. मानदेवसूरि, 14. कवि सिद्धर्षि, 15. वीरगणी, 16. वादिवेताल शान्तिसूरि, 17. महेन्द्रसूरि (इनके अन्तर्गत

महाकवि धनपाल), 18. सूराचार्य, 19. अभयदेवसूरि (इनके अन्तर्गत जिनेश्वरसूरि), 20. वीराचार्य, 21. वादिदेवसूरि, 22. हेमचन्द्रसूरि। ग्रन्थ में समकालीन राजाओं, प्रधानों, विद्वानों, कवियों एवं अन्यान्य महाजनों का भी प्रसंगवश उल्लेख हुआ है। हजारों श्लोकों में रचित इस ग्रन्थ की भाषा प्रावाहिक एवं प्रासादिक है।

स्वाध्याय हेतु निःशुल्क पुस्तकें मंगवाइए

श्री जेठमल जी गुलेचा, 269, सरदारपुरा, 4बी रोड़, जोधपुर-342001 (राज.), मो. नं.-09351315749, 09314712919 से निम्नांकित पुस्तकें प्राप्त हुई हैं, सभी का मूल्य नित्य स्वाध्याय है-

1. **श्री सिद्धस्तुति** (60 पृष्ठ)- उपाध्यायश्री कस्तूरचन्दजी महाराज कृत प्राकृत स्तुति तथा श्री गौतममुनि जी प्रथम द्वारा हिन्दी व्याख्या।
2. **आगम में लेश्यापद** (101 पृष्ठ)- लेश्या के स्वरूप, प्रकार एवं लेश्या सम्बन्धी थोकड़ों से समन्वित पुस्तक।
3. **भविष्यदत्त चरित्र** (72 पृष्ठ)- जैन दिवाकर चौथमलजी म.सा. द्वारा कृत पद्यमय रचना से हिन्दी में प्रस्तुत कथानक
4. **आगम में 22 परीषह** (आगमों के आधार पर 22 परीषहों का क्रमिक विवेचन)

स्वप्निका की एक नई शुरुआत : बाल स्वप्निका

आचार्य भगवंत 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्याय भगवंत पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित गुरु चरणों में उपहार स्वरूप नियमों से नियमित, गुणों से गुम्फित, प्रेरणाओं से पूरित, चित्रों से चित्रित, प्रतियोगिताओं से प्रतिष्ठित 'स्वप्निका' के ही एक भाग के रूप में बाल वर्ग हेतु चेन्नई शाखा ने "बाल स्वप्निका" तैयार की है, जिसमें शिविर, पाठशाला एवं अन्य माध्यमों से छोटे-छोटे बच्चों द्वारा भी नियमों के निमित्त से जीवन को निर्मित, दिनचर्या को नियमित किया जा रहा है। चेन्नई युवक संघ की इस रचनात्मक दृष्टि का प्रयास जाज्वल्यमान जिनशासन की जाहोजलाली में जलतेदीप के समान जगमगाता रहेगा। चेन्नई युवक संघ की तरह ही अन्य क्षेत्र भी 'स्वप्निका' हेतु अपनी रचनात्मकता को 10 नवम्बर 2013 को मुख्य लिखित परीक्षा का ध्येय रखते हुए एक अभिनव सफल प्रयोग के रूप में सामने ला सकते हैं। शुभाभिवादन!

नोटः- जिन महानुभावों के पास "स्वप्निका" है और उपयोग में नहीं आ रही है, वे सर्वप्रथम उपयोग में करने का लक्ष्य रखावें अन्यथा अन्य उपयोगीजन हेतु सवाईमाधोपुर चातुर्मास स्थल पर भिजवाने का लक्ष्य रखावें।

-सुमेरसिंह बोथरा-निदेशक, स्वप्निका प्रतियोगिता समिति, जयपुर (राज.)

समाचार-विविधा

आचार्यप्रवर का सवाईमाधोपुर के महावीर भवन में चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश

हर भक्त में है उल्लास : गुरुदेव पधारे वर्षावास

तप-त्याग का हुआ आगाज : धर्मध्यान का लग रहा ठाट

आगममर्मज्ञ, जिनशासन गौरव, जन-जन की आस्था के केन्द्र **परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा.**, महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा का 17 जुलाई, 2013 को प्रातः 8.30 बजे वर्षावास हेतु सवाईमाधोपुर शहर स्थित महावीर भवन में पदार्पण हुआ। मंगलमय प्रवेश के एक दिन पूर्व कर्णाकर्णि सूचना के आधार पर श्रद्धालु भक्तों का प्रातःकाल आलनपुर में सैलाब उमड़ पड़ा। पूज्यप्रवर ने प्रातः 7.20 बजे उपस्थित जन-समूह को मांगलिक प्रदान कर अपने चरण सवाईमाधोपुर शहर की ओर बढ़ाये। ज्यों-ज्यों आचार्य भगवन्त के चरण आगे बढ़ रहे थे, जन सैलाब उमड़ता जा रहा था। पूज्य आचार्य भगवन्त जब सवाईमाधोपुर के प्रवेश द्वार भैरू दरवाजा पर थे, तो विहार में साथ चल रहे श्रावक-श्राविकाओं का अंतिम छोर सुदूर आश्रम से आगे अस्पताल तक नजर आ रहा था। विचरण विहार के दौरान प्रकृति भी पूरा सहकार कर रही थी। सूर्य बादलों की ओट में छिप गया था। विहार-यात्रा में 4 से 5 हजार की संख्या में श्रावक-श्राविका जय-जयकार करते हुए चल रहे थे। जयघोष के समवेत स्वर समूह में अनेक स्थानों से गूंज रहे थे। सवाईमाधोपुर में चातुर्मासार्थ प्रवेश का विहंगम दृश्य अनुपम एवं अविस्मरणीय रहा।

पूज्य गुरुदेव के मंगल प्रवेश के अनन्तर महावीर भवन में प्रातः 9 से 12 बजे तक धर्मसभा आयोजित हुई। **पूज्य आचार्यप्रवर एवं संतवृन्द** ने "अरिहंत जय-जय, ओम शांति-शांति" आदि प्रार्थनाएँ उच्चरित की, जिससे सभा में नीरवता छा गई। इस अवसर पर व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 10 भी पधारे, जिनका मंगल-प्रवेश समता भवन में 12 जुलाई को हो गया था। पूज्य आचार्यप्रवर एवं संतमण्डल के पावन पदार्पण पर अभिवन्दन का कार्यक्रम **संघमंत्री श्री पारसमल जी बोहरा** ने संचालित करते हुए कहा कि 25 वर्षों के पश्चात् रत्नसंघ के आचार्यप्रवर-का चातुर्मास प्राप्त कर हमारा हृदय गद्गद् है। उल्लेखनीय है कि पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. ने

बंसल भवन में 1974 का तथा महावीर भवन में 1988 का चातुर्मास सम्पन्न किया था। इस दृष्टि से 25 वर्षों पश्चात् संघनायक का चातुर्मास हो रहा है। हम इस चातुर्मास का उपयोग गुरुभगवन्त की सन्निधि में अधिकतम तप-त्याग प्रत्याख्यान एवं धर्माराधन द्वारा करेंगे।

धर्मसभा में श्राविका मण्डल द्वारा प्रस्तुत मंगलगान के पश्चात् सर्वप्रथम श्रावकों ने अपनी भावाञ्जलि व्यक्त की। **पोरवाल संघ के मंत्री श्री सुरेशचन्द जी जैन, कुश्तला** ने अपनी भावाभिव्यक्ति में कहा कि पूज्य गुरुदेव पोरवाल क्षेत्र के छोटे से छोटे गाँव को फरसकर यहाँ पर पधारे हैं, अब हमारा भी कर्तव्य है कि हम अधिक से अधिक धर्माराधन करें। पूज्य आचार्यप्रवर का पहला मिशन रात्रि-भोजन त्याग का है एवं दूसरा मिशन हर घर में एक व्यक्ति प्रतिक्रमण का जानकार बनाने का है। युवा पीढ़ी का दायित्व है कि वह इस क्षेत्र में आगे आए। **श्री चन्द्रप्रकाश जी कजगांव** ने कहा कि पोरवाल क्षेत्र में पहली बार प्रवेश का भव्य दृश्य देखने को मिला। मन की वीणा झंकृत हो गई, रोम-रोम पुलकित कर दिया। आपश्री का स्वागत। आप आए निधि मिल गई, हृदय की कली-कली खिल गई। **श्रावक संघ के संरक्षक श्री कपूरचन्द जी जैन** ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि सवाईमाधोपुर का अहोभाग्य है कि पूज्य आचार्य भगवन्त के वर्षावास का लाभ मिला है। इस प्रसंग को पाकर पूरी नगरी धर्ममय बन जाये। **श्री कुशलचन्द जी गोटेवाला,** संयोजक-स्वाध्याय संघ ने कहा कि हम गुरु वचनों का मान करें, सामायिक स्वाध्याय जो आत्मोथान के कार्य हैं, उनमें पूर्ण सहभागिता करें। क्षेत्र में स्वाध्यायियों की प्रतिष्ठा में प्रगति हो।

पोरवाल संघ एवं तेरापंथ सभा के पूर्व मंत्री श्री रतनलाल जी जैन ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि पूज्य आचार्य भगवंत बहुत सरल हैं तथा सम्प्रदाय भावना से कोसों दूर हैं। आप आदर्श नगर अणुव्रत भवन में विराजे एवं सम्प्रदाय विहीन वातावरण का सर्जन किया। आपने आलनपुर में बड़ी दीक्षा के साथ वहाँ से प्रवेश फरमाने की हमारी विनति को मान देकर दो-दो लाभ प्रदान किये, यह आपकी उदारता का परिचायक है। **श्री श्यामलाल जी जैन, मंत्री समता संघ** ने कहा कि हम आचार्यप्रवर के मंगल प्रवेश पर समता संघ की ओर से हार्दिक अभिनन्दन करते हैं। संघ के सभी भाई-बहिन पावन सन्निधि का पूरा लाभ लें। **तेरापंथ सभा के अध्यक्ष श्री श्रीचन्द जी जैन** ने कहा कि सवाईमाधोपुर चातुर्मास के प्रवेश पर हम कृतज्ञ हैं। हम तेरापंथ के सभी भाई-बहन आपके सान्निध्य का पूरा लाभ लेंगे। **श्री बाबूलाल जी जैन 'उज्जवल'-मुम्बई** ने कहा कि पूज्य आचार्यप्रवर का स्वाति नक्षत्र के पुण्य योग में पदार्पण हुआ है। समग्र जैन समाज में आप ही ऐसे आचार्य हैं जिनके पावन मुखारविन्द से सबसे अधिक शीलव्रत के खंद हुए हैं।

जयपुर संघ के मंत्री **श्री विमलचन्द जी डागा**, संघ के राष्ट्रीय **महामंत्री श्री आनन्द जी चौपड़ा**, युवक परिषद् के **राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जितेन्द्र जी डागा, श्री उम्मेदचन्द जी जैन जरखोदा, श्री राकेश जी जैन-सुमेरगंज मण्डी, श्री अंकित जी जैन-बजरिया, श्रीमती रामजानकी बाई-जैनपुरी** आदि ने भी अपने विचारों को अभिव्यक्ति दी एवं चातुर्मास से अधिकाधिक लाभ लेकर इसे दीप्त बनाने की भावना व्यक्त की। **शासनसेवी प्रमुख श्रावक श्री राधेश्याम जी जैन गोटेवाला** ने सभी आगन्तुक महानुभावों के प्रति असीम आभार की अभिव्यक्ति की।

इस अवसर पर महासती-मण्डल एवं संतवृन्द ने भी विचार व्यक्त किए। **महासती श्री भक्तिप्रभा जी म.सा.** एवं **महासती श्री स्नेहलता जी म.सा.** ने फरमाया कि जन-जन की आस्था के केन्द्र पूज्य आचार्य भगवन्त इस नगरी में पधार आये हैं। आपके पदार्पण से यहाँ का कण-कण प्रमुदित है। जिधर देखो उधर भक्तों की रेलमपेल नज़र आ रही है। **श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा.** ने समवेत स्वर में दुनिया में देव अनेको हैं भजन प्रस्तुत करते हुए कहा कि चातुर्मास की चमक बढ़ाने के लिए आप कषायों के चौक का शमन करें, उलझी हुई सुप्त आत्माओं को जगाने के लिए सप्त ऋषि मण्डल नक्षत्रों सहित आया है। **श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा.** ने "उठो नर-नारियाँ जागो, जगाने गुरु पधारे हैं...।" भजन से जन समुदाय को प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि चातुर्मास में आपको स्वदेश में अर्थात् निज स्थान में लौटना है और सही अर्थों में यही प्रवेश प्रसंग का भाव है। आप भावों के साथ आत्मा को समुज्ज्वल बनाएं।

महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. ने फरमाया कि यहाँ के जन-' सैलाब को देखकर ऐसा लग रहा है जैसे समवसरण की रचना हो रही हो। भक्ति की शक्ति का आज प्रत्यक्ष रूप देखने को मिला है। ऐसा अनुभव हो रहा है जैसे भगवान महावीर के राजगृही नगरी में पधारने पर आगम में वर्णित धर्मसभा का स्वरूप हो। यहाँ पूज्य गुरुदेव आचार्य हस्ती ने स्वाध्याय का बीजारोपण किया था। आज अष्ट सम्पदा के धारी पूज्य आचार्यप्रवर हीराचन्द्रजी कृपाकर चातुर्मास करने पधारे हैं। आचार्यश्री ओल्ड भी हैं, बोल्ड भी हैं तो गोल्ड भी हैं। आपके विहार के समय सूरज भी बादलों की ओट ले साता पहुँचाने में सहायक बन रहा था। आचार्य श्री स्वयं उदार हैं तो प्रकृति भी उदारता का परिचय दे रही है। आपको उदारता के साथ तेजस्वी बनना है एवं चातुर्मास को अविस्मरणीय बनाना है।

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने फरमाया कि स्वागत गान गाया जा रहा है, किन्तु सच्चा स्वागत है, जैसा कि योगेशमुनि जी ने कहा, अपने आप में अवस्थित

होना। अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत सुख हर आत्मा में रहा हुआ है। पाप का परित्याग कर धर्म का आचरण करने पर अक्षय अनन्त से एकाकार हो यह जीव परमात्मा बनता है। इस दिशा में प्रवेश ही सच्चा प्रवेश है। **यह समझने की आवश्यकता है कि जिस प्रकार मुझे सुख प्रिय है वैसे ही सबको सुख प्रिय है। यह धर्म का प्रथम द्वार है कि अपराधी पर भी क्षमा की भावना हो। धर्म का दूसरा द्वार है निर्लोभता।** चाहे कोई भी क्षेत्र हो, पंथ हो, वहाँ आसक्ति का अंश तक नहीं छूने पाए। किंचित् मात्र भी लोभ न हो। **तीसरा द्वार सरलता को बताया** है। भीतर व बाहर की एकरूपता सरलता कहलाती है। **चौथा द्वार है विनयशीलता।** जीवन में विनयशीलता से ही विकास होता है। दिन में भोजन कर लेना आर्यधर्म है, रात में खाना अनार्य धर्म है, आप आर्य हो या अनार्य चिन्तन करें। **पोरवालों में पहले रात्रिभोजन का त्याग दृढ़ता से प्रचलित था। उसे पुनः प्रतिष्ठित करने की आवश्यकता है। इसी तरह प्रतिक्रमण जानने वाले भी तैयार हों।** जो सामायिक प्रतिक्रमण को नहीं जानता, जीव-अजीव तत्त्व को नहीं जानता वह कैसा धर्मी है। स्वागत का तात्पर्य धर्म के द्वार में प्रवेश करना है। चातुर्मास काल में आप वीतराग वाणी का पान कर, आचरण कर साधना आराधना में आगे बढ़ें, यही मंगल भावना है।

चातुर्मासार्थ प्रवेश के अवसर पर निकटवर्ती ग्राम-नगरों के अतिरिक्त जयपुर, बैंगलोर, जोधपुर आदि स्थानों से भी श्रावक-श्राविका उपस्थित थे।

मंगल प्रवेश होते ही धर्माराधना का बिगुल बज उठा। 20 जुलाई को नगरपालिका क्षेत्र से श्राविकाओं की ज्ञानवृद्धि हेतु एक दिवसीय शिविर आयोजित हुआ, जिसमें लगभग 300 श्राविकाओं ने लाभ लिया। 21 जुलाई को चतुदर्शी होने से प्रवचन के समय लगभग 1500 की उपस्थिति रही। उसी दिन धर्मचक्र की साधना प्रारम्भ हुई। **दोपहर 2 बजे श्रमण संघीय उपाध्याय श्री रवीन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 4 पूज्य आचार्यप्रवर की सेवा में उपस्थित हुए तथा दर्शन-वन्दन का लाभ लिया।** 22 जुलाई को चातुर्मासी पक्खी पर्व था अतः अच्छी उपस्थिति के साथ एकाशन उपवास, बेला, तेला, दया, आयंबिल, पौषध, संवर आदि की आराधना हुई। 23 जुलाई को 25 से अधिक तेलों की आराधना हुई। देई से श्राविका मण्डल गुरुदेव के चरणों में विनति लेकर उपस्थित हुआ। 24 जुलाई को सवाईमाधोपुर के पूर्व विधायक श्री हंसराज जी शर्मा ने दर्शन-वन्दन का लाभ लिया। 25 जुलाई को 10 पचोले एवं अठाई के प्रत्याख्यान हुए। दर्शनार्थियों का आवागमन निरन्तर बना हुआ है। गुरुभक्त श्री प्यारचन्द जी रांका के सुपुत्र श्री रतनलाल जी रांका सैलाना वाले, पूनमिया श्रावक श्री पारसमल जी खटोड़, श्री अमरचन्द जी सांड-विजयनगर, श्री भोपालचन्द जी पगारिया-बैंगलोर आदि अनेक श्रावकों ने गुरुचरणों में

पधारकर अपने जीवन को धन्य किया।

सवाईमाधोपुर संघ समागत साधर्मी बन्धुओं की सेवा में तत्परतापूर्वक सन्नद्ध है।

प्रमुदित हुए बजरिया वासी : गुरु महर से गई उदासी

धर्माराधन में उल्लास एवं महासती श्री तेजकंवर जी का पदार्पण

बजरिया संघ, नगरपालिका क्षेत्र में सबसे बड़ा संघ है। यहाँ साधना-आराधना की दृष्टि से साताकारी भवन है। स्टेशन, बस स्टेण्ड आदि के निकट होने से आगत दर्शनार्थी बन्धुओं के लिए अच्छी स्थिति वाला क्षेत्र है। पूज्य आचार्यप्रवर का पोरवाल क्षेत्र में पहली मार्च को पदार्पण हुआ। सभी छोटे-छोटे गाँवों/कस्बों को पदरज से पावन कर सवाईमाधोपुर नगरपालिका क्षेत्र में 27 अप्रेल को पधारे। यहाँ खेरदा, बालमंदिर कॉलोनी, महावीर नगर (मण्डी रोड़), आलनपुर, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, केशवनगर, आदर्शनगर, गौतम कॉलोनी आदि क्षेत्रों को फरसा। बजरिया वासी उत्सुकता से गुरुदेव के स्वाध्याय भवन में पावन पदार्पण की आतुरता से प्रतीक्षा कर रहे थे। गुरु भगवन्त के नहीं पधारने से सभी बजरियावासियों के चेहरों पर उदासी वाले लक्षण प्रतीत हो रहे थे। सभी की यही भावना थी कि चातुर्मास का लाभ नहीं मिला तो कोई मलाल नहीं, पर शेषकाल का लाभ तो अधिकतम मिले। भक्तों की अन्तर्व्यथा को अन्तर्यामी पूज्यप्रवर ने जाना एवं 25 जून से अग्रिम प्रवचन प्रारम्भ करवाकर 26 जून को पूज्यश्री सन्तमण्डल के साथ स्वाध्याय भवन में पधारे एवं 14 जुलाई तक प्रवचन का अमृतमय पान करवाकर रणथम्भौर सर्कल, मण्डी रोड़ होते हुए आलनपुर पधार आये। परम श्रद्धेय पूज्य आचार्य भगवंत के बजरिया स्वाध्याय भवन में 18 दिन विराजने से एवं 20 दिन वीतरागवाणी का वर्षण होने से बजरिया वासियों के चेहरों पर प्रसन्नता, कृतज्ञता, प्रमुदितता के भाव परिलक्षित हो रहे थे। प्रवासकाल में प्रातः प्रार्थना के पश्चात् युवकों की सामायिक व प्रतिक्रमण सीखने की कक्षा, प्रवचन, दोपहर में सीखने-सिखाने का कार्यक्रम, उभयकाल प्रतिक्रमण, तत्त्वचर्चा संवराधना आदि का क्रम अनवरत चला। इस प्रवासकाल में स्वधर्मि-वात्सल्य सेवा का लाभ उल्लसित भाव से बजरिया संघ ने लिया।

बजरिया विराजते समय 3 जुलाई को निवर्तमान अध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा, वर्तमान संघाध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना, अतिरिक्त महामंत्री श्री मानेन्द्र जी ओस्तवाल, चेन्नई से वीरपिता श्री रिखबचन्द जी बाघमार, वीरभ्राता श्री मानमल जी सुराणा दर्शनार्थ पधारे। भरतपुर का गोपालगढ़ संघ दो माह के लिए विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. के चातुर्मास के लाभ हेतु विनति लेकर उपस्थित हुआ। 7 जुलाई को क्षेत्रीय श्रावक एवं युवक सम्मेलन का आयोजन हुआ। मुख्यवक्ता जिनवाणी के प्रधान सम्पादक डॉ.

धर्मचन्द जी जैन थे। अध्यक्षता पोरवाल संघ के अध्यक्ष श्री बुद्धिप्रकाश जी जैन-कोटा ने की। विशिष्ट अतिथि थे- संघ के महामंत्री श्री आनन्द जी चौपड़ा एवं श्री मानमल जी सुराणा। सम्मेलन में अलीगढ़-रामपुरा, चौथ का बरवाड़ा, कुश्तला, उखलाना, जैनपुरी, जरखोदा, सुमेरगंज मण्डी, हिण्डौन, जयपुर, जोधपुर आदि स्थानों से श्रावकों की सहभागिता रही। इसी दिन सायंकाल संघ के संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत ने पूज्य गुरुदेव की सेवा में पधारकर दर्शन-वन्दन का लाभ लिया।

10 जुलाई का दिन अत्यन्त पावन रहा जब 11 वर्ष पश्चात् **व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा.** ने पूज्य आचार्यप्रवर के दर्शनों की अभिलाषा बजरिया में पूर्ण की। वे शारीरिक अशक्तता होते हुए भी उज्जैन से विहार करती हुई यहाँ पधारी। व्याख्यात्री महासती मण्डल की ओर से हृदयोदगार अभिव्यक्त करती हुई **महासती श्री दिव्यप्रभा जी म.सा.** ने फरमाया कि आपश्री के दर्शन करने के पश्चात् हम सभी को अतीव प्रमोद है। क्या अप्रतिम सौन्दर्य है, कथनी-करनी एक, आध्यात्मिक जीवन नयनाभिराम, समूचा जीवन जीवन्त है। आपकी जीवनचर्या प्रेरणा प्रदान कर रही है, समय का अधिकतम उपयोग, आपकी साधना-आराधना की उत्कृष्ट झलक, हमें सचेत कर रही है। दीक्षा के बाद मुझे तो पहली बार दर्शन हो रहे हैं। आज का दिन हमारे लिये स्वर्णिम है। गुरुवर्या सहित हम हाथ जोड़, मान मोड़- करें गुरु को वन्दना......। इस उद्गार पर **महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा.** ने फरमाया कि चलने वाला मंजिल पाता है। पुरुषार्थ करने वाला मन की भावनाओं को पूर्ण कर ही विराम लेता है। लक्ष्य प्राप्ति के लिये चरवैति-चरवैति चलता हुआ अभीष्ट पा लेता है। चलने का सामर्थ्य नहीं है, पर आत्मबल से दर्शनों की अभिलाषा से गुरु चरणों में पधार आये हैं।

व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा गुरु भगवन्त की एक दिवसीय सेवा ही कर पाये। उन्होंने महासतीमण्डल के साथ बजरिया से 11 जुलाई को विहार कर मण्डी रोड़ रात्रि साधना करते हुए 12 जुलाई को प्रातः शहर स्थित समता भवन में चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश किया तथा शहर वासियों को जागृत कर धर्माराधना में अधिक पुरुषार्थ के साथ जुड़ने के लिये आह्वान किया।

परमाराध्य पूज्य आचार्य भगवंत 14 से 16 जुलाई तक आलनपुर विराजे। 16 जुलाई को युवा परिषद् की राष्ट्रीय स्तरीय बैठक गुरु भगवन्त के दर्शन-प्रवचन-श्रवण करने के पश्चात् शहर स्थित मुणोत भवन में हुई। उसमें 70 के लगभग कार्यकारिणी के सदस्य उपस्थित थे। पधारने वालों में प्रमुख रूप से श्री बुधमल जी बोहरा,चेन्नई-संयोजक छात्रवृत्ति योजना, युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जितेन्द्र कुमार जी डागा, कार्याध्यक्ष

श्री विक्रम जी बाघमार, महासचिव श्री श्रेयांस जी मेहता, श्री राजीव जी नाहर आदि थे। गोटन से सेवाभावी समर्पित गुरुभक्त श्री ओमप्रकाश जी ओस्तवाल भी पधारे। प्रवचनामृत में पूज्य गुरुदेव ने फरमाया कि तिक्खुत्तो के पाठ में- पयाहिणं, नमंसामि, कल्लाणं, मत्थएण इन शब्दों को शुद्ध बोल, शुद्धता के उच्चारण में प्रवेश करें, मेरी भी कल सवाईमाधोपुर शहर में प्रवेश करने की भावना है। भावना सुनते ही जयघोष के स्वर गूंज उठे। पूज्य आचार्य भगवंत विगत 10 वर्षों से चातुर्मासार्थ प्रवेश की सूचना पूर्व में न देकर, मात्र एक दिन पूर्व ही यह फरमाते हैं- कल अमुक स्थान की भावना है।

उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. का चातुर्मासार्थ अहिंसानगरी कोसाणा में मंगल-प्रवेश

उपाध्यायप्रवर पण्डितरत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा, मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मासार्थ मंगलप्रवेश 17 जुलाई, 2013 को कोसाणा के स्थानक में जयघोषों के साथ सम्पन्न हुआ। पिछले कई वर्षों से कोसाणा ग्राम का बच्चा-बच्चा एक ही भावना संजोये इस प्रतीक्षा में था कि कब उपाध्यायप्रवर के चातुर्मास की स्वीकृति मिले और कब उनकी शीतल छांव में बैठ आध्यात्मिक जीवन का महत्त्व समझ आगे बढ़ें। गुरुदेव के चातुर्मास की स्वीकृति को सुनकर चारों ओर हर्ष की लहर छा गई। हर किसी को ऐसा अनुभव हो रहा था कि प्यासे को पानी मिल गया, भूखे को भोजन और मानो अन्धे को आँख मिल गई। कोसाणा से सुदूर बसे कोसाणा निवासी सभी अपनी जन्मभूमि में सपरिवार उपस्थित हो चातुर्मास को और जीवन को सफल बनाने की कार्ययोजना में समर्पित हो गये हैं।

जब उपाध्यायप्रवर संत समुदाय के साथ चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश में अपने चरण बढ़ा रहे थे, कोसाणा गाँव का चप्पा-चप्पा, कण-कण भाव-विभोर था, हर किसी का रोम-रोम पुलकित और प्रसन्नचित्त था। सभी के चेहरे खिले-खिले थे अपने आराध्य को अपनी जन्मभूमि में चातुर्मासार्थ पाकर जैन क्या जैनेतर क्या, हर कोई अगवानी के लिए उत्सुकता के साथ उपस्थित थे। देखते ही देखते कोसाणा से 2 कि.मी. दूर गुरु हस्ती स्कूल का परिसर जनसंकुल से युक्त होने लगा। चारों ओर एक ही चर्चा, एक ही नारा गुरुदेव पधारे हैं, नयी रोशनी लाये हैं। इसी गाँव में किसी जमाने में चारित्र चूड़ामणि अखण्ड बालब्रह्मचारी आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. ने यहाँ की अहिंसा भावना का समादर करते हुए गाँव का नाम अहिंसा नगरी रखा। यहाँ की आस्था और श्रद्धा हर मन में हिलोरें ले रही थी। यही कारण है कि जब कभी पूज्य उपाध्यायप्रवर श्री मान मुनि जी म.सा. से कभी कोई यह प्रश्न करता कि यहाँ अपने कितने घर हैं, प्रत्युत्तर में वे फरमाते- एक हजार घर हैं। सुनने वाले

को सुखद आश्चर्य होता, म.सा. फरमाते आश्चर्य की बात नहीं, यहाँ के जाट, माली, विश्नोई, सुथार, दर्जी आदि सभी जाति के लोग धर्म पर श्रद्धा एवं गुरु भक्ति में समर्पित हैं। यही कारण है कि आज उपाध्यायश्री के चातुर्मासार्थ प्रवेश पर मानो पूरा गाँव उमड़ पड़ा था। हर कोई उत्साह उमंग के साथ अगवानी में तत्पर था। सन्तप्रवरों ने स्थान आदि की आज्ञा लेकर जैसे ही स्थानक में प्रवेश किया, पूरा स्थानक परिसर खचाखच भरा था।

मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा. ने शान्तिनाथ भगवान की प्रार्थना करायी एवं उसके साथ ही धर्मसभा प्रारम्भ हो गई।स्थानीय वक्ताओं ने संतों के आगमन को अपने जीवन की निधि बताते हुए गुरुदेव के प्रति चातुर्मासार्थ पधारने पर आभार व्यक्त किया। संयोग से इस मंगल प्रसंग पर व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा का भी साक्षी भाव रहा। चतुर्विध संघ की इस उपस्थिति से हर कोई हर्षोत्फुल्ल था। सर्वप्रथम **महासती श्री सिन्धुप्रभा जी म.सा.** ने गुरुदेव के गुणगान करते हुए उपस्थित जन-समुदाय से चातुर्मास में भरपूर लाभ उठाने की प्रेरणा की। तत्पश्चात् **श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनि जी म.सा.** ने उपस्थित जन समुदाय में प्रसंगोचित भव्य प्रेरणा दी। तदनन्तर **श्रद्धेय श्री दर्शन मुनि जी म.सा.** ने काव्यमय पंक्तियों के साथ हिन्दी और मारवाड़ी भजन से प्रभावी प्रेरणा देकर जन समुदाय में अनूठा जोश भर दिया (स्मरण रहे श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा. इसी कोसाणा गाँव के जाये जन्मे एवं इसी माटी में पले और बड़े हुए हैं।) इसी कड़ी में **श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा.** ने अपनी प्रसिद्ध शैली में प्रभावी प्रेरणा देते हुए फरमाया कि यह चातुर्मास आपकी ज़िन्दगी के इतिहास का एक स्वर्णिम हिस्सा बन जाये, ऐसा प्रयास करें। इसके पश्चात् धीर-वीर-गम्भीर पूज्य उपाध्यायप्रवर ने अपने नपे तुले सारगर्भित शब्दों में, सभी नौजवानों को सम्बोधित करते हुए फरमाया कि कोसाणा आचार्यश्री हस्ती का कृपा पात्र क्षेत्र रहा, यहाँ गुरु हस्ती ने दो-दो चातुर्मास किए। पिछली पीढ़ी भी धर्म-कार्य में ऊर्जावान बने, सुवासित बने, संघ-भक्ति एवं गुरु-भक्ति में अग्रणी बने, यही सोचकर इस बार यहाँ चातुर्मास का मानस बनाया। यद्यपि आचार्यश्री का यहाँ के लिए मानस कम था, क्योंकि संतों की चिकित्सा सुविधा, स्वास्थ्य तथा मेरे भी स्वास्थ्य को खयाल में रखते हुए यही फरमाया कि जोधपुर उपयुक्त रहेगा, मगर आप सभी के उत्साह को देखकर ही आचार्यश्री से यही निवेदन किया कि इस बार यदि कोसाणा हो गया तो हो गया, फिर भविष्य में कम संभावना है। डॉक्टर आदि का परामर्श लेकर आपकी भावनाओं का समादर करते हुए चातुर्मासार्थ पहुँचना हो गया। आप अपने उत्साह को द्विगुणित रखें और प्रेम, संघ-भक्ति एवं आत्म-हित में संतों से प्रेरणा लेकर अध्यात्म विकास के नये आयाम रचें, जिससे चातुर्मास करना-कराना सार्थक हो सके। सम्पूर्ण

प्रवचन सभा पूज्य उपाध्यायप्रवर के संक्षिप्त सारगर्भित इस दिशा-निर्देश से गद्गद् थी, भावविभोर थी, हर्ष से रोमांचित थी। बाहर से भी अनेकानेक संघ मंगल प्रवेशार्थ उपस्थित थे। सभी कोसाणा वासियों के भाग्य को सराह रहे थे।

यहाँ चातुर्मासार्थ आने के साथ ही प्रार्थना, प्रवचन, आगम वाचनी, प्रतिक्रमण, ज्ञान-चर्चा, आदि में उत्साह उमंग के साथ हर कोई अपनी उपस्थिति दर्ज कराता हुआ बढ़-चढ़कर भाग ले रहा है। प्रवेश के साथ ही तपस्या का दौर भी गतिशील हो गया। अब तक तीन अठाइयाँ, कई बेले-तेले संपन्न हो चुके हैं और ग्यारह-ग्यारह आदि की तपस्याएँ करने वाले भी आगे बढ़ने की भावना रखते हुए पूर्ण आत्मबल का परिचय दे रहे हैं। प्रवचन में जैन-जैनेतर विशाल संख्या में उपस्थित हो देशना को सुनते हुए धन्यता का अनुभव करते हैं। बाहर के दर्शनार्थियों का आवागमन भी निरन्तर बना हुआ है।

मदनगंज-किशनगढ़- तत्त्वचिन्तक **श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.** आदि ठाणा 4 का 17 जुलाई 2013 को प्रातः 9.00 बजे स्थानक भवन में चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश सोत्साह सम्पन्न हुआ। प्रवेश के पश्चात् स्थानक भवन खचाखच भरा हुआ था। महिला मण्डल, बालिका मण्डल एवं जैन स्टडी ग्रुप ने अभिनन्दन में भजन प्रस्तुत किए। श्री मनोज जी मेहता, श्री भागचन्द जी कोचेटा, श्रीमती मोनिका जी डांगी आदि ने अपने भावभीने विचार व्यक्त किए। मोनिका जी डांगी ने भाव प्रस्तुत करते हुए कहा- "धन्य है व्यक्तित्व जिनका, कृतित्व भी उत्कृष्ट है, साधना है दिव्य जिनकी, आराधना भी विशिष्ट है।" मंगलमय प्रवेश के दिन तत्त्वचिन्तक मुनि श्री के 6 की तपस्या थी, जो चातुर्मास प्रारम्भ होने तक 11 की तपस्या में परिणत हुई। मुनि श्री ने प्रवेश के दिन अपने उद्‌बोधन में फरमाया- "वर्तमान की निर्दोषता को सुरक्षित रखना है, इसके लिए हमें भीतर में प्रवेश करना है। आप सन्तों को निर्दोष बहरायें तथा निर्दोष बनें।" प्रवेश के समय मन्दिरमार्गी, तेरापंथी आदि सम्प्रदायों के श्रावक भी उपस्थित थे।

महासती-मण्डलों का चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश

जोधपुर- साध्वीप्रमुखा, शासनप्रभाविका **महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा.** आदि ठाणा 8 का चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश 18 जुलाई 2013 को प्रातः 7.15 बजे शक्तिनगर स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में हुआ। आप महासती मण्डल के साथ कांकरिया स्थानक से पदविहार करती हुई पधारीं। श्रावक-श्राविकाओं का समूह जयनाद करता हुआ साथ चल रहा था। 21 जुलाई को चतुर्दशी के दिन यहाँ 100-125 दया, संवर, एकाशन, उपवास, पौषध आदि की आराधना हुई। 22 जुलाई को चातुर्मास प्रारम्भ हुआ, जिसमें महासती मण्डल ने चातुर्मास के महत्त्व पर प्रकाश डाला। 30 जुलाई को अष्टमी के दिन

70-80 दया, संवर, एकाशन आदि हुए। प्रतिदिन प्रार्थना के पश्चात् साध्वीप्रमुखा जी युवकों के समक्ष आगम की गाथाओं का विवेचन करती हैं। युवक बड़े उत्साह से श्रवण कर ज्ञानार्जन कर रहे हैं। दर्शनार्थियों का आवागमन बना हुआ है। 2 से 6 अगस्त तक पंचरंगी का कार्यक्रम सम्भावित है।

खेरली- विदुषी **महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा 5 का मंगल प्रवेश 18 जुलाई 2013 को प्रातः वेला में बड़े उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। आपके जयपुर से खेरली विचरण विहार के दौरान अनेक आजीवन शीलव्रती बने- 1. श्रीमती ग्यारसी देवी-सीयाराम जी, 2. श्रीमती बादामदेवी-जयरामजी, 3. श्रीमती शान्तिदेवी-बद्रीप्रसादजी, 4. श्रीमती जानकी देवी-मुरलीधर जी, 5. श्रीमती कस्तूरी देवी-कल्याणसहाय जी, 6. श्रीमती गिरजाबाई-गिरीराजजी, 7. श्रीमती जानकीदेवी-अर्जुनजी खण्डेलवाल, 8. श्रीमती नर्बदाबाई-कल्याण जी गुर्जर, 9. श्रीमती माया बाई-अमीरचन्द जी जैन-महवा, 10. श्रीमती राजकुमारी जी-सुरेशचन्दजी, 11. श्रीमती गुलदेवी-पोतीराम जी मीणा-हल्देना, 12. श्रीमती शारदाजी-रामस्वरूप जी जैन-घोसराना, 13. श्रीमती चन्दा-सुभाषचन्द जी जैन-दांतिया। दांतिया गाँव के एक ब्राह्मण परिवार के बीस सदस्यों ने एक वर्ष के लिए कच्चे पानी का त्याग किया।

मंगल-प्रवेश के पश्चात् खेरली में 21 जुलाई को 5 शीलव्रत के प्रत्याख्यान हुए- 1. श्रीमती मीना-देवेन्द्रकुमार जी जैन-फिरोजाबाद वाले, 2. श्रीमती सरला-महेन्द्रकुमार जी जैन (मंत्री)-भनोखर वाले, 3. श्रीमती शकुन्तला-लखमीचन्द जी जैन, 4. श्रीमती माया-रामदयाल जी जैन, 5. श्रीमती जैनो-अनूपचन्द जी जैन। अभी तक 3 तेले के तप पूर्ण हो गये हैं तथा तपस्याएँ चल रही हैं। ज्ञान-ध्यान सीखने वाले भाई-बहनों की उपस्थिति बनी हुई है।

गोपालगढ़ (भरतपुर)- विदुषी **महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा.** आदि ठाणा 5 का चातुर्मासार्थ प्रवेश 12 जुलाई को प्रातः 8.15 बजे मौहल्ला गोपालगढ़-भरतपुर के श्री जैन रत्न सामायिक स्वाध्याय भवन में हुआ। दादावाड़ी रणजीत नगर से हुए विहार में बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएँ भगवान महावीर, आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर आदि संत-सतीवृन्द की जयकार करते हुए चल रहे थे। प्रवेश के उपरान्त महासती मण्डल का मंगल प्रवचन हुआ। उल्लेखनीय है कि महासतीजी श्रावण एवं आश्विन मास में गोपालगढ़ स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में विराजेंगे तथा शेष दो माह भरतपुर शहर में विराजेंगे। **सम्पर्क सूत्रः-** प्रेमचन्द जी जैन-अध्यक्ष, 05644-225131, 9413916043, पारसचन्द जी जैन-उपाध्यक्ष, 0946178005, बाबूलाल जी जैन (सिमको)-मंत्री, 9887467701

गुलाबपुरा- व्याख्यात्री **महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा का चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश 14 जुलाई को जैन स्थानक, सदर बाजार, गुलाबपुरा में उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। प्रवेश के अवसर पर विहार यात्रा में विजयनगर, आगुचा, हुरड़ा, फूलियाकलां, वारणी, धनोप, चित्तौडगढ़ आदि क्षेत्रों के तथा स्थानीय श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। चातुर्मास प्रारम्भ के साथ ही एकाशन, उपवास, आयंबिल एवं तेले की लड़ी चल रही है। सुबह प्रार्थना, प्रवचन एवं दोपहर में सामायिक, प्रतिक्रमण, पुच्छिंसु णं सीखने हेतु श्रावक-श्राविकाओं एवं बच्चों में अच्छा उत्साह है। महासती-मण्डल के एकान्तर तप चल रहा है।

मानसरोवर-जयपुर- व्याख्यात्री **महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा.** आदि ठाणा 3 का चातुर्मासार्थ मंगलप्रवेश 14 जुलाई को मानसरोवर के गौरीविहार स्थित पोरवाल भवन में उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। मानसरोवर एवं जयपुर शहर के अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने विहारयात्रा का लाभ लिया। जय-जयकार के साथ प्रातः 9.00 बजे सम्पन्न मंगल प्रवेश के पश्चात् महासतीजी ने प्रार्थना करायी। प्रवेश के पश्चात् अल्पाहार की भी व्यवस्था थी। यहाँ से अनेक श्रावक-श्राविका प्रतापनगर में साध्वी रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा के मंगल प्रवेश में भी सम्मिलित हुए।

निफाड़ (नाशिक)- व्याख्यात्री **महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा.** आदि ठाणा 5 का 14 जुलाई 2013 को जयनाद के घोषों के साथ प्रातः 9.45 बजे निफाड़ के जैन स्थानक में चातुर्मासार्थ प्रवेश हुआ। कुन्देवाड़ी से हुए विहार में निफाड़, कुन्देवाड़ी, पीपलगांव, जलगांव, जोधपुर के श्रावक-श्राविकाओं का उत्साह झलक रहा था। सैकड़ों श्रावक-श्राविकाओं ने विहार यात्रा में उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रवेश के पश्चात् महासती जी द्वारा प्रार्थना कराई गई तथा श्री नन्दलाल जी बाफना एवं महावीर जी बोथरा ने अपने भाव व्यक्त किए। महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. ने अपने प्रवचन में चातुर्मास का महत्त्व प्रतिपादित किया। चातुर्मास प्रवेश से ही तेले की, आयंबिल की लड़ी चल रही है। एक घण्टे के नवकार मंत्र का जाप चल रहा है। उपवास एकाशन, एकान्तर उपवास आदि भी प्रारम्भ हुए हैं। दोपहर में थोकड़े सीखाये जा रहे हैं तथा रविवार को बच्चों का धार्मिक शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

प्रतापनगर,जयपुर- व्याख्यात्री **महासती श्री रुचिता जी म.सा.** आदि ठाणा 5 का चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश 14 जुलाई को प्रतापनगर के स्थानक भवन में हुआ। यहाँ पर अच्छी धर्माराधना चल रही है। क्षेत्र का प्रथम चातुर्मास होने के कारण श्रावक-श्राविकाओं में पूरा उत्साह है। महासती श्री विवेकप्रभा जी म.सा. उत्तराध्ययन सूत्र के 29 वें अध्ययन

का विवेचन फरमा रहे हैं एवं महासती श्री रुचिता जी म.सा. विभिन्न विषयों पर सारगर्भित प्रवचन दे रही हैं। प्रवचन के पश्चात् ''आओ सीखें तत्त्वज्ञान, जिससे हो आत्म उत्थान'' विषयक धार्मिक कक्षा चल रही है। महासती श्री कृपाश्री जी एवं महासती श्री प्रज्ञाश्री जी अपना योगदान कर रही हैं। प्रत्येक रविवार को बालकों का शिविर आयोजित हो रहा है। दिन में सामायिक-प्रतिक्रमण, 25 बोल, भक्तामर स्तोत्र, कर्मग्रंथ आदि सिखाने का क्रम जारी है। प्रत्येक रविवार को जैनागम के स्तोक रत्न पर खुली पुस्तक प्रतियोगिता तथा सामान्य जानकारी पर आधारित धार्मिक प्रतियोगिता रखी जा रही है। अनेक भाई-बहिन उत्तराध्ययन सूत्र का 29 वां अध्ययन कंठस्थ कर रहे हैं। उपवास, आयंबिल, एकाशन, संवर एवं तेले की लड़ी चल रही हैं।

सवाईमाधोपुर में क्षेत्रीय श्रावक एवं युवक सम्मेलन

परमपूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के बजरिया, सवाईमाधोपुर में विराजते समय रविवार, 7 जुलाई 2013 को क्षेत्रीय श्रावक एवं युवक सम्मेलन आयोजित हुआ। प्रातःकाल प्रवचन में श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. एवं परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने अपनी अमृतमयी वाणी में खचाखच भरे प्रवचन हॉल में उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं एवं युवकों को आध्यात्मिक एवं नैतिक विकास की प्रेरणा की तथा संघ-सेवा, रात्रिभोजन-त्याग एवं धर्माराधन में उत्साहपूर्वक जुटने हेतु प्रेरित किया। आचार्यप्रवर ने फरमाया कि आपका सब जीवों के प्रति आत्मवद्भाव हो, आप सब जीवों को अपने समान समझें तो किसी भी प्रकार का पाप आप उनके प्रति नहीं कर सकेंगे। आप दया एवं करुणा को अपनाकर सब जीवों को अपने समान समझने का भाव मन में लाएं एवं अनिष्टकारी तथा परपीड़ाकारी प्रवृत्तियों से बचें। संघ-सेवा के क्षेत्र में भी यह 'आयतुले पयासु' का सूत्र उतना ही काम करता है।

प्रवचन के पश्चात् उसी प्रवचन हॉल में श्रावक एवं युवक सम्मेलन की सभा बिना विराम के प्रारम्भ हुई। श्राविकाएँ भी कुछ संख्या में उपस्थित रहीं। सभा का प्रारम्भ श्री कुशल जी जैन गोटेवाला के मंगलाचरण से हुआ। साथ ही संकल्प का पठन एवं संघ समुत्कीर्तन का गान किया गया।

सम्मेलन के मुख्य अतिथि एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के **महामंत्री श्री आनन्द जी चौपड़ा** ने अपने वक्तव्य में कहा कि सवाईमाधोपुर क्षेत्र भक्ति में अग्रणी है। चातुर्मास प्राप्त हो रहा है, अतः आचार्यप्रवर के सान्निध्य का पूरा लाभ उठाया जाए, नये स्वाध्यायी तैयार हों तथा संघ में नई ऊर्जा के साथ धर्माराधन हो। श्री महावीर जैन

स्वाध्याय विद्यापीठ-जलगाँव के प्राचार्य **श्री प्रकाशचन्द जी जैन** ने सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान का जीवन्त परिचय दिया। तथा यह कहा कि योजना के सही क्रियान्वयन हेतु समयदान की महती आवश्यकता है। **श्री त्रिलोकचन्द जी जैन अध्यापक**-सवाईमाधोपुर ने आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की गतिविधियों से सभा को परिचित कराया। **श्री धर्मेन्द्र कुमार जी जैन** ने स्वाध्याय संघ की जानकारी देने के साथ उसकी अपेक्षाओं से भी जनसमूह को अवगत कराया। **श्री राकेश जी जैन**-सुमेरगंज मण्डी ने युवक परिषद् के राष्ट्रीय कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला तथा युवकों से कार्यक्रमों में भागीदारी बढ़ाने की प्रेरणा की।

सम्मेलन के **प्रमुख वक्ता डॉ. धर्मचन्दजी जैन** ने अपने उद्बोधन में कहा कि प्रथम आवश्यकता संघ के प्रति समर्पण की है। संघ के प्रति समर्पण से स्वयं का विकास तो होता ही है, संघ का भी गौरव बढ़ता है। दूसरी बात उन्होंने समाज का गौरव बढ़ाने हेतु कही कि पोरवाल समाज को यदि अपने गौरव को अभिवृद्ध करना है तो समाज की कुरीतियों को छोड़कर एकता के साथ आगे बढ़ना चाहिए। सम्प्रदाय से अतीत व्यवहार पर भी उन्होंने बल दिया। किसी की निन्दा न कर सभी सम्प्रदायों के प्रति सद्भाव पूर्ण व्यवहार होना चाहिए। उन्होंने आत्म-सुधार को केन्द्र में रखकर प्रवृत्ति किए जाने की प्रेरणा की। स्वाध्याय हमारी पूंजी है। इससे ज्ञान का उजाला प्राप्त होता है। अतः स्वाध्याय की प्रवृत्ति को निरन्तर बढ़ावा देना चाहिए। पाँचवी बात उन्होंने सेवा की कही। संघ एवं समाज के उत्थान एवं अपने आत्मविकास हेतु अपनी योग्यता एवं सामर्थ्य के अनुसार सेवा में भागीदारी होनी चाहिए। इससे संघ, समाज एवं व्यक्ति सबका विकास संभव है।

पोरवाल समाज के **अध्यक्ष श्री बुद्धिप्रकाश जी जैन**-कोटा ने सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए कहा कि हमें आचार्यप्रवर के द्वारा चलाये जा रहे रात्रिभोजन के त्याग के अभियान को समाज के स्तर पर आगे बढ़ाना चाहिए। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में वीरभ्राता उदारमना, श्रेष्ठी **श्री मानमल जी सुराणा**-चेन्नई ने सम्मेलन की शोभा बढ़ाई। श्रीमान् सुराणा साहब के द्वारा बजरिया के स्वाध्याय भवन में किए गए योगदान हेतु उनका अभिनन्दन किया गया। जोधपुर से संघ के पूर्व महामंत्री **श्री पूरणराजी अबानी** भी विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे। **डॉ. गोवर्धन जी पाराशर** जोधपुर का चिकित्सकीय सेवाओं के लिए अभिनन्दन किया गया। श्री मुकेश जी जैन, क्षेत्रीय प्रधान ने सभी आगन्तुकों का आभार ज्ञापित किया। सभा का संचालन स्वाध्याय संघ के संयोजक श्री कुशल जी गोटेवाला ने अत्यन्त कुशलतापूर्वक किया। सम्मेलन में अलीगढ़-रामपुरा, चौथ का बरवाड़ा, चौरू, पचाला, कुश्तला आदि विभिन्न ग्रामों से श्रावक-श्राविकाओं ने

एवं युवकों ने भाग लिया।

पोरवाल क्षेत्र में आध्यात्मिक प्रचार यात्रा सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा 29 जून से 04 जुलाई 2013 तक पोरवाल क्षेत्र के सवाईमाधोपुर, बजरिया, श्योरपुर कलां, कुण्डेरा, सूरवाल, कुश्तला, पचाला, चौथ का बरवाडा, अलीगढ, उनियारा, सोप, बाबई, इन्द्रगढ़, सुमेरगंज मण्डी, जरखोदा, देई, नैनवा, दूणी, उखलाना, देवली आदि क्षेत्रों में प्रचार एवं सम्पर्क कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ के सचिव श्री राजेश जी भण्डारी-जोधपुर, प्रचार-प्रसार समिति के संयोजक श्री लल्लू लाल जी जैन-सवाईमाधोपुर, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ कार्यालय सहायक श्री धीरज जी डोसी एवं पोरवाल, पल्लीवाल क्षेत्र के प्रचारक श्री राजेश जी जैन-हिण्डौन सिटी की अमूल्य सेवाएं प्राप्त हुईं। सभी स्थलों पर नये स्वाध्यायी बनने, पर्युषण में स्वाध्यायी बुलाने, शिक्षण बोर्ड की परीक्षाओं में ज्ञानवृद्धि करने, धार्मिक पाठशाला प्रारम्भ करने के साथ-साथ संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की गतिविधियों से अवगत कराया गया। कार्यक्रम के दौरान शिक्षण बोर्ड के नये केन्द्र खोले गए तथा आगामी परीक्षा हेतु 15 फॉर्म भरवाए। 45 स्वाध्यायियों की स्वीकृति प्राप्त की गई तथा पांच नये स्वाध्यायी बनाये गये। संस्कार केन्द्र के अन्तर्गत पाठशालाओं की समीक्षा की गई एवं नई पाठशालाओं का गठन किया गया। पर्युषण में स्वाध्यायी बुलाने हेतु प्रेरणा की गई, जिसके अन्तर्गत 12 मांगें प्राप्त हुईं। सभी स्थानों पर स्थानक में आकर सामूहिक प्रार्थना एवं स्वाध्याय करने की प्रेरणा की गई। जिनवाणी के सदस्य भी बनाए गए।

केन्द्रीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर अक्टूबर में

स्वाध्यायियों के सर्वांगीण विकास को लक्ष्य में रखकर श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा समय-समय पर स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये जाते हैं। इस वर्ष 2 से 6 अक्टूबर, 2013 तक पंच दिवसीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में सवाईमाधोपुर में आयोजित करने का निर्णय लिया गया है। अत: समस्त स्वाध्यायियों को सूचित करते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि वे इस शिविर में भाग लेकर अपने ज्ञान में वृद्धि करें। इस शिविर में निम्नांकित योग्यताओं में से एक योग्यता प्राप्त स्वाध्यायी ही भाग ले सकेंगे।

1. श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्यायी संघ का स्वाध्यायी हो एवं पर्युषण-सेवा देता हो।
2. अखिल भारतीय आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की पंचम परीक्षा उत्तीर्ण की हो।

3. सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल कंठस्थ हो। शिविर की सम्पूर्ण रूपरेखा सभी स्वाधायियों को शीघ्र ही भेजी जाएगी। *-कुशलचंद जैन गोटेवाला, संयोजक*

जैनागम स्तोक वारिधि-परीक्षा सम्बन्धी निर्देश

1. जैनागम स्तोक वारिधि (थोकड़ा परीक्षा) पाठ्यक्रम की परीक्षा 5 जनवरी, 2014 को कक्षावार आयोजित की जायेगी। पंचवर्षीय पाठ्यक्रम को दस कक्षाओं में विभाजित किया गया है।
2. नये परीक्षार्थियों को क्रम से अर्थात् पहली कक्षा से ही परीक्षा उत्तीर्ण करना आवश्यक है। जिन परीक्षार्थियों ने पूर्व की परीक्षा दी है, उन्हें आगामी परीक्षा हेतु निम्न कक्षा हेतु योग्य माना जायेगा–

   (1) प्रथम भाग के दोनों ग्रुप (A-1st, A-2nd) उत्तीर्ण करने वाले तृतीय कक्षा में

   (2) द्वितीय भाग के दोनों ग्रुप (B-1st, B-2nd) उत्तीर्ण करने वाले पांचवीं कक्षा में

   (3) जिन्होंने प्रथम अथवा द्वितीय भाग के (A-1st- प्रथम कक्षा, A-2nd- द्वितीय कक्षा, B-1st- तृतीय कक्षा, B-2nd- चतुर्थ कक्षा) ग्रुप में से कोई भी एक ग्रुप उत्तीर्ण किया है, वे शेष रहे ग्रुप से सम्बन्धित कक्षा की परीक्षा में भाग ले सकेंगे।
3. प्रत्येक कक्षा में 5–5 थोकड़े रहेंगे। सभी कक्षाओं की वरीयता सूची अलग–अलग तैयार की जायेगी।
4. कोई भी परीक्षार्थी एक बार में एक ही कक्षा की परीक्षा दे सकेंगे। सभी कक्षाएँ क्रम से उत्तीर्ण करना अनिवार्य होगा।
5. सभी उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को पुरस्कार निम्नानुसार दिये जायेंगे– **कक्षा 1 से 4 तक** के विद्यार्थियों को 50 से 69.99 अंक तक 80 रुपये तथा 70 व उससे अधिक अंक वालों को 100 रुपये दिए जायेंगे। **कक्षा 5 से 8 तक** के विद्यार्थियों को 50 से 69.99 अंक तक 100 रुपये तथा 70 व उससे अधिक अंक वालों को 150 रुपये दिए जायेंगे। **कक्षा 9 व 10** के विद्यार्थियों को 50 से 69.99 अंक तक 200 रुपये तथा 70 व उससे अधिक अंक वालों को 250 रुपये दिए जायेंगे।

   वरीयता सूची में स्थान पाने वालों को **कक्षा 1 से 4 तक** प्रथम–2000 रुपये, द्वितीय–1500 रुपये, तृतीय– 1000 रुपये। **कक्षा 5 से 8 तक** प्रथम–2500 रुपये, द्वितीय– 2000 रुपये, तृतीय– 1500 रुपये। **कक्षा 9 व 10 तक** प्रथम– 4000 रुपये, द्वितीय– 3000 रुपये, तृतीय– 2000 रुपये।
6. जैनागम स्तोक वारिधि पाठ्यक्रम की पुस्तकों के अब तक तीन भाग शिक्षण बोर्ड द्वारा प्रकाशित हो चुके हैं। उनमें प्रथम भाग पहली एवं दूसरी कक्षा के लिए, द्वितीय

भाग तीसरी एवं चौथी कक्षा के लिए तथा तृतीय भाग पाँचवी एवं छठी कक्षा के लिए उपयोगी हैं।

7. सभी कक्षाओं में प्रश्न-पत्र का प्रारूप इस प्रकार रहेगा-

1. बहुविकल्पात्मक प्रश्न (अ,ब,स,द)	10 अंक	10 प्रश्न
2. हाँ/नहीं के प्रश्न	10 अंक	10 प्रश्न
3. जोड़ियाँ मिलान	10 अंक	10 प्रश्न
4. मुझे पहिचानो	20 अंक	10 प्रश्न
5. एक-दो पंक्ति में उत्तर दीजिए	18 अंक	09 प्रश्न
6. तीन-चार पंक्तियों में उत्तर दीजिए	32 अंक	08 प्रश्न

8. **जैनागम स्तोक वारिधि पाठ्यक्रम की कक्षावार आगामी परीक्षा 5 जनवरी 2014, रविवार को दोपहर 12.30 से 3.30 बजे तक आयोजित की जायेगी।** परीक्षार्थियों से निवेदन है कि अपने मोबाइल नम्बर, ई-मेल तथा बैंक खाते का पूर्ण विवरण आवेदन पत्र में अवश्य भरें।

9. शिक्षण बोर्ड की परीक्षाएँ निर्धारित दिनांक व निर्धारित समय पर ही आयोजित होना अनिवार्य है। शिक्षण बोर्ड की अनुमति के बिना समय में परिवर्तन नहीं किया जा सकता।

10. शिक्षण बोर्ड के सभी कक्षाओं के पाठ्यक्रम की पाठ्य पुस्तकें शिक्षण बोर्ड की वेबसाइट-www.jainratnaboard.com से भी डाउनलोड की जा सकती है।

उक्त परीक्षा से सम्बन्धित आवेदन पत्र व पाठ्य पुस्तकों की प्राप्ति हेतु शिक्षण बोर्ड कार्यालय, घोड़ों का चौक, जोधपुर से सम्पर्क किया जा सकता है।

अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद् की केन्द्रीय कार्यकारिणी की बैठक सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् की 53 वीं एवं नवगठित केन्द्रीय कार्यकारिणी की द्वितीय बैठक सवाईमाधोपुर में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जितेन्द्रकुमार जी डागा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। परिषद् के राष्ट्रीय कार्यक्रम यथा-चतुर्विधसंघ सेवा, श्रुत सेवा, धार्मिक शिक्षण एवं शिविर, स्वाध्याय-सामायिक सेवा एवं स्वधर्मी वात्सल्य-रोजगार सेवा के सफलरूपेण क्रियान्विति पर व्यापक विचार विमर्श हुआ। इन्हीं राष्ट्रीय कार्यक्रमों के अन्तर्गत वर्षभर में उपस्थित होने वाली महत्त्वपूर्ण तिथियों/पर्वों को दिवस विशेष के रूप में प्रभावी व कारगर रूप में मनाने की सहमति बनी।

-श्रेयांस मेहता, महासचिव

संघ द्वारा विभिन्न श्रेणियों में सम्मानार्थ प्रविष्टियाँ/कृतियाँ आमंत्रित

आचार्य श्री हस्ती स्मृति सम्मान- जैन आगम, जैन दर्शन व जैन जीवन पद्धति के क्षेत्र में लेखन, शोध व जैन सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में विशिष्ट योगदान। लेखकों से कृतियों की तीन प्रतियाँ आमन्त्रित हैं।

युवा प्रतिभा शोध सम्मान (45 वर्ष की आयु तक)-

1. **प्रशासनिक चयन-** राज्य स्तरीय व केन्द्रीय प्रशासनिक सेवा, न्यायाधिपति आदि विशिष्ट पदों पर चयन।
2. **प्रोफेशनल विशिष्ट-** डॉक्टर, इंजीनियर, चार्टर्ड एकाउन्टेण्ट, कम्पनी सचिव व अन्य प्रोफेशनल कोर्स में योग्यता सूची में स्थान पाने पर।
3. **शोध-** वैज्ञानिक खोज (अहिंसा व जैन सिद्धान्तों को पुष्ट करने वाली)
4. **संघ-सेवा-** चतुर्विध संघसेवा, विशेष धार्मिक अध्ययन, धार्मिक लेखन इत्यादि।

विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान (एक श्राविका, एक युवा, एक वरिष्ठ स्वाध्यायी)- कम से कम 10 वर्ष स्वाध्याय संघ, जोधपुर से स्वाध्यायी (पर्युषण पर्वाराधन) के रूप में सक्रिय सेवा। (युवा स्वाध्यायी के लिए आवश्यक होने पर सेवा वर्ष में छूट दी जा सकेगी।)

गुणी अभिनन्दन-

1. **तपस्या-** कम से कम पाँच वर्ष तक एकान्तर, दीर्घ तपस्या, दीर्घ संवर-साधना या अन्य विशिष्ट तप।
2. **विद्वान्, 3. संघ-सेवा, 4. सेवा-साधना**

नोटः- उक्त सम्मान हेतु अपनी प्रविष्टियाँ/कृतियाँ 30 सितम्बर, 2013 तक संघ कार्यालय के पते पर भिजवायें।-आनन्द चौपड़ा, महामंत्री-अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. 0291-2636763

चतुर्थ वीतराग ध्यान शिविर 20 सितम्बर से

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 50 वें दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के अन्तर्गत चतुर्थ वीतराग ध्यान साधना शिविर का सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, मदनगंज-किशनगढ़ के संयुक्त तत्त्वावधान में 20 सितम्बर से 1 अक्टूबर 2013 तक मदनगंज-किशनगढ में आयोजन

किया जा रहा है। शिविर में भाग लेने के इच्छुक साधक पधारने के पूर्व स्वीकृति अवश्य प्राप्त कर लें। बिना स्वीकृति के आने वाले भाई-बहन शिविर में भाग नहीं ले सकेंगे। सम्पर्क सूत्र- श्रीमती शान्ता जी मोदी, जयपुर- 093144-70972 , श्री मनोज जी मेहता-094140-11009, अन्य मोबाइल नं. 080039-37301

मुम्बई में छात्रों एवं छात्राओं के हेतु आवास-व्यवस्था

उच्च शिक्षा (C.A., MBA, Engg., Medical etc.) प्राप्त करने हेतु बाहर से आने वाले छात्रों के लिए मीना रांका फाउण्डेशन, मुम्बई द्वारा पिछले कई वर्षों से पनवेल-नवी मुम्बई में आचार्य श्री नानेश हॉस्टल एवं रामेश हॉस्टल में आवास की उत्तम व्यवस्था की जा रही है। हॉस्टल में प्रतिदिन प्रार्थना, स्वच्छता, घर सा वातावरण, अच्छे संस्कार एवं अनुशासन की प्राथमिकता है। हॉस्टल में प्रवेश छात्रों एवं छात्राओं की योग्यता एवं जरूरत के हिसाब से दिया जाता है। जिन छात्रों एवं छात्राओं को हॉस्टल में प्रवेश लेना है वे अतिशीघ्र सम्पर्क करें। **सम्पर्क सूत्र (छात्रों के लिए)**- श्री आर.पी. गुप्ता (हॉस्टल मैनेजर), फोन-022-27467340, मो.नं. 9324610630, Website:www.naneshhostel.com **सम्पर्क सूत्र (छात्राओं के लिए)**- श्रीमती निर्मला ठाकुर (हॉस्टल वार्डन), फोनः 022-22948929 Website:www.rameshhostel.com

'जिणधम्मो' पर घर बैठे खुली किताब-परीक्षा

आचार्य श्री नानेश की कृति 'जिणधम्मो' पर घर बैठे खुली किताब परीक्षा का आयोजन किया जा रहा है। प्रश्न पुस्तिका वितरण प्रारम्भ तिथि 2 सितम्बर, 2013 तथा उत्तर-पुस्तिका जमा कराने की अंतिम तिथि 11 फरवरी, 2014 है। परिणाम की घोषणा 2 मई, 2014 को की जाएगी। प्रश्न पुस्तिका एवं उत्तर पुस्तिका का मूल्य 30/- एवं जिणधम्मो पुस्तक का मूल्य 150/- रुपये है। इस परीक्षा में निम्न पुरस्कार देय हैं- प्रथम-1,00,000/-, द्वितीय- 50,000/-, तृतीय- 30,000/-, चतुर्थ- 20,000/-, पंचम- 15,000/-, षष्ठ- 10,000/-, सप्तम- 5000/-, अष्टम- 3000/-, प्रतिभा पुरस्कार-10(प्रत्येक 2000/-), ज्ञान-चेतना पुरस्कार-20(प्रत्येक 1000/-), जिणधम्मो अनुरागी पुरस्कार- 50 (प्रत्येक 500/-) एवं प्रोत्साहन पुरस्कार 500 चाँदी के सिक्के। **पत्रोत्तर का पता**- श्री महेश नाहटा-संयोजक, श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, श्री जैन पी.जी. कॉलेज के सामने, नोखा रोड़, गंगाशहर, बीकानेर (राज.), फोनः- 0151-3292177, 2270261, मोबाइल-09406201351

अहिंसा इण्टरनेशनल पुरस्कारों हेतु नाम आमंत्रित

नई दिल्ली- समाजसेवी संस्था अहिंसा इण्टरनेशनल द्वारा वर्ष-2013 के निम्न पुरस्कारों हेतु प्रस्ताव आमंत्रित हैं:-

1. **अहिंसा इण्टरनेशनल डिप्टीमल आदीश्वरलाल जैन पुरस्कार राशि** (51000/-), जैन साहित्य के विद्वान् को उनके हिन्दी एवं अंग्रेजी के समग्र साहित्य अथवा कोई मौलिक नवीनतम रचना अथवा कृति की श्रेष्ठता के आधार पर प्रदान किया जायेगा।
2. **अहिंसा इण्टरनेशनल हरिशचन्द रमेशचन्द अतुल जैन, धर्म प्रचार-प्रसार पुरस्कार** राशि (51000/-), यह पुरस्कार किसी भी व्यक्ति को उसके द्वारा जैन धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु श्रेष्ठ कार्य करने के आधार पर दिया जायेगा।
3. **अहिंसा इण्टरनेशनल भगवानदास शोभालाल डालचन्द जैन शाकाहार, जीवदया एवं रक्षा पुरस्कार** राशि (21000/-), शाकाहार प्रसार तथा जीवदया एवं रक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहे कर्मठ कार्यकर्ता को उनके कार्य की श्रेष्ठता के आधार पर प्रदान किया जायेगा।
4. **अहिंसा इण्टरनेशनल प्रेमचन्द जैन चिकित्सा-रोगी सेवा पुरस्कार** राशि (21000/-), यह पुरस्कार किसी भी संस्था/व्यक्ति/डॉक्टर को उसके द्वारा चिकित्सा के क्षेत्र में सेवा/रचनात्मक कार्य करने पर या कोई चिकित्सा क्षेत्र में नई उपलब्धि प्राप्त करने के आधार पर दिया जायेगा।
5. **(अ) अहिंसा इण्टरनेशनल विजयकुमार प्रबोधकुमार सुबोधकुमार जैन पत्रकारिता पुरस्कार** राशि (21000/-), **(ब) अहिंसा इण्टरनेशनल पारसदास अनिल कुमार जैन पत्रकारिता पुरस्कार** राशि (21000/-) यह पुरस्कार जैन पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय/रचनात्मक उत्कृष्ट योगदान के लिए श्रेष्ठता के आधार पर दिया जायेगा।
6. **अहिंसा इण्टरनेशनल उजागरमल सलेकचन्द जैन कागजी रचनात्मक समाजसेवा पुरस्कार** राशि (21000/-), यह पुरस्कार दिल्ली राजधानी क्षेत्र के किसी भी जैन व्यक्ति को उसके द्वारा समाज के संगठन/उत्थान/विकास आदि के लिए किये गये उल्लेखनीय/रचनात्मक कार्य/सेवाओं के लिए प्रदान किया जायेगा।
7. **अहिंसा इण्टरनेशनल धनीचन्द देवेन्द्रकुमार जैन, मेधावी छात्र पुरस्कार** राशि (11000/-), यह पुरस्कार दिल्ली एन.सी.आर. के दसवीं कक्षा में CBSE/ICSE

की परीक्षा में सभी विषयों में A+ ग्रेड पाने वाले छात्र/छात्रा, जिसने खेलकूद/वीरता अथवा अन्य किसी क्षेत्र में विशेष रचनात्मक उपलब्धि प्राप्त की हो, को प्रदान किया जायेगा।

8. **अहिंसा इण्टरनेशनल श्री जिनेन्द्रवर्णी स्मृति जैन धर्म प्रचार-प्रसार पुरस्कार** राशि (21000/-) यह पुरस्कार किसी भी व्यक्ति को उसके द्वारा जैन धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु श्रेष्ठ कार्य करने के आधार पर प्रदान किया जायेगा।

उपर्युक्त पुरस्कारों हेतु नाम का प्रस्ताव स्वयं लेखक/कार्यकर्ता, संस्था अथवा अन्य कोई भी जानने वाला व्यक्ति 31 अगस्त 2013 तक निम्न पते पर उसके पूरे नाम व पते, जीवन परिचय, सम्बन्धित क्षेत्र में कार्य विवरण व पासपोर्ट आकार के दो फोटो सहित आमंत्रित हैं। **सम्पर्क सूत्रः-** प्रदीपकुमार जैन (सचिव), 174, ग्राउण्ड फ्लोर, अशोका इंकलेव, पावर हाउस रोड़, फरीदाबाद-121001 (हरियाणा), फोनः-09810480099

छात्रवृत्ति हेतु आवेदन करें

श्वेताम्बर जैन समाज के जरूरतमन्द परिवारों के होनहार, प्रतिभावान छात्र-छात्राएँ, जिन्होंने 8वीं एवं इससे उच्च कक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की है, जिनके परिवार की मासिक आय रुपये 10000/- से अधिक नहीं है, वे छात्रवृत्ति के लिये आवेदन कर सकते हैं। आवेदन पत्र मंगाने के लिए, अपना फोन, मोबाइल नं., नाम, पूरा पता व पिन कोडमय, दो लिफाफे 5/- रु. के डाक टिकट सहित अधोलिखित पते पर भेजें। पत्र के साथ अंकतालिका भेजना आवश्यक है। आवेदन पत्र में छात्रवृत्ति क्यों चाहिये, कृपया लिखें। आप क्या करते हैं, आपकी और आपके परिवार की मासिक आय कितनी है, आय विवरण लिखकर भेजें। पत्रोत्तर का पता-*श्री लाभचन्द जी कोठारी, सन्तोक तारा जैन चेरिटेबल ट्रस्ट, डी-120, कृष्णा मार्ग, यूनिवर्सिटी रोड, बापू नगर, जयपुर-302015, मोबाइल नं. 093140-03637*

विधवाओं एवं जरूरतमन्दों को सहयोग

श्वेताम्बर जैन ओसवाल समाज की विधवाएं एवं जरूरतमन्द परिवार जिनको जीवन यापन में कठिनाई है, जिन्हें कहीं से भी सहयोग नहीं मिल रहा हो और मासिक आय रुपये 3000/- से अधिक न हो, आर्थिक सहयोग प्राप्त करने के लिए अपना फोन, मोबाइल नं., नाम, पूरा पता पिन कोडमय, दो लिफाफे 5/-रु. के डाक टिकट सहित आवेदन पत्र मंगाने के लिए निम्नलिखित पते पर भेजें- *गोठी चेरिटेबल ट्रस्ट, श्री लाभचन्द जी कोठारी, डी-120, कृष्णा मार्ग, यूनिवर्सिटी रोड़, बापू नगर, जयपुर-302015, फोन 93140-03536 (मोबाइल)*

संक्षिप्त-समाचार

चौरू- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 10 अलीगढ़-रामपुरा से विहार कर 26 जून को चौरू पधारे। आपके पदार्पण से धर्म-ध्यान की लहर दौड़ गई। यहाँ पर महासती मण्डल की प्रभावी प्रेरणा से मुस्लिम, कुम्हार, तेली आदि जाति के लोगों ने भी त्याग-प्रत्याख्यान की भेंट समर्पित की। मुस्लिम धर्मावलम्बी भाई वकील मोहम्मद ने सपरिवार आजीवन मांसाहार का त्याग किया। *-राकेश कुमार जैन*

जयपुर- आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के 75 वें जन्मदिवस पर व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में मानसरोवर में अनेक भाई-बहनों ने वर्ष भर एवं मर्यादित अवधि तक रात्रिभोजन नहीं करने का नियम अंगीकार किया। सुश्री निधि सुपुत्री श्री प्रदीप जी गुगलिया-श्यामनगर ने 15 की तपस्या कर दीक्षा अर्द्धशती वर्ष में अर्द्धमासक्षमण की कड़ी जोड़ी, 8 बिहारी भाइयों ने आजीवन मांसाहार का त्याग किया। चार आजीवन शीलव्रती बने- श्री हरिशंकर जी ब्राह्मण, श्री जगदीश जी जांगिड़, श्री गणेशीराम जी जांगिड़ आदि अनेक भाई-बहनों ने माह में 15 दिन से अधिक ब्रह्मचर्य पालन का नियम स्वीकार किया। इस अवसर पर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के महामंत्री श्री आनन्द जी चौपड़ा, श्री अशोक जी हरसाना, जम्बूकुमार जी जैन, स्थानीय संघमंत्री श्री सुजग जी गोखरू, राजकुमारी जी आदि वक्ताओं ने आचार्यप्रवर के जीवन पर प्रकाश डाला। 4 दिनों तक प्रवचन के माध्यम से महासती श्री सुयशप्रभा जी एवं सरलेशप्रभा जी ने आचार्यश्री के गुणों को जीवन में उतारने की प्रेरणा की। प्रत्येक रविवार सपरिवार सामूहिक सामायिक करने का संकल्प लिया गया। एकाशन, उपवास, आयंबिल आदि प्रत्याख्यान किये गए तथा 5 सामूहिक सामायिक की गई।

जोधपुर- अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा परीक्षाओं की पाठ्य सामग्री के सम्यक् अध्ययन हेतु परीक्षा पूर्व एक-एक दिवसीय शिक्षण शिविर आयोजित किये गए। ये शिविर 5 से 26 जून 2013 तक महाराष्ट्र क्षेत्र के औरंगाबाद, अडावद, चालीसगाँव, शेन्दूर्णी, कजगाँव, खामगाँव, मुकटी, भराडी, जामनेर, पहुर और जलगाँव में आयोजित किए गए। राजस्थान क्षेत्र में 21 से 26 जून 2013 तक गंगापुर सिटी, हिण्डौनसिटी, कोटा, सवाईमाधोपुर, खेरली, नदबई, भरतपुर और चौथ का बरवाड़ा में तथा चेन्नई में विभिन्न पाँच स्थानों पर एक दिवसीय शिविर आयोजित किए गए।

सवाईमाधोपुर- जिनशासन गौरव, परमपूज्य आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा-7 की पावन सन्निधि में 8

जून से 12 जून 2013 तक **स्वाध्यायी एवं शिक्षक-प्रशिक्षण शिविर** उल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस शिविर में अध्यापन के विषय- 1. अन्तगडसूत्र का वाचन व संदेश, 2. तत्त्व-ज्ञान-गति-आगति एवं कर्मवाद, 3. पर्युषण के अष्ट दिवसीय वक्तृत्व का अभ्यास आदि थे। इस शिविर में अध्यापन कार्य सेवा में वरिष्ठ स्वाध्यायी सर्वश्री लल्लूलाल जी जैन, श्री धर्मेन्द्रकुमार जी जैन व्याख्याता, श्री राकेश कुमारजी जैन सुमेरगंज मण्डी, श्री बुद्धि प्रकाश जी जैन प्रधानाध्यापक, आवासन मण्डल का महनीय सहयोग प्राप्त हुआ।

-धर्मेन्द्र कुमार जैन-संयोजक

जयपुर- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर के तत्त्वावधान में ग्रीष्मावकाश के दौरान जयपुर के 10 विभिन्न क्षेत्रों में समायोजित बालक-बालिकाओं के धार्मिक शिक्षण शिविर का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह 14 जुलाई, 2013 को सुबोध पब्लिक स्कूल के सभागार में आयोजित किया गया। समारोह में शिविरार्थी बालक-बालिकाएँ, उनके अभिभावक, शिक्षक एवं समाज के अनेक गणमान्य श्रावक उपस्थित थे।

समारोह की अध्यक्षता जिनवाणी पत्रिका के प्रधान सम्पादक प्रो. (डॉ.) धर्मचन्दजी जैन ने की। न्यायमूर्ति श्रीमान जे.के. रांका मुख्य अतिथि थे एवं विशिष्ट अतिथि अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री पवन कुमार जी जैन थे।

शाखा प्रमुख श्री प्रशान्त जी करनावट ने सभी का स्वागत एवं अभिनन्दन किया। सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में विशिष्ट सेवाएँ प्रदान करने के लिये **सेवाभावी सुश्रावक श्री ज्ञानचंद जी कोठारी एवं वरिष्ठ स्वाध्यायी श्रीमती मंजू जी जामड़ का अभिनन्दन किया गया।**

विशिष्ट अतिथि श्री पवन कुमार जी जैन ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि वर्तमान में जिस तरह से दूरसंचार माध्यमों (टी.वी., इन्टरनेट,मोबाइल इत्यादि) का प्रभाव बढ़ रहा है, यह बच्चों के नैतिक संस्कार को धूमिल कर रहे हैं। अत: सभी माता-पिता से आग्रह है कि वे अपने बच्चों का इस ओर पूर्ण ध्यान रखें। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अध्यक्ष **श्री जितेन्द्र जी डागा** ने धार्मिक शिक्षण के क्षेत्र में जयपुर शाखा द्वारा किये जा रहे कार्य पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि जयपुर में पिछले 21 वर्षों से लगाये जा रहे शिविर से प्रेरणा पाकर समस्त भारत में इस वर्ष 70 स्थानों पर शिविर लगाये गये।

समारोह के मुख्य अतिथि **न्यायमूर्ति श्री जे.के. रांका** ने शिविरार्थी बच्चों को कहा कि आपने शिविर में जो धार्मिक एवं नैतिक संस्कार की शिक्षा प्राप्त की है उसे सदैव अपने मन-मस्तिष्क में रख कर उसी के अनुरूप अपनी दैनिकचर्या करें, तो निश्चय ही आप

जीवन में धोखा नहीं खायेंगे। समारोह के **अध्यक्ष डॉ. धर्मचन्द जी जैन** ने अपने वक्तव्य में कहा कि बच्चे ही समाज का भविष्य हैं एवं इनको बचपन में दिये गये संस्कार निश्चित ही इनके जीवन को सही दिशा प्रदान करने में अहम भूमिका रखते हैं। बच्चों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि आप अपनी व्यावहारिक शिक्षा के साथ नियमित रूप से धार्मिक पुस्तक का भी अध्ययन करें, क्योंकि जीवन में ज्ञान , संस्कार और आचरण की संपदा सदैव आपके काम आयेगी।

कार्यक्रम में सभी अध्यापकों का भी अभिनन्दन किया गया। भजन तथा वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान एवं परीक्षा में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले शिविरार्थी बालक-बालिकाओं को पुरस्कृत किया गया। अन्त में शाखा सचिव मनीष मुणोत द्वारा धन्यवाद दिया गया। *-मनीष मुणोत, शाखा सचिव*

पुणे- भारतीय जैन संगठना द्वारा 'युगल सशक्तीकरण कार्यक्रम' का आयोजन किया जा रहा है। 'सुखी परिवार : जीवन का आधार' के लक्ष्य को लेकर आयोजित इन कार्यक्रमों में विभिन्न समस्याओं पर व्यक्तिशः विचार किया जाता है, जैसे- बदले हुए माहौल में सामंजस्य न कर पाना, विवाह के उत्तरदायित्व को न समझना, युगल के अभिभावकों द्वारा अनुचित हस्तक्षेप, संवाद का अभाव, धैर्य, सहिष्णुता व विश्वास की कमी। इस कार्यक्रम को आप अपने क्षेत्र में आयोजित करने हेतु दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन करें, इसके लिए भारतीय जैन संगठना प्रशिक्षित प्रशिक्षक नियुक्त करेगा। इसके माध्यम से हम समाज की इस ज्वलंत समस्या से निपटने व सुखी परिवारों के साथ आदर्श समाज के स्वप्न को साकार करने में सफल होंगे। **सम्पर्क सूत्र-** फोन नं. 020-66050000, वेबसाइट-' www.bjsindia.org

लंदन- यूनेस्को ने अपनी विश्व विरासत सूची में जैन धर्म के धार्मिक ग्रंथ शांतिनाथ चरित्र को शामिल किया है। संस्कृत में निबद्ध यह पाण्डुलिपि मानवजाति के लिए विशेष महत्त्व रखती है।

नई दिल्ली- ज्ञानोदय चेरिटेबल सोसायटी, नई दिल्ली द्वारा जैन बच्चों के लिये सेकेण्डरी स्कूल तक शिक्षा जारी रखने हेतु आवश्यक आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। आवेदन पत्र के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें-GYANODAY CHARITABLE SOCIETY, 572, Asiad Village, New Delhi-110049, Ph. 011-26493538/26492386 or 09811449431 *-अध्यक्ष, ज्ञानोदय चेरिटेबल सोसायटी*

बधाई

उदयपुर- डॉ. महेन्द्र भानावत का भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के जोइन्ट सेक्रेटरी द्वारा गठित एक्सपर्ट कमेटी में मनोनयन किया गया है। यह मनोनयन दो वर्ष के लिए हुआ है।

जयपुर- वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री अरिहंत जी जैन पुत्र श्री अशोक जी जैन (कंजोली वाले)

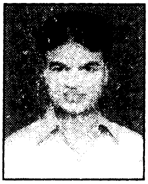

हिंडौनसिटी का कंटेनर कार्पोरेशन आफ इंडिया (रेल मंत्रालय) में वरिष्ठ सहायक के पद पर चयन हुआ है। वर्तमान में ये 'महात्मा गाँधी एवं जैन दर्शन में संबंध' नामक शोध विषय पर प्रोफेसर विद्या जैन के निर्देशन में कार्यरत हैं। आप सिद्धांतशाला के पूर्व स्नातक एवं मुक्ति प्रभा जी म.सा. के सांसारिक भतीजे हैं।

जोधपुर- सुश्री श्वेता जैन सुपुत्री श्री सुरेशचन्द्र जी जैन (सुपौत्री श्री सिरेमल जी जैन सी.ए.) ने सी.ए., आई.सी.डब्लू. ए. परीक्षा उत्तीर्ण कर अरावली जिप्सम एंड मिनरल्स इण्डिया लि.(एफ.सी.आई.) जोधपुर में लेखाधिकारी पद पर कार्य ग्रहण किया है।

इचलकरंजी- श्रीमान् स्व. श्री नेमीचन्द जी संचेती के सुपौत्र श्री श्रेयश (सुपुत्र नंदा-राजेन्द्रकुमार जी संचेती) ने S.S.C. बोर्ड द्वारा आयोजित 10 वीं कक्षा में 96.55 प्रतिशत अंक प्राप्त किए।

सी.ए. में उत्तीर्ण

वृत्तिका ओस्तवाल

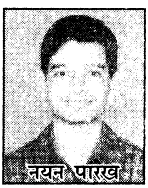

नयन पारख

आशीष जैन

द्विपल भण्डारी

रीतिका जैन

मनोज जीरावला

नितिन नाहर

सौरभ भण्डारी

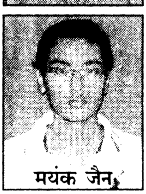

मयंक जैन

सोनल संखलेचा

रूचि जैन

पीयूष ओस्तवाल

जोधपुर- सुश्री वृत्तिका ओस्तवाल सुपुत्री श्रीमती कंचन जी-श्री जिनेन्द्र जी ओस्तवाल (सुपौत्री स्व. श्री रिखबचन्दजी ओस्तवाल) ने सी.ए. - आई.पी.सी.ई. दोनों ग्रुप प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण किये।

मुम्बई- श्री नयन पारख सुपुत्र श्री सुभाष जी एवं बेलाजी पारख (सुपौत्र स्व. श्री पारसमल जी 'प्रसून' व दौहित्र डॉ. पी.एम. कुम्भट) ने सी.ए. की परीक्षा 42 वें स्थान के साथ उत्तीर्ण की। नयन के सी.ए. इण्टर में 33 वीं रेंक थी।

अलीगढ़-रामपुरा- श्री आशीष कुमार जैन सुपुत्र श्रीमती सुशीलाजी-शुभकरण जी जैन ने सी.ए. फाइनल की परीक्षा मई 2013 में उत्तीर्ण की।

जोधपुर- सुश्री द्विपल भण्डारी सुपुत्री श्री नरेन्द्र जी भण्डारी (सुपौत्री स्व. श्री रतनचन्द जी भण्डारी) ने प्रथम प्रयास में सी.ए. परीक्षा उत्तीर्ण की। पूर्व में आपने सी.एस. परीक्षा भी प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण की।

जयपुर- सुश्री रितीका जैन सुपुत्री श्रीमती मन्जू-लाभचन्द जी लोढ़ा एवं सुपौत्री स्व. श्री हीराचन्द जी लोढ़ा (केकड़ी वाले) ने सी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की।

जोधपुर- युवारत्न श्री मनोज जैन (जीरावला) सुपुत्र श्रीमती कंचन-रूपराजजी जीरावला (सुपौत्र स्व. चम्पालालजी जीरावला) ने प्रथम प्रयास में सी.ए. फाइनल की परीक्षा उत्तीर्ण की।

बैंगलोर- श्री नितिन कुमार नाहर सुपुत्र श्री निर्मल कुमार जी नाहर ने सी.ए. परीक्षा सम्पूर्ण भारत में छठे स्थान के साथ उत्तीर्ण की।

पीपाड़ सिटी- श्री सौरभ भण्डारी सुपुत्र श्रीमती उषा-दिलीप जी भण्डारी एवं सुपौत्र श्रीमती मोहनकंवर-उगमराज जी भण्डारी ने प्रथम प्रयास में सी.ए.एवं सी.एस. की इन्टर परीक्षा उतीर्ण की।

जोधपुर- मयंक जैन (तलेसरा) सुपुत्र श्री विरेन्द्र तलेसरा सुपौत्र श्री मघराज जी तलेसरा (रोहट वाले) ने प्रथम प्रयास में सी.पी.टी. में जोधपुर में दूसरा स्थान एवं भारत में सर्वश्रेष्ठ 50 में स्थान प्राप्त किया है।

जोधपुर- सुश्री सोनल संखलेचा सुपुत्री श्री सुनील-मंजु संखलेचा ने सी.ए. की परीक्षा प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण की। वे जैन विद्या के लेखक एवं सम्पादक वीरपुत्र मोहनोत पुखराज जैन की दौहित्री हैं।

अलवर- सुश्री रुचि जैन सुपुत्री श्री राजेश कुमार जी जैन ने सी.ए. की परीक्षा प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण की।

चेन्नई- श्री पीयूष ओस्तवाल सुपुत्र श्री कमल जी ओस्तवाल (भोपालगढ़ निवासी) ने सी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की।

श्रद्धाञ्जलि

जोधपुर- संघनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ, समाजसेवी श्रावकरत्न श्री अनराज जी बोथरा का 89

वर्ष की वय में 25 जुलाई 2013 को देहावसान हो गया। आपका जीवन संघ एवं समाज में समर्पित रहा। सन्त-सतीवृन्द की विहारचर्या, औषधोपचार सेवा में सदैव अग्रणी रहने वाले बोथरा साहब का जीवन सरलता, मधुरता, उदारता आदि सद्गुणों से युक्त था। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के आप 9 वर्षों तक मंत्री रहे तथा उपाध्यक्ष के पद पर भी आपकी सराहनीय सेवाएँ रहीं। श्री जैन रत्न विद्यालय भोपालगढ़ में भी सर्वतोभावेन समर्पित होकर आपने मंत्री एवं उपाध्यक्ष के पदों पर काम किया। आप सन् 1961 से स्वाध्यायी सेवा देते रहे। आप अच्छे आशुकवि थे। आपकी रचनाएँ जिनवाणी पत्रिका में भी छपती थीं। भोपालगढ़ में आप चक्षु चिकित्सा सेवा समिति के माध्यम से शिविरों का आयोजन कराते थे। समाज सेवा के काम में आपको आनन्द आता था। संघ की हर गतिविधि के उत्थान में आप रुचिपूर्वक हितपरक सोच रखते थे। रत्नसंघ के विशिष्ट श्रावकों में आपका नाम था। आप पर-कल्याण में ही नहीं, अपितु स्वकल्याण हेतु प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय की आराधना करते थे। वहीं रात्रि-भोजन त्याग आदि विविध नियम आपने अंगीकार कर रखे थे। आप अपने पीछे सुपुत्र चंचलमलजी एवं शान्तिलालजी का भरापूरा धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गए हैं। साध्वीप्रमुखा जी के सान्निध्य में आपकी स्मृति में गुणानुवाद सभा रखी गई।

जयपुर- धर्मपरायणा, वात्सल्यमयी, श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका श्रीमती राजकुमारी जी पटवा

धर्मसहायिका श्री जौहरीलाल जी पटवा एवं मातुश्री गुरुभक्त राजेन्द्र कुमार जी पटवा का स्वर्गवास 85 वर्ष की वय में 15 जुलाई, 2013 को हो गया। मरण के पूर्व उन्होंने घर पर गोचरी हेतु पधारे श्री कुन्दन मुनि जी से मांगलिक श्रवण किया एवं क्षमायाचना कर देह त्याग दी। लम्बे समय से रात्रिभोजन का त्याग, ब्रह्मचर्य का पालन, अष्टमी, चतुर्दशी को पौषध, दया, आयम्बिल ओली आदि अनेक तप-आराधना करते हुए आपने अपना जीवन पूर्ण किया। अपने सगे-संबंधी और अन्य श्रावक-श्राविकाओं को भी धर्म से जोड़ा। आपका सम्पूर्ण परिवार आचार्य हस्ती, आचार्य हीराचन्द्रजी, उपाध्याय मानचन्द्रजी एवं सन्त-सतीवृन्द के प्रति दृढ़ श्रद्धालु एवं सेवा में अग्रणी रहता है।

जोधपुर- सुश्रावक श्री फूलचन्द जी लुणिया का 81 वर्ष की उम्र में 13 जुलाई, 2013 को समाधिभावों में स्वर्गवास हो गया। आप पिछले 20 वर्षों से निवृत्तिमय जीवन व्यतीत कर रहे थे। 48 वर्षों से आपके शीलव्रत के प्रत्याख्यान थे। आप अपना अधिक से अधिक समय संवर और सामायिक आराधना में बिताते थे।

जोधपुर- शांतस्वभावी, धर्मपरायणा, वात्सल्यमूर्ति सुश्राविका श्रीमती मोहनकंवरजी

धर्मसहायिका स्व. श्री अमोलकचन्द जी बैद मेहता तथा सुपुत्री सुश्रावक स्व. श्री जबरनाथ जी मोदी का 92 वर्ष की अवस्था में 7 जुलाई, 2013 को संलेखना-संथारा सहित समताभाव पूर्वक देवलोकगमन हो गया। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय तपाराधना किया करती थीं। आप अपने पीछे धर्मनिष्ठ भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

चेन्नई- सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती कुसुमलता जी धर्मपत्नी श्री फुटरमलजी बाघमार

(कोसाना वाले) का 53 वर्ष की वय में 20 जुलाई 2013 को स्वर्गवास हो गया। आप शालीन, गुणानुरागी, सदा प्रसन्नचित्त, मिलनसार एवं उदार हृदय वाली श्राविका थीं। रत्न संघ के संत-सतियों की सेवा में आप सदैव तत्पर रहती थीं। आप नित्य प्रति सामायिक-स्वाध्याय करती थीं। आपने अपने जीवन में अनेक 11, अठाई आदि तपस्याएँ कीं। आप भरापूरा श्रद्धानिष्ठ एवं धर्मनिष्ठ दो पुत्रों राजेशजी, सम्पतजी एवं पुत्रियों का परिवार छोड़कर गई हैं।

जयपुर- कर्तव्यपरायण सुश्रावक श्री विजयसिंह जी सुकलेचा सुपुत्र स्व. श्री रतनलाल जी सुकलेचा का 8 जुलाई, 2013 को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। बचपन से ही माताजी द्वारा प्राप्त सुसंस्कारों के कारण आप निरन्तर धर्म-ध्यान में लगे रहते थे। आपके जीवन पर संत-मुनिराजों का विशेष प्रभाव रहा।

जयपुर- सुश्रावक श्रीमान् मोहनलालजी कोठारी सुपुत्र स्व. श्री रिखबचन्द जी कोठारी का

22 जुलाई 2013 को स्वर्गवास हो गया। बचपन से ही प्राप्त सुसंस्कारों के कारण आप धर्म में दृढ़ श्रद्धा थी तथा सदैव धर्म-ध्यान में लगे रहते थे। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करते रहते थे। आपका जीवन अनेक गुणों से सुरभित था। आप अपने पीछे सुपुत्र अनुपम, अनुराग एवं आशीष कोठारी का धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गए हैं।

अरसीकेरा- धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती संतोषबाई गुगलिया धर्मपत्नी श्री शांतिलाल जी

गुगलिया (राणावास) का देहावसान 3 जुलाई, 2013 को 46 वर्ष की आयु में हो गया। आप आचार्य आनंदऋषिजी म.सा. के परिवार में से थी। आप नियमित रूप से सामायिक-स्वाध्याय की साधना करती थीं। आपकी आँखें मरणोपरान्त दान की गईं।

सूरत- श्रमणोपासिका श्रीमती भँवरी बाई धर्मपत्नी श्री निहालचन्द जी तालेड़ा (ब्यावर

निवासी) का 85 वर्ष की उम्र में 41 घंटों के संथारे के साथ 16 जून, 2013 को समाधिमरण हो गया। आपने संथारे के प्रत्याख्यान ज्ञानगच्छ की महासती श्री पुष्पमालाजी म.सा. से किए। आप धर्मनिष्ठ, सरल स्वभावी, शान्त प्रकृति की धीर-वीर श्राविका रत्न थीं। आप लगभग 1000 गाथाओं का स्वाध्याय एवं 5-7 सामायिक प्रतिदिन करती थीं। लगभग 50 वर्ष से जमीकंद के त्याग थे तथा उभयकाल प्रतिक्रमण व रात्रि चौविहार त्याग नियमित करती थीं।

दिल्ली- धर्माराधक सुश्रावक श्री शिखरचन्द जी जैन (एलम वालों) का 76 वर्ष की अवस्था में 18 जून, 2013 को सागारी संथारे सहित समाधिमरण हो गया। आप ज्ञानगच्छ में दीक्षित पूज्या श्री सुषमा जी म.सा. के सांसारिक पिताजी थे। प्रतिदिन 5-6 सामायिक, स्वाध्याय, संवरमय जीवन जीने वाले तथा परिवार में सुसंस्कारों का सर्जन करने वाले श्रमणोपासक थे। आपके कई वर्षों से ब्रह्मचर्य पालन, रात्रि चौविहार, जमीकन्द त्याग, कच्चे पानी के त्याग के नियम थे।

होसपेट- श्रीमती सायरबाई मकाणा धर्मपत्नी श्री कंवरलाल जी मकाणा का 83 वर्ष की वय में 23 जुलाई 2013 को स्वर्गवास हो गया। आपकी इच्छा के अनुरूप मरणोपरान्त किसी प्रकार का शोक नहीं रखा गया।

बैंगलोर- प्रमुख समाजसेवी सुश्रावक श्री माणकचन्द जी कोठारी का 25 जून, 2013 को देवलोकगमन हो गया। जैन कान्फ्रेंस के महामंत्री पद पर रहते हुए आपने अपनी अद्भुत कार्यक्षमता का परिचय दिया। आप पर कई आचार्य भगवन्तों और मुनिराजों की विशेष कृपा थी।

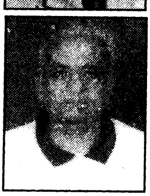

नारनौल (हरियाणा)- धर्मनिष्ठ, प्रतिष्ठित सुश्रावक श्री देवेन्द्रकुमार जी सुराणा, अध्यक्ष श्री एस.एस.जैन सभा का 14 जुलाई, 2013 को स्वर्गगमन हो गया। आप सरल स्वभावी, शान्त प्रकृति, संघसेवी समाजरत्न थे। आपके अध्यक्ष काल में अनेक सफल चातुर्मास हुए तथा

दीक्षा का भी आयोजन हुआ। आप अपनी धर्म सहायिका श्रीमती पुष्पाजी एवं तीनों सुपुत्रों का धर्मनिष्ठ संस्कारित परिवार छोड़कर गए हैं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

गुरुणी मैना जी गुणगान

श्री धर्मचन्द जैन

(साध्वी प्रमुखा, शासन प्रभाविका, परम विदुषी महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के 80 वें जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा-जोधपुर में दिनांक 10 जुलाई, 2013 के अवसर पर प्रस्तुत गीतिका।)

(तर्जः- ले के पहला-पहला प्यार.......)

गुरुणी मैना जी गुणवान, ज्ञानी, ध्यानी क्रियावान,
शत-शत वन्दन हमारा है, गुरुणी को........।। टेर।।

चेहरे पे जिनके तेज है चमके, वाणी में जिनके ओज है टपके।
संयम का जिनके वेग है जमके, शील सुगन्धि जीवन में बढ़के।
हो ऽऽऽ इनकी महिमा बड़ी महान्, अध्ययनशीला संयमवान,
शत-शत वन्दन हमारा है......।।

गुरु गुरुणी का आशीष पाया, अध्ययन में पूरा चित्त लगाया।
आगम ज्ञान को सतत बढ़ाया, प्रवचन शैली को विकसाया।।
हो ऽऽऽ शासन दीप्ति बड़ी महान्, मिल गया सच्चा सुख निधान।
शत-शत वन्दन हमारा है......।।

अस्सीवाँ जन्म दिवस आज मनायें, हर्षित होकर गुण सब गायें।
संयममय जीवन अपनायें, अपना जीवन धन्य बनायें।।
हो ऽऽऽ गुरुणी जीएँ हजारों साल, हमको करती रहे निहाल,
शत-शत वन्दन हमारा है......।।

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

4000/- मंडल के सत्साहित्य की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

761 . श्रीमती अरुणाजी कर्णावट, जे.एल.एन.मार्ग, जयपुर (राज.)

1000/- जिनवाणी पत्रिका की 20 वर्षीय आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 15070 से 15091 तक 22 सदस्य बने।

जिनवाणी हेतु साभार प्राप्त

3100/- श्री राजेन्द्रजी, सुरेन्द्रजी, नरेन्द्रजी, महेन्द्रजी, जितेन्द्रजी, डॉ. शैलेन्द्रजी पटवा, जयपुर, अपनी माताजी श्रीमती राजकुमारी जी पटवा धर्मपत्नी श्री जौहरीलाल जी पटवा का स्वर्गगमन 15 जुलाई, 2013 को होने की पुण्य स्मृति में।

2100/- श्री प्रदीप कुमारजी नीरजजी जैन (एलम वाले), बिहारी कॉलोनी-दिल्ली, पूज्य पिताश्री सुश्रावक श्री शिखरचन्दजी जैन (एलम वाले) का 18 जून 2013 को सागारी संथारे के साथ महाप्रयाण हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

2100/- श्रीमती कंचनजी-रूपराजजी जीरावला, जोधपुर, श्री हितेश जी जीरावला के सॉफ्टवेयर इंजीनियर पद पर नियुक्ति होने तथा मनोज जीरावला के प्रथम प्रयास में सी.ए. परीक्षा उत्तीर्ण करने पर।

2100/- श्रीमती सायरदेवीजी, मांगीलालजी, सौरभ जी लूणिया, जोधपुर, श्री फूलचन्द जी लूणिया का 13 जुलाई, 2013 को स्वर्गगमन हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

2100/- श्री पवनकुमार जी बोहरा, चेन्नई, उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के कोसाणा चातुर्मास में अपने बड़े भ्राता वीरपुत्र श्री विमलकुमारजी एवं श्रीमती राजकुमारी जी बोहरा के सजोड़े अठाई एवं राजेश जी बोहरा के 12 की तपस्या जारी रहने के उपलक्ष्य में।

1111/- श्री देवीनारायण जी जैन, कुश्तला, अपनी पुत्रवधू श्रीमती आशारानी जी धर्मपत्नी श्री प्रेमचन्द जी जैन, रावतभाटा के द्वारा उपाध्याय श्री रवीन्द्रमुनि जी की प्रेरणा से 29 जुलाई 2013 को अठाई तप पूर्ण करने के उपलक्ष्य में।

1101/- श्री दिलीपचंद जी भण्डारी, चेन्नई, साध्वीप्रमुखा, शासन प्रभाविका,परमविदुषी महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. का 80 वां जन्मदिवस 10 जुलाई को सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

1101/- लाडकंवरजी कोठारी, प्रकाशजी कोठारी, चेन्नई, साध्वीप्रमुखा, शासन प्रभाविका, परमविदुषी महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. का 80 वां जन्मदिवस 10 जुलाई को सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्रीमती कानकंवर जी-विजयमल जी मेहता, जोधपुर, अपने सुपौत्र श्री रौनक मेहता सुपुत्र श्री रमेशजी-स्नेहलता जी मेहता के आई.आई.टी.मुम्बई में बी.टेक (सिविल) में प्रवेश हेतु चयनित होने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री चंचलमलजी, शान्तिलाल जी बोथरा, जोधपुर, पूज्य पिताश्री अनराजजी बोथरा का स्वर्गगमन 25 जुलाई 2013 को होने की पुण्यस्मृति में।

1100/- श्री राजेशजी, मनीषजी, अतुलजी सुराणा, नारनौल (हरियाणा), पिताश्री देवेन्द्रकुमारजी सुराणा का स्वर्गगमन 14 जुलाई 2013 को हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

1100/- श्रीमती दौलतकंवर जी, राजेश जी, विनोदजी-रेणूकाजी, केदार जी, जोधपुर, स्मृतिशेष पूज्य श्री दिलमोहननाथ जी मोदी की सोलहवीं पुण्यतिथि पर भावमयी स्मरणांजलि स्वरूप।

1100/- श्रीमती आशा धर्मपत्नी श्री कैलाशचन्द जी जैन, जोधपुर, पूज्य पिताजी श्री पी.सी. जैन एवं अपनी बहन श्रीमती शांति जी जैन की पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री आयुष जी बोहरा, दिल्ली, परदादी श्रीमती बदनकंवर जी धर्मपत्नी स्व. श्री बस्तीमल जी बोहरा की चतुर्थ पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री ओमप्रकाशजी, टीकमचन्दजी जैन, नवसारी, चि. रिषित सुपुत्र श्री अंशुलजी सुपौत्र श्री ओमप्रकाशजी जैन के जन्म उत्सव के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री जतनमलजी सिंघवी (नागौर वाले), जोधपुर, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा एवं संत-सतीवृन्द के सवाईमाधोपुर में दर्शनलाभ लेने की खुशी में ।

1100/- श्री प्रकाशमलजी सुनील कुमारजी बोथरा, चेन्नई, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा एवं संत-सतीवृन्द के सवाईमाधोपुर में दर्शनलाभ लेने की खुशी में।

1100/- श्री मनमोहनसिंह जी-मीमकंवर जी बैद मेहता, जोधपुर, श्रीमती मोहनकंवर जी धर्मपत्नी स्व. श्री अमोलकचंद जी बैद मेहता के 7 जुलाई, 2013 को संथारापूर्वक देवलोकगमन होने की पुण्य स्मृति में।

1100/- श्रीमती सविता-सुरेशजी जीरावला, जोधपुर, श्री मनोज जीरावला सुपुत्र श्रीमती कंचन-रूपराज जी जीरावला (सुपौत्र स्व. श्री चम्पालाल जी जीरावला) के प्रथम प्रयास में सी.ए. परीक्षा उत्तीर्ण करने पर।

1100/- श्री लाभचन्दजी-श्रीमती मंजू जी लोढ़ा, जयपुर, अपनी सुपुत्री सुश्री रितीका जैन के सी.ए. बनने पर सप्रेम भेंट।

1100/- श्री सिरेमल जी जैन 'सी.ए.', जोधपुर, सुपौत्री श्वेता जैन (C.A.,I.C.W.A.) सुपुत्री श्री सुरेशचन्द्र जी जैन, द्वारा अरावली जिप्सम एण्ड मिनरल्स इण्डिया लि. (F.C.I.) जोधपुर में लेखाधिकारी पद पर एक वर्ष पूर्ण करने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्रीमती कुसुमजी-डॉ. पी.एम.कुम्भट, जोधपुर, दौहित्र श्री नयन पारख सुपुत्र श्रीमती बेलाजी-सुभाषजी पारख, मुम्बई के सी.ए. परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपलक्ष्य में।

स्वाध्याय संघ हेतु साभार प्राप्त

1101/- श्री रमेशचन्द जी सुरेशचन्द जी जैन, इन्दौर, अपने पुत्र रोहित संग सौ. कां. रानू सुपुत्री श्री कुशलचंद जी गोटेवाले के विवाह के शुभ अवसर पर।

1101/- श्री लल्लुलालजी गजेन्द्रकुमार जी जैन, आवसान मण्डल-सवाईमाधोपुर, अपने सुपुत्र चि. जितेन्द्र संग सौ. कां. श्वेता सुपुत्री श्री गौतमचंद जी जैन के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में।

अ.भा.श्री जैन रत्न शिक्षण बोर्ड हेतु साभार प्राप्त

11111/- श्री संदीपजी, लाभचन्दजी नाहर, सूरत वालों की ओर से पुस्तक प्रकाशन हेतु सप्रेम भेंट।

11000/- श्रीमती रेनुजी धर्मपत्नी श्री परमलालजी मालकस, मुम्बई वालों की ओर से पुस्तक प्रकाशन हेतु भेंट।

11000/- श्रीमती पूजाजी जैन सोमानी, कोलकाता वालों की ओर से पुस्तक प्रकाशन हेतु भेंट।

10000/- श्रीमती सुनीता जी धर्मपत्नी श्री नरेन्द्रजी डागा, मुम्बई वालों की ओर से जैनागम स्तोक

वारिधि भाग तृतीय के प्रकाशन हेतु भेंट।

5000/- श्री नरेन्द्रजी डागा, मुम्बई वालों की ओर से जैनागम स्तोक वारिधि भाग तृतीय के प्रकाशन हेतु भेंट।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

(आचार्यप्रवर हीराचन्द्र दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के उपलक्ष्य में)

48000/- श्री श्रीपालचंदजी, श्रेयांस जी मेहता, जोधपुर (राज.)

24000/- श्री उमरावमल जी, श्रीपाल जी सुराना, चेन्नई, श्री श्रीपालजी-श्रीमती मधु जी सुराणा, चेन्नई अपनी सुपुत्री अंकिता सुराणा (सुपौत्री श्री उमरावमलजी सुराणा) के शुभविवाह के उपलक्ष्य में।

24000/- श्री पी. दलीचन्द सुरेशकुमार कवाड़, चेन्नई, अपने पड़पौत्र श्री विधान्त सुपुत्र श्री धीरज जी कवाड़ के जन्मोपलक्ष्य पर भेंट।

12000/- श्री राजमल जी जैन, मुम्बई (महा.)

12000/- श्री कमलेश जी सौरभ जी जैन, मुम्बई (महा.)

12000/- श्री नरेशकुमार डूंगरमल जी भूरट 'सी.ए.', जलगांव

12000/- श्री मांगीलाल जी राजीव जी गांधी, भण्डारा (महा.)

12000/- श्री आंचलिया परिवार, शोरापुर (महा.), सुश्री शीतल जी आंचलिया की 15 मई, 2013 को चेन्नई में दीक्षा सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

12000/- श्री अजय जी भण्डारी, जयपुर, अपनी मातुश्री स्व. श्रीमती सुधाजी धर्मपत्नी श्री पी.बी.भण्डारी के पुण्य स्मृति में।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- ***श्री अशोक जी कवाड़,*** 33, *Montieth Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)*

आगामी पर्व

श्रावण शुक्ला 8, बुधवार	**14.08.2013**	**अष्टमी**
श्रावण शुक्ला 14, मंगलवार	**20.08.2013**	**चतुर्दशी, पक्खी**
भाद्रपद कृष्णा 8, बुधवार	**28.08.2013**	**अष्टमी**
भाद्रपद कृष्णा 12, सोमवार	**02.09.2013**	**पर्युषण प्रारम्भ**
भाद्रपद कृष्णा 14, बुधवार	**04.09.2013**	**चतुर्दशी, पक्खी**
भाद्रपक्ष शुक्ला 4, सोमवार	**09.09.2013**	**संवत्सरी महापर्व**
भाद्रपद शुक्ला 8, शुक्रवार	**13.09.2013**	**अष्टमी**
भाद्रपद शुक्ला 14, बुधवार	**18.09.2013**	**चतुर्दशी**
भाद्रपद शुक्ला 15, गुरुवार	**19.09.2013**	**पक्खी**
आश्विन कृष्णा 8, शुक्रवार	**26.09.2013**	**अष्टमी**

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 67 से भी अधिक वर्षों से सन्त-सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त-सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष **पर्युषण पर्व 02 से 09 सितम्बर 2013** तक रहेंगे। अत: देश-विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक **15 अगस्त 2013** तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहर का नाम.....................जिला............प्रान्त...............
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता...
3. संघाध्यक्ष का नाम, पता मय फोन नं..
   ....
4. संघ मंत्री का नाम, पता मय फोन नं...
   ....
5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन..
   ....
6. समस्त जैन घरों की संख्या..
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?.....................................
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?........................
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव..
10. अन्य विशेष विवरण..

आवेदन करने का पता-संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 0291-2624891, फैक्स- 2636763, मो.-94604-41570 (संयोजक), 94610-13878 (सचिव), 9460081112 (का. प्रभारी) ,ईमेल-**swadhyaysanghjodhpur@gmail.com**

विशेष- दक्षिण भारत के संघ अपनी मांग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई 24/25, **Basin Water Works Street,Sowcarpet, Chennai-600079** के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- श्री सुधीर जी सुराणा, फोन नं. 09380997333 (मोबाइल)044-25295143 (स्वाध्याय संघ)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

क्रोध पर विजय प्राप्त करनी हो तो क्षमा धारण करें।

– आचार्यश्री हस्ती

जोधपुर में प्लॉट, मकान, जमीन, फार्म हाउस खरीदने व बेचने हेतु सम्पर्क करें।

पद्मावती

डेवलपर्स एण्ड प्रोपर्टीज

महावीर बोथरा
09828582391

नरेश बोथरा
09414100257

292, सनसिटी हॉस्पिटल के पीछे, पावटा, जोधपुर 342001 (राज.)
फोन नं. : 0291-2556767

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अहंकार की तुष्टि ही सबसे बड़ी विकृति है।

- आचार्य श्री हीरा

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

सामायिक वह महती साधना है, जिसके द्वारा जन्म-जन्मान्तरों के संचित कर्म-मैल को नष्ट किया जा सकता है।

BALAJI AUTOS

(Mahindra & Mahindra Dealers)
618, 619, Old No. 224, C.T.H. Road
Padi, Mannurpet, Chennai - 600050
Phone : 044-26245855/56

BALAJI HONDA

(Honda Two Wheelers Dealers)
570, T.H. Road, Old Washermenpet, Chennai - 600021
Phone : 044-45985577/88
Mobile : 9940051841, 9444068666

BALAJI MOTORS

(Royal Enfield Dealers)
138, T.H. Road, Tondiarpet, Chennai - 600081
Maturachaiya Shelters,
Annanagar
Mobile : 9884219949

BHAGWAN CARS

Chennai - 600053
Phone : 044-26243455/66

With Best Compliments from :

Parasmal Suresh Kumar Kothari

Dhapi Nivas, 23, Vadamalai Street,
Sowcarpet, Chennai - 600079
Phone : 044-25294466/25292727

Gurudev

SURANA™
yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

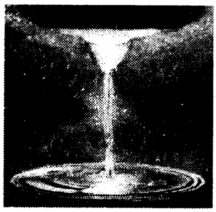

Electric Arc Furnace

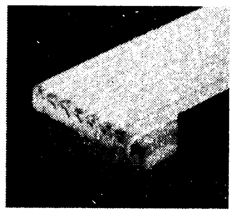

Billets

Rolling Mill

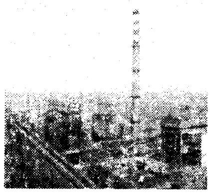

Captive Power Plant

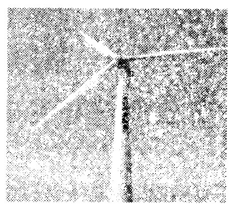

Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त
रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल
के चरण कमलों में भावभरा कोटिश: वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

रत्न संघ के अष्टम पट्टधर परम पूज्य आचार्य भगवंत 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं संत-सतीमण्डल की असीम कृपा एवं रत्नसंघ के संघनिष्ठ गुरुभक्तों के पूर्ण सहयोग से गत सात वर्षों से युवारत्न छात्र-छात्राओं की शैक्षणिक उन्नति एवं नैतिक व आध्यात्मिक जीवन में अभिवृद्धि करने के लिए छात्रवृत्ति योजना निरन्तर रुप से चल रही है। संघ द्वारा योजना का आगे विस्तार कर दिया गया है।

इस वर्ष के लिए जो भी छात्र-छात्राएँ छात्रवृत्ति प्राप्त करना चाहते हैं, वे अपने आवेदन-पत्र चयन समिति के पास प्रेषित कर सकते हैं। छात्र चयन समिति के पास से आवेदन-पत्र मंगवा सकते हैं। इस योजना से संबंधित नियमावली इस प्रकार है-

नियमावली

1.आवेदक को प्रतिदिन 1 नवकार मंत्र की माला जपने का संकल्प करना होगा।

2.आवेदक सदाचारी हो एवं उसे सप्त कुव्यसन का त्याग करना होगा।

3.आवेदक को एक महीने में 5 सामायिक करने का संकल्प करना होगा।

4.आमंत्रित विद्यार्थियों को अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित शिविरों में भाग लेना अनिवार्य होगा

5.छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत Scholarship Requisition Form के आधार पर चयन समिति के निर्णयानुसार छात्रवृत्ति की राशि प्रदान की जायेगी। छात्रवृत्ति राशि की अधिकतम सीमा इस सारणी के अनुसार है।

Class	Up to Class 10^{th}	11^{th} & 12^{th}	Graduation & Post Graduation	Professional Etc.
Maximum Limit	Rs. 6000/-	Rs. 9000/-	Rs.12000/-	Rs. 27500/-

6.चयन समिति के अनुसार Scheme 1^{st} में उन विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा जो व्यावहारिक शिक्षण में कम से कम 70% और धार्मिक शिक्षण में 60% से अधिक अंक प्राप्त करेंगे। इससे कम अंक वालों को Scheme 2^{nd} में मान्य किया जायेगा।

7.सभी विद्यार्थियों को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड जोधपुर की परीक्षा देना अनिवार्य है।

Note- लाभान्वित छात्र - छात्राएँ प्राप्त छात्रवृत्ति राशि को भविष्य में अपनी अनुकूलता अनुसार संघ को वापस प्रदान करते हैं तो उनका स्वागत है।

आवेदक की योग्यता- आवेदक की आयु 12 वर्ष से अधिक एवं 30 वर्ष से कम होनी चाहिए।आवेदक रत्न संघ का सदस्य होना चाहिए।

आवेदन पत्र प्रेषित करने की अन्तिम तिथि:-आवेदन पत्र प्रेषित करने की अन्तिम तिथि बढ़ाकर 30 सितम्बर कर दी गई है एवं आवेदन पत्र की प्रतिलिपि (Xerox) मान्य है।

छात्रवृत्ति योजना संबंधी अन्य जानकारी एवं आवेदन पत्र प्रेषित करने के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें -

B.Budhmal Bohra

No.-53,Erullappan street, Sowcarpet,Chennai-600079(TN) Telefax No – 044-42728476

Email- guruhasti_scholarship@yahoo.co.in

जय गुरु हस्ती

जय गुरु हीरा जय गुरु मान

अगर व्यक्ति प्रभु के मार्ग पर चले तो कहीं भी अशान्ति नहीं हो सकती।

- आचार्य श्री हीरा

सांखला परिवार की ओर से निवेदन

हम :

चौबीसों तीर्थंकरों के चरण कमलों पर मस्तक रखते हैं

और

विनम्रता तथा गौरव के साथ जाहिर करते हैं कि "जिनवाणी" के उत्कर्षदायी तथा पुण्यात्मक कार्यों में हमारा सहर्ष सदैव सहकार रहेगा।

मदन मोहन सांखला,

सौ. हेमलता मदन सांखला

मेहुल मदन सांखला

सौ. प्रणिता मेहुल सांखला और

बेबी बुणम मेहुल सांखला

MAXHEAL

MAXHEAL Group of Companies

Jai Guru Heera *Jai Guru Hasti* *Jai Guru Maan*

गुरु हीरा- मान का 50 वर्ष का, हुआ अनुभव का दीक्षा पथ,
'स्वप्निका' अपनाकर सब जन, शीघ्र ही पायें मुक्ति रथ।
'धनपत' कहे धन का पत नहीं, मुक्ति का पथ चाहिए
स्वप्निका को सुश्रद्धा भरें, इसमें नहीं विलम्ब चाहिए।
यह कार्य अविलम्ब चाहिए....

BHANSALI GROUP

Dhanpatraj V. Bhansali

BHANSALI DEVELOPERS

Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road,
Vile Parle (E), Mumbai - 400 057
Tel. : (O) 26185801 / 32940462
E-MAIL : bhansalidevelopers@yahoo.com

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

दीक्षा अर्द्ध शताब्दी सुनहरी, गुरु हीरा - गुरु मान की,
वन्दना हमारी नित चरणों में, शासन के मतिमान की।
संघ की पहल स्वप्निका मन भाई, 'उम्मीद' को खरा बनाया।
तन-धन को तो सब ही सजाते, इसने तो आतम को सजाया।

With best compliments from

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 अगस्त, 2013
वर्ष : 71 ★ अंक : 08 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 अगस्त, 2013 ★ श्रावण, 2070

!! जय गुरु हीरा !! || श्री महावीराय नमः|| !! जय गुरु मान !!

|| श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः ||

"गुरुद्वय आचार्य श्री हीराचन्द्र-उपाध्याय श्री मानचन्द्र दीक्षा अर्द्धशती वर्ष"

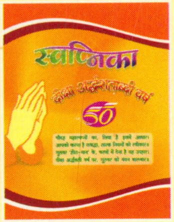

पाठकगण एवं परीक्षार्थीगण ध्यान दें.....

स्वप्निका एक : पुरस्कार अनेक

पुरुषार्थ का पुरस्कार → / पुरस्कार रूप ↓	अविस्मरणीय पुरस्कार (1)	अद्वितीय पुरस्कार (1)	अलौकिक पुरस्कार (1)	अचम्भित पुरस्कार (11)	अविराम पुरस्कार (50)
उपलब्धि	2,51,000/-	1,71,000/-	1,31,000/-	1,21,000/- (11000x11)	2,50,000/- (5000x50)
उपधि	हीरक पदक	स्वर्ण पदक	रजत पदक	कांस्य पदक	फ्रेम शील्ड
उपाधि	स्वप्निल/स्वप्निका	स्वर्णिम/स्वर्णिका	स्वस्तिक/स्वस्तिका	स्वप्नजीत/स्वप्नजेत्री	स्वप्नशाली/स्वप्नशीला
उपासना (नियम)	5 वर्ष तक निरन्तर स्वाध्यायी रूप में सेवा देना	1 वर्ष तक एकासन का एकान्तर करना	1 वर्ष तक स्नान त्याग का एकान्तर करना	12 माह में 12 पौषध करना	1 वर्ष तक प्रतिदिन भक्तामर स्तोत्र से प्रभु भक्ति करना

विशेष पुरस्कार : सभी परिक्षार्थियों को परीक्षा दौरान प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया जाएगा

निवेदन :
- 10 अक्टूबर, 2013 तक परीक्षार्थी को रजिस्ट्रेशन कराना अनिवार्य है।
- रजिस्ट्रेशन के लिए सम्पर्क करें : श्री गजेन्द्र जैन – मो. 7737801643
  श्री नमन मेहता – मो. 9414116766
- पुस्तक प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें : श्री चन्द्रकांत जैन (सवाई माधोपुर) – मो. 9414203454
  श्री कमलेश जैन (स्वप्निका कार्यालय प्रभारी, सवाई माधोपुर)

स्वप्निका पुस्तिका मूल्य ₹ 50

विज्ञापन सौजन्य : कल्पतरू ग्रुप

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक – विनय चन्द डागा द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित व सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर – 302003 से प्रकाशित । सम्पादक – डॉ. धर्मचन्द जैन